फायदा मिल सकता है। ठीक उपचुनाव के पहले राजग छोड़कर महागठबंधन का दामन थामने वाले हिन्दुस्तानी अवाम मोर्चा (हम) के सुप्रीमों व पूर्व मुख्यमंत्री जीतनराम मांझी की दलित वोटरों पर पकड़ है। मांझी ने अररिया मे जमकर चुनाव प्रचार किया है। अगर उपचुनाव मे राजद के सरफराज आलम की जीत होती है तो माना जाएगा कि मांझी दलित वोटो को राजद के पक्ष मे शिफ्ट कराने मे सफल रहे। इससे महागठबंधन मे मांझी की ताकत बढ़ेगी। राजद सुप्रीमों लालू प्रसाद के चारा घोटाला मे जेल जाने के बाद पार्टी के भविष्य पर सवाल उठाए जाते रहे है। लालू के जेल जाने के बाद कुछ नेताओं ने प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप मे तेजस्वी के नेतृत्व पर सवाल खड़े किए थे। लेकिन लालू ने तेजस्वी को अपना उत्ताधिकारी घोषित कर सभी का मुंह बंद करा दिया।इस बीच तेजस्वी ने हम को महागठबंधन मे लाकर अपना कद बड़ा कर लिया। राजग के तमाम बड़े नेता अंत-अंत तक मांझी के महागठबंधन मे जाने की बात को स्वीकार करते नही दिखे, लेकिन तेजस्वी ने मांझी के घर जाकर मास्टर स्ट्रोक खेला और मांझी ने राजद से किनारा कर महागठबंधन मे आने की

घोषणा कर दी। मांझी को महागठबंधन मे लाकर तेजस्वी ने साबित किया कि वे पिता की छाया से दुर बड़े फैसले ले सकते है।अब अगर प्रतिष्ठा की सीट बने अररिया मे सरफराज की जीत होती है तो तेजस्वी के नेतृत्व पर मुहर लगनी तय है।लेकिन इससे उलट स्थिति मे राजद के बड़े नेताओं का विरोध मुखर हो सकता है। आप गौर करे की अररिया लोकसभा मे कुल मतदाता-1738067 है। जिसमे पुरूष मतदाता-919115 और महिला मतदाता-818286 है। जिसमे 18 से 19 आयुवर्ग के मतदाता-12,994 है। और 20 से 29 आयुवर्ग के मतदाता-4,30,963 है। वही 30 से 39 आयुवर्ग के मतदाता -4,61,313 एवं थर्ड जेंडर मतदाता-67 है।आपको मालूम हो कि 13 बार हो चुके चुनाव,जिसमे कभी कोई महिला प्रत्याशी नही जीती पिछले लोकसभा चुनाव मे 61.48 फीसद वोट पड़े पिछले लोकसभा चुनाव मे जदयू और भाजपा को मिले थे अधिक वोट और इस उपचुनाव मे 57 फीसद वोट पड़े इस बार उपचुनाव मे सात उम्मीदवार थे। ●

वकील है या गुण्डा

● **धर्मेन्द्र सिंह**

जमीन खाली कराने पहुँचे दबंगों द्वारा महिला के संग बदसलूकी करने का मामला सामने आया है। मोहिउद्दीनपुर निवासी पीड़िता के लिखित शिकायत पर सदर थाने मे मामला को दर्ज करवाया गया है। आपको मालूम हो कि मैराज खालिद नूर, मुमताज व अनवारूल के विरूद्ध आइपीसी की धारा-341, 323, 448, 354, 504, 506, 34 के तहत कांड संख्या-175/18 दर्ज कर पुलिस मामले की जॉच मे जुट गई है। जानकारी के अनुसार पीड़िता विगत कई वर्षो से रमजान नदी किनारे सरकारी जमीन पर झोपड़ी बनाकर रह रही थी। जबकि पीड़िता का पति मेहनत मजदूरी करता था। दिनांक-28 फरवरी को जब पीड़िता का पति मजदूरी करने गया था उस वक्त मेराज खालिद नूर अपने साथियों के साथ पहुँच गया और जमीन खाली करने की धमकी देकर चला गया। गत् 06 मार्च को पुन:खालिद मुमताज आदि पहुँचे और पीड़िता को जमीन खाली करने का निर्देश दिया। जब पीड़िता द्वारा पुरजोर विरोध करने पर आरोपी बदसलूकी करने लगा और उमकाने लगा कि मेरा शक्ल को पहचान लो हमे लोग लादेन के नाम से भी जानते है हम तुम्हे बहुत कुछ कर सकते है अगर जमीन नही खाली किया तो इसका इलजांम भी भुगतने के लिए तैयार रहना। जब आरोपी द्वारा पीड़िता को धक्का देने का प्रयास किसा गया तो पीड़िता द्वारा शोर मचाने पर घटना स्थल पर आस-पड़ोस के लोग उसे बचाने पहुँचे,जब लोग को जुटता देख आरोपी वहॉ से फरार हो गया। पीड़ित

महिला डर डरकर रो रही थी की कही मेरे पति को न मार दे ये लोग बहुत खतरनाक किस्म के लोग लग रहे थे और अपने आपको पटना हाईकोर्ट के वकील बता रहे थे। गौर करे कि वहा के कुछ बुद्धिजिवी वर्ग के लोग चर्चा कर रहे थे कि अगर वे वकील थे तो गुण्डा जैसा व्यवहार क्यो कर रहे थे अगर वे पटना हाईकोर्ट के वकील थे तो इसकी सुचना पुलिस को देकर आना था ना कि गरीब पीड़ित महिला को धमकाने...अगर सही मायने मे वकील था तो वकील का काम गुण्डे जैसा बर्ताव नही करना था। पीड़िता ने बताया कि भईया उसका शक्ल ही गुण्डा जैसा है जिससे बच्चे लोग भी बहुत डरे हुए है। अब आगे प्रसाशन इस पर क्या कार्रवाई करती है इसकी जानकारी अगले अंक मे दी जायेगी। ऐसे पीड़िता ने कहा है कि हमे पुलिस प्रसाशन पर एसपी साहब पर पूर्ण बिश्वास है कि हमे इन लोगो से अवश्य न्याय मिलेगा। ●

खुलासा इंसान इंटर कॉलेज का

एक कॉलेज में दो–दो प्राचार्य

● धर्मेन्द्र सिंह

इंसान इंटर कॉलेज वर्ष 1993 मे सैयद हसन साहब के भाई शीश मोहम्मद साहब के हाथो द्वारा तालीमी मिशन कोर (टीएमसी) के बैनर तले इंसान इंटर कॉलेज का संगे बुनियाद रखा गया। जिसमे शीश मोहम्मद साहब ने बिहार राज्यपाल (गवर्नर ऑफ बिहार) के नाम से 3 एकड़ 50 डीसमील जमीन डोनेट किए। तब सवाल यह है कि कॉलेज के बोर्ड पर 1980 कैसे दर्शाया जा रहा है जो जॉच का बिषय है?वर्ष 2013 मे फर्जी प्रचार्य बनकर मो0 इदरीश द्वारा केस न0–281/2003 से मो0 मोईन एवं मो0 खुर्शीद पर टाइटल किया जो की पटना हाईकोर्ट द्वारा खारिज कर दिया। मो0 मोईन एंव मो0 खुर्शीद के पक्ष मे फैसला आया। गौर करे की केस न0–5406/2014 से मो0 इदरीश द्वारा हाईकोर्ट पटना मे केस दर्ज करवाया उसके बाद केस को

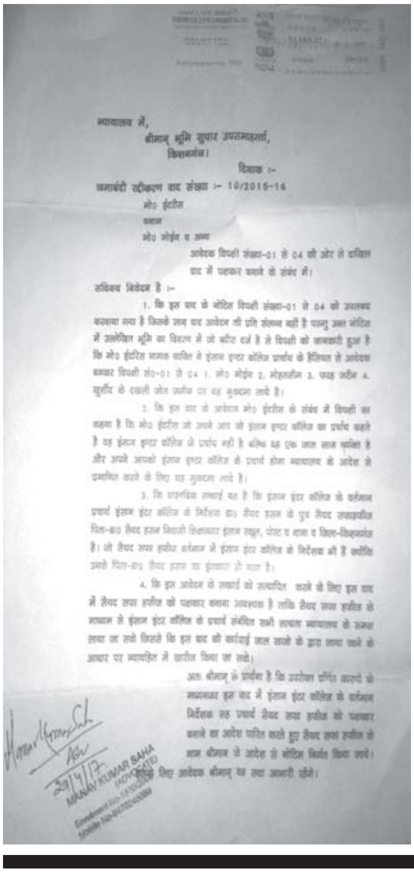

न्यायालय में,
श्रीमान् भूमि सुधार उपसमाहर्ता,
किशनगंज।
दिनांक :-
जमाबंदी रद्दीकरण वाद संख्या :- 10/2015-16
मो0 इदरीस
बनाम
मो0 मोईन व अन्य
आवेदक विपक्षी संख्या-01 से 04 की ओर से दाखिल वाद में पक्षकार बनाने के संबंध में।

सविनय निवेदन है :-

1. कि इस वाद के नोटिस विपक्षी संख्या-01 से 04 को उपलब्ध करवाया गया है जिसके साथ वाद आवेदन की प्रति संलग्न नहीं है परन्तु उक्त नोटिस में उल्लेखित भूमि का विवरण में जो ब्यौरा दर्ज है से विपक्षी को जानकारी हुआ है कि मो0 ईदरिस नामक व्यक्ति ने इंसान इन्टर कॉलेज प्राचार्य के हैसियत से आवेदक बनकर विपक्षी सं0-01 से 04 1. मो0 मोईन 2. मोहतसीम 3. फराह जबीन 4. खुर्शीद के दखली जोत जमीन पर यह मुकदमा लाये है।

2. कि इस वाद के आवेदक मो0 ईदरीस के संबंध में विपक्षी का कहना है कि मो0 ईदरीस जो अपने आप को इंसान इन्टर कॉलेज का प्राचार्य कहते है वह इंसान इन्टर कॉलेज के प्राचार्य नही है बल्कि वह एक जाल साज व्यक्ति है और अपने आपको इंसान इन्टर कॉलेज के प्राचार्य होना न्यायालय के आदेश से प्रमाणित करने के लिए यह मुकदमा लाये है।

3. कि वास्तविक सच्चाई यह है कि इंसान इंटर कॉलेज के वर्तमान प्राचार्य इंसान इंटर कॉलेज के निर्देशक डा0 सैयद हसन के पुत्र सैयद सफाहफीज पिता-डा0 सैयद हसन निवासी शिक्षानगर इंसान स्कूल, पोस्ट व थाना व जिला-किशनगंज है। जो सैयद सफा हफीज वर्तमान में इंसान इंटर कॉलेज के निर्देशक भी है क्योंकि उनके पिता-डा0 सैयद हसन का इंतकाल हो गया है।

4. कि इस आवेदन के सच्चाई को सत्यापित करने के लिए इस वाद में सैयद सफा हफीज को पक्षकार बनाना आवश्यक है ताकि सैयद सफा हफीज के माध्यम से इंसान इंटर कॉलेज के प्राचार्य संबंधित सभी कागजात न्यायालय के समक्ष लाया जा सके जिससे कि इस वाद की कार्रवाई सत्य कागजों के द्वारा लाया जाने के आधार पर न्यायहित में खारीज किया जा सके।

अतः श्रीमान् से प्रार्थना है कि उपरोक्त वर्णित कारणो के मद्देनजर इस वाद में इंसान इंटर कॉलेज के वर्तमान निर्देशक सह प्रचार्य सैयद सफा हफीज को पक्षकार बनाने का आदेश पारित करते हुए सैयद सफा हफीज के नाम श्रीमान के आदेश से नोटिस निर्गत किया जाये।
जिसके लिए आवेदक श्रीमान् का सदा आभारी रहेंगे।

29/4/17
MANAV KUMAR SAHA
(ADVOCATE)

वापस इदरीश द्वारा ले लिया गया ताकि अयलियत सबके सामने उजागर न हो जाए। उसके बाद वर्ष 2012 मे केस न0–24/2012 मे केस किया। फिर पटना हाईकोर्ट द्वारा खारिज कर दिया गया। ऐसे–ऐसे अनेको बार केस नबीं बदल–बदलकर करता रहा तब–तब पटना हाईकोर्ट ने केस को खारिज करते गया।शीश मोहम्मद साहब ने मिशन को टीएमसी सोसाइटी के द्वारा 299/1993 डीड न0–2757 गर्वनर ऑफ बिहार राज्यपाल के नाम से 3 एकड़ 50 डीसमील जमीन डोनेट (दान) किए।जिसका खाता नंबर 9 प्लॉट न0–265 खता न0–1 खेसरा न0–279 खाता–1 मे ही खेसरा न0–280/281/282 रकवा कुल–3 एकड़ 50 डीसमील चौहदी पूर्व मे इंसान स्कुल शिक्षा नगर,पश्चिम मे इंसान स्कुल शिक्षा नगर,उत्तर मे इंसान स्कुल शिक्षा नगर,और दक्षिण मे भी इंसान स्कुल शिक्षा नगर, लेकिन दुर्भाग्य है कि पदाधिकारी कर्मचारी की लापरवाही काा यह हुनर का नमूना है कि निम्न खाता का खाता न0–04,103,111,128 जमाबंदी न0–38 रकवा 3 एकड़ 50 डीसमील आज तक चल रहा है। यह जॉच का बिषय है कि शीश मोहम्मद साहब के द्वारा भिन्न–भिन्न खाता खेसरा की जमीन भिन्न–भिन्न चौहदी दर्शाकर गर्वनर ऑफ बिहार के नाम से जमीन डोनेट हुआ और कर्मचारी के मिली भगत का ये नमूना दिख रहा है।उक्त जमीन पर वाद सं0–75/2012 जिसमे मोहम्मद मोईद बनाम प्रिंसिपल इंसान इंटर कॉलेज सैयद शिफा हाफिज मुकदमा न्यायालय अनुमंडल पदाधिकारी किशनगंज मे दायर हुआ जो कि प्रिंसिपल इंसान स्कूल के खिलाफ गया। जमीन सिद्व नही हो पाया कि प्रिंसिपल इंसान इंटर कॉलेज एवं अन्य कर्मचारी द्वारा अवैध रूप से कब्जा कर अपनी दुकान कहे या कॉलेज चला रहे है। आपको बताते चलेकि इस दौरान इंसान इंटर कॉलेज दो ग्रुप मे बट गया कभी इंसान इंटर कॉलेज के प्राचार्य सैयद शिफा हाफिज और अब दो–दो और प्राचार्य का दावेदार खड़े हो गए है जो अपना नाम मो0 सलाम एवं मो0 ईदरिश बता रहे है। इंसान इंटर कॉलेज तालीमी मिशन कोर (टीएमसी) ने रेगुलेशन लेकर सोसाइटी से इन लोगो को पदमुक्त कर दिया और यह लोग फिर अवैध रूप से विवादित

सिंघिया चौक स्थित संचालित इंसान इंटर कॉलेज विवादों के घेरे में

स्कूल प्रशासन पर जमीन कब्जे का आरोप

किशनगंज। मंगलवार को शहर के सिंघिया चौक के समीप स्थित एक जमीन पर दो पक्षों के बीच विवाद गहरा गया। हालांकि सूचना मिलते ही तुरंत पुलिस मौके पर पहुंची एवं दोनों ही पक्षों को विवाद ना कर कागजात प्रस्तुत करने का निर्देश दिया। मौके पर मौजूद बबलू ने बताया कि उनके जमीन पर इंसान स्कूल के संचालकों ने जर्बदस्ती एक कोचिंग बना लिया है। सबकुछ रातोंरात किया

जमीन पर आज भी अपना कब्जा बोर्ड लगाकर दुकानदारी कर रहे है जो कि सरासर गलत है। यह जमीन आज भी अवैध रूप के कारण भूमी उप समाहर्ता किशनगंज मे केस नंबर-10/2015-16 भूमी विवाद चल रहा है। इस भूमी विवाद भी एक व्यंग टाइप को मोर ले रखा है एक ही कॉलेज के दो-दो प्राचार्य होने का भूमी उप समाहर्ता किशनगंज को दलील दे रहा है अब इसमे सही प्राचार्य कौन है यह जॉच का विषय है। जिसके लिए दोनों प्राचार्य को भूमी उप समाहर्ता द्वारा पार्टी बनाया गया है कि पहले प्राचार्य ही अपना फैसला करें कि सही मायने मे ओरिजिनल प्राचार्य कौन है ? इस जमीन मे इसके पूर्व मे केस न0-24/2012 पटना हाईकोर्ट से दावा खारिज कर दिया गया। इंसान इंटर कॉलेज की जमीन नही होने का दावा खारिज कर दिया गया। इस वक्त पता चलता है कि उक्त इंसान इंटर कॉलेज के मो0 इदरिश मो0 सलाम एंव सैयद शिफा हाफिज आपस मे लड़ रहे है कि मै प्राचार्य हुँ तो....।वर्ष 2012 से उक्त जमीन पर ये जमीन इंसान इंटर कॉलेज विवाद के दायरे मे आज तक चल रहा है।इसकी सुचना मीडिया द्वारा समय-समय पर खबर के माध्यम से प्रकाशित भी किया गया।आप गौर करे कि शिक्षा विभाग की मिली-भगत या लापरवाही कहे जो कार्य किया गया है सूत्रों के हवाले से खबर है कि डीसीएलआर किशनगंज को भी दबाव गणमान्य व्यक्ति को लेकर दिया जा रहा है। आप गौर करे कि ये लोग प्राचार्य का लड़ाई, कॉलेज का लड़ाई, और भूमी का भी लड़ाई कहे या विवाद करने पर तुले हुए है। जो जॉच का विषय है की मात्र तीन कमरे में उतने-उतने छात्र-छात्राओं को कैसे बैठाकर शिक्षा ग्रहण करवाते हैं, ये समझ से परे है और तो और स्कुल का कमरा जिस प्रकार से बनाया गया है उसमे तो मात्र 20 से 25 छात्र ही बड़ी मुश्किल से बैठ सकता है।जानकार कहते है कि ये सब ड्रामा सिर्फ और सिर्फ सरकारी अनुदान लेने के लिए किया जा रहा है। एक तरफ से देखा जाए तो सरकार को भी चुना लगाया जा रहा है। ताकि ससमय अनुदान की राशि का बंदरबॉट किया जा सके। जिसमें जिले के शिक्षा विभाग के अधिकारी, कर्मचारी साथ दे रहे है। आखिर इन लोगो को छात्र-छात्राओं का भविष्य के साथ खिलवाड़ करने का हक किसने दिया है जो प्रतीत होता है कि मो0 इदरिश, मो0 सलाम व इनके लोग कभी भी मार-धार पर उतारू हो सकते है। जिला प्रसाशन को इसमें उचित निर्णय लेने का जरूरत है ताकि विधि-व्यवस्था कायम रहे। ●

रामनवमी की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-साथ पंचायत के सभी जनता से हमारा अपील है कि इंदिरा आवास योजना, शौचालय निर्माण योजना तथा अन्य किसी भी योजना में किसी को भी घूस ना दें।
पंचायत को स्वच्छ एवं भ्रष्टाचार मुक्त रखने में सहयोग करें।

-: निवेदक :-

पूनम देवी, मुखिया

ग्राम पंचायत-सियाडिह, प्रखण्ड-चरपोखरी, भोजपुर।

चलो चले महाकाल धाम
जोड़ा पहाड़ जयन्ती ग्राम

● धर्मेन्द्र सिंह

किशनगंज से महाकाल भक्तों का जत्था महाशिव रात्रि के पावन अवसर पर प्रत्येक वर्ष की भाँति जोड़ा पहाड़ भूटान के गुफा मे अवस्थित बाबा महाकाल का जलाभिषेक हेतु गया,तथा महाकाल का जलाभिषेक किया। जोड़ा पहाड़ भूटान मे देश के विभिन्न क्षेत्रों भक्त गण लाखों की संख्या मे वहाॅ पहुॅचते है तथा बाबा महाकाल का जलाभिषेक कर अपनी याचना करते है।तथा महाकाल उनके सभी कष्टों को दूर करते हुए मनोकामना पूर्ण करते है। वहाॅ की विशेषता है कि महाकाल की पूजा मे कोई आडम्बर नही है। भक्त स्वंय पूजा करते है, और जलाभिषेक करने के समय जो भी याचना होती है उसे महाकाल अवश्य पुरा करते है। मान्यता है कि माता शति का अंग भंग होने के बाद इसी गुफा मे भगवान शिव घ्यान अस्त हुए थें। कामदेव द्वारा उनके ध्यान को भंग करने उपरांत शिव महाकाल का स्वरूप लिए। इस गुफा की उपरी छोड़ पर शति का स्मशान भी है। यहाॅ महाशिव के वक्त ही गुफा तक जाने का रास्ता खुलता है।तथा होली तक भक्तगण पहुॅचते है। गुफा तक जाने का रास्ता बहुत ही दुर्लभ व रोमांचकारी है। ध्यान देनी की बात यह है कि इस धाम को प्रकृति द्वारा ही बनाया है। मनुष्य द्वारा मंदिर का निर्माण नही किया गया है। और प्रकृति द्वारा ही विभिन्न देवी-देवताओं का आकृति बना है। ऐसे तो गुफा बहुत पुराना है लेकिन संन्यासी जिन्हें लोग पगला बाबा के नाम से जानते थे उन्होनें ही इनकी पुजा-अर्चना शुरू की। पगला बाबा 1986 मे शमाधि लिए और भक्तों का आना-जाना लगा रहा। धीरे-धीरे भक्तों की संख्या बढती गई,और भूटान-एवं भारत के प्रशासन द्वारा देख-रेख शुरू हुआ। पहले वहाँ कोई व्यवस्था नही थी, पर अब वहाॅ लंगर भी लगता है और प्रशासनिक सुविधा भी उपलब्ध है। महाकाल गुफा तक पहुॅचने के लिए पश्चिम बंगाल के अलिपुर द्वार से 25 कि०मी० अंदर जयन्ति ग्राम बक्शा अभियारण जाया जाता है, जाने के लिए टैक्सी, बस की सुविधा उपलब्ध है। जयन्ति ग्राम मे धर्मशाला,एवं रेस्ट हाउस ठहरने के लिए उपलब्ध होता है। ऐसे जयन्ति ग्राम कभी भी जा सकते है। परंतु ऐसे महाशिव रात्रि से होली तक जाना आसान रहता है। हर बार की तरह इसबार भी महाकाल सेवा समिति किशनगंज द्वारा निशुल्क सेवा शिविर का आयोजन किया गया था। महाकाल गुफा के पुजारी श्री किशन जी महराज ने बताया कि इस धरती पर शिव ही सत्य है और शिव ही सुंन्दर है, पर यहाँ का अद्‌भुत द्रश्य

आज से पहले कभी नही देखा। जैसे हमे लग रहा है कि हम कैलाश पर है, हमें यहाॅ अनेकों अनुभूति हुआ है। अलिपुरद्वार के डीएम, पुलिस अधीक्षक तथा भूटान के वरिष्ठ अधिकारीगण व्यक्तिगत रूप से प्रशासनिक सुविधा मुहैया करा रहे थे। साथ ही कालचीनी विधायक तथा अन्य नेतागण भी मुस्तैद थे। जयन्ति ग्राम के सरपंच श्री काजल मुखर्जी एवं कमल बनर्जी विशेष अभिरूची ले रहे थे, साथ ही महाकाल सेवा समिति किशनगंज के चंचल मुखर्जी, निलेश कुमार उर्फ डब्बू, भोलू, मुनीलाल, मुकेश साहा, प्रदीप गुप्ता, संजय शर्मा, विनोद कुमार साह, सुचीत कुमार सिंह, श्रेय कुमार सिंह, रोनी कश्यप, आंनद कुमार उर्फ शाहरूख भाई, मिन्टू दा, युवा नेता श्री मनोज मिश्रा, अमित कुमार, दुलाल सिंह, लवली सिंह, दक्ष कुमार सिंह, बिहारी कुमार, फारबिसगंज के नवीन सिंह इत्यादि सक्रिय दिखे। आप गौर करे तो बाबा की ऐसी अद्‌भूत गुफा सूबे मे और कहीं नही है।जो अपने आप मे महत्वपूर्ण है।जोड़ा पहाड़ महाकाल धााम की विशेषता यह है कि यहाॅ पर सभी धर्मो के लोग द्वारा जलाभिषेक किया जाता है।जो अपने आप मे महत्वपूर्ण है।चाहे हिन्दु हो या मुसलमान, सिख हो या इसाई संम्प्रादायिक सद्‌भाव का यह मिशाल है। केवल सच आपको बता रहा है जिले के प्रत्येक वर्ष महाशिव रात्रि के पावन अवसर पर भक्तों का जत्था भूटान की चोटी पर अवस्थित जोड़ा पहाड़ की गुफा के अंदर स्थित महाकालेश्वर का दर्शन करने हेतु पहुॅचते है। इस मंदिर मे लोग दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, उत्तर-प्रदेश, कोलकता, बिहार के आलावे विभिन्न।राज्यों सेश्रद्वालु यहाॅ महाकाल का दर्शण करने आते है और उनकी मनोकामना भी पुरी होती है, जब केवल सच ने महाकाल धाम के पुजारी से संबंधित बाते जानना चाही तो

कहते है कि भगवान शिव की गणना भारत के द्वादश ज्योतिलिंग मे होती है।

किन्तु महाकाल का महात्व केवल इतना ही नही है, ब्रह्मण्ड को मुख्यत: तीन लोको मे विभाजित किया गया है। आकाश, पृथ्वी एवं पताल। इन तीन लोको का शासन सर्व व्यापी सदा शिव अपने त्रिगुणात्मक स्वरूप इस प्रकार है। आकाशे तारकां लिंग, पताले हाटकेश्वरम्! भूॅलोके च महाकालं,लिंग त्रय नमोस्तुते !! मालूम हो कि आकाश मे तारका लिंग तथा पाताल मे हाटकेश्वर पूजित है। महाकाल भूॅ-लोक के शासक है। योगी जन इन तीनों शिव लिंगों का स्मरण करके इन्हें नमस्कार करते है, तो उनके द्वारा महादेव की मानस पूजा सम्पन्न हो जाती है। स्कन्ध पुराण मे भगवान शिव के महाकाल वन मे निवास तथा यहॉ से सृष्टि की संरचना का शुभारंभ करने की कथा है। स्कन्ध पुराण के ब्रम्होत्तर खंण्ड मे

राजा चन्द्र सेन एवं श्रीकर गोप की शिव भक्ति तथा महाकालेश्वर की महिमा का गुणगाण मिलता है। पुरातत्व तथा प्राचीन इतिहास के अध्ययन से यह सिद्व होता है कि शिव की प्रतिमा से भी अधिक प्राचीन लिंग एक रस, एक गुण एक परम तत्व पर ब्रह्म सृष्टि, पंचतत्व सबका प्रतीक है,और नन्दी संसार के धर्म का तथा परब्रह्म की उपासना का प्रतीक है। इसलिए शिवलिंग के सामने अवस्थित रहता है। शिव के तेज को सहन करता है-संभालता है।इसलिए प्राय: देखा गया है कि जहॉ शिव लिंग के सामने नंदी नही होता वहॉ का लिंग अति उग्र हो जाता है। शिव पुराण, वायु पुराण, कुर्म पुराण, लिंग पुराण, स्कन्ध पुराण (संहितात्मक तथा खण्डात्मक) वामण पुराण मे तो विशेष रूप से आद्योपान्त इन्हीं की महिमा व्याप्त है। इन पुराणों इत्यादि सभी के अनुसार महाकाल (शिव) योगी राज है।सब मे शिव लिंग एकोहं द्वितीयों नास्ति का प्रतीत है तथा इसपर जल छोड़ने का अर्थ ब्रह्म मे प्राण लींन करना है। महाकाल के परम शिष्य श्री दिपक जी महराज कहते है कि लिंग पुराण मे महाकाल को मृत्यु लोक के स्वामी के रूप मे स्तवन किया गया है-मृत्यू लोके महाकालं लिंग रूप नमोस्तुत! तंत्र शास्त्र की द्विष्टि मे दक्षिण मुखी शिवलिंग अति उग्र होने होने से प्रचण्ड शक्तिशाली एवं त्वरित फालदायी माना जाता है। भगवान शिव का महाकाल स्वरूप अपने आप मे पूर्ण क्रोधमय स्वरूप है।उनके इसी क्रोध और प्रचण्डता से साधक के शत्रु भयभीत एवं निस्तेज हो जाते है।भगवान महाकाल अपने साधक की हर संकट से रक्षा करते है। खतरे की घड़ी मे उसके हर सम्भावी खतरों से रक्षा करते है। यदि शत्रु आपकी जान के पीछे पड़ गये हो तो भी महाकाल की साधना से उनकी मति पलट जा सकती है और वे शांत हो जाते है। किसी प्रकार की कोई असामयिक दुर्घटना नही होती। ऐसा माना जाता है कि महाकाल के समक्ष महामृत्युंजय जप करने से आयी हुई मृत्यु भी उलटे पैर वापस लौट जाती है। रोगी स्वस्थ्य होकर दीर्घायु हो जाता है।मरणश्या पर पड़ा व्यक्ति भी नया जीवन पाता है। महाकाल का चक्र प्रवर्तकों महाकाल:प्रतावन:! अकाल मृत्यू वो मेरे जो काम करे चाण्डाल का! काल उसका क्या बिगारे जो भक्त हो महाकाल का ! जय महाकाल! त्रिपुरारी महाकाल की भूमिका सर्वोपरि है। महाकाल का अर्थ है-समय की सीमा से अलग एक ऐसी अद्रश्य प्रचण्ड सत्ता जो सृष्ठि का सु-संचालन करती है।दण्ड व्यवस्था का निर्धारण करती है। एवं जहॉ कहीं भी अराजकता, अनुशासनहीनता द्रष्ठि गोचर होती है सुव्यवस्था हेतु अपना सुदर्शण चक्र चलाती है। इसे अवतार प्रवाह भी कह सकते है।जो समय-समय पर प्रतिकुल परिस्थिति से निपटने व सामान्य सतयुगी स्थिति लाने हेतु अवतरित होता रहा है। ●

सड़क के खम्भे को सांसद-विधायक न चुने : पंडित दीनदयाल उपाध्याय

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

आपको लोकसभा और विधानसभा के लिए एक-एक मत देना है। चुनाव-मैदान में खड़े अनेक प्रत्याशियों में से आपको एक को चुनना है। यह एक ऐसा कार्य है, जिसके द्वारा आप विभिन्न दलों को संतुष्ट नहीं कर सकते। अन्तिम निर्णय कई समस्याओं के सतर्क और सही मूल्यांकन पर निर्भर रहता है। प्रत्याशी, दल और उसका सिद्धांत, इन सभी पर विचार करना पड़ता है। कोई बुरा प्रत्याशी केवल इसलिए आपका मत पाने का दावा नहीं कर सकता कि वह किसी अच्छे दल की ओर से खड़ा है। बुरा-बुरा है और दुष्ट वायु की कहावत की भाँति वह कहीं भी और किसी का हित नहीं कर सकता। दल के 'हाई कमान' ने ऐसे व्यक्ति को टिकट देते समय पक्षपात् किया होगा या नेक नीयती बरतते हुए भी वह निर्णय में भूल कर गया होगा। अत: ऐसी गलती को सुधारना उत्तरदायी मतदाता का कर्त्तव्य है।

एक समय ऐसा था कि कांग्रेस के टिकट पर खड़े होने पर सड़क की बत्ती के खम्बे (लैम्प पोस्ट) को भी जनता मत दे सकती थी। प्रथम आम चुनाव में आचार्य नरेन्द्र देव और आचार्य कृपलानी जैसे दिग्गज नेता ऐसे कांग्रेसी प्रत्याशियों के हाथों पराजित हो ये, जिनकी इनकी तुलना में कोई हस्ती नहीं थी। अब सड़क के खम्बे वाला युग बीत गया है। किन्तु ऐसी सम्भावना भी है कि घड़ी का दोलक (पेण्डुलम) दूसरी दिशा में झुक जाये। एक सज्जन ने हाल ही में यह उद्गार व्यक्त किया कि वे कांग्रेसी प्रत्याशी के बदले 'मील के पत्थर' के लिए मतदान करना पसंद करेंगे, चाहे आप कांग्रेस में अपने विश्वास के कारण 'सड़क के खम्बे' का चुनाव करें या कांग्रेस के प्रति अपनी घोर घृणा के कारण 'मील के पत्थर का' आप समान रूप से गलत है। यह मस्तिष्क के रोगी होने एवं मार्गच्युत होने का द्योतक है। बताया जाता है कि अभी हाल ही में कांग्रेस-अध्यक्ष ने कहा है कि कांग्रेस में जो सबसे खराब है, वह भी विरोध-पक्ष के सर्वश्रेष्ठ से अच्छा है। यह मुझे मौलाना शौकत अली की याद दिलाता है, जिन्होंने कहा था कि निष्कृष्टतम

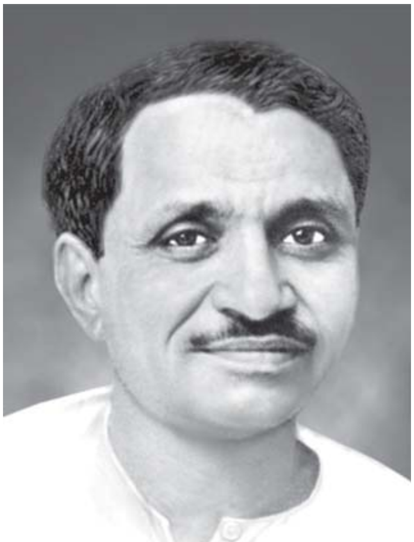

मुसलमान भी उनकी दृष्टि में महात्मा गाँधी से अच्छा है। कोई भी विवेकशील व्यक्ति इन मनोवृत्तियों का समर्थन नहीं कर सकता। जो मतदाता किसी प्रतिक्रिया के आधार पर मतदान करता है, वह भी इसी श्रेणी में आता है। वह अपने निर्णय को अस्वस्थ प्रतिक्रियाओं से आविष्ट कर लेता है।

न तो 'मील के पत्थर' को चुनिए, न 'सड़क के खम्भे' को। वे आपका प्रतिनिधत्व नहीं कर सकते। यदि वे सदन में पहुंच गये तो वे विवेकपूर्वक विचार करने और निर्णय की आपकी अक्षमता को ही प्रतिभासित करेंगे। इसलिए आप अपना स्वयं का प्रतिनिधि चुनिए।

☞ **राजनीतिक दलों के लिए एक दर्शन की आवश्यकता :-** ''भिन्न-भिन्न राजनीतिक दलों को अपने लिए एक दर्शन (सिद्धांत या आदर्श) का क्रमिक विकास करने का प्रयत्न करना चाहिए। उन्हें कुछ स्वार्थों की पूर्ति के लिए एकत्र होनेवाले लोगों का समुच्चय मात्र नहीं बनना चाहिए। उनका रूप किसी व्यापारिक प्रतिष्ठान या ज्वाइंट स्टॉक कंपनी से अलग होना चाहिए। यह भी आवश्यकता है कि पार्टी का दर्शन केवल पार्टी घोषणा-पत्र के पृष्ठों तक ही सीमित न रह जाए। सदस्यों को उन्हें समझना चाहिए और उन्हें कार्यरूप में परिणत करने के लिए निष्ठापूर्वक जुट जाना चाहिए।'' (पोलिटिकल डायरी, पं. दीनदयाल उपाध्याय, सुरूचि प्रकाशन, नई दिल्ली 2012, पृष्ठ 188)।

☞ **राजनीति में योग्य व्यक्ति की जरूरत:-** ''सत्ता सामान्यत: भ्रष्ट करती है। कांग्रेस आज सत्ता में है तो उसमें भ्रष्टाचार है। कल जनसंघ सत्ता में आती है तो उसमें भी यह दोष आ सकता है। यदि जनसंघ भ्रष्ट होती है, तो मैं इस संगठन को स्वयं अपने हाथों से समाप्त कर दूँगा एवं नए संगठन का निर्माण करूँगा। जिस प्रकार महर्षि परशुराम ने 21 बार क्षत्रियों को नष्ट किया एवं जब उन्हें भगवान श्रीराम सदृश्य व्यक्ति मिल गए तो वे वन को प्रस्थान कर गए। ऐसा मैं तब तक करता रहूँगा, जब तक मुझे योग्य व्यक्ति नहीं मिल जाते।'' :- पं. दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद दर्शन, लेखक एवं प्रकाशक-डॉ. विनोद मिश्रा, 2007

☞ **जातिवाद और राजनीति :-** ''राजनीतिक दल के जीवन में एक उपचुनाव कोई विशेष महत्व नहीं रखता, किंतु एक चुनाव में जीतने के लिए हमने जातिवाद का सहारा लिया, तो वह भूत सदा के लिए हम पर सवार हो जाएगा और कांग्रेस एवं जनसंघ में कोई अंतर नहीं होगा।'' :- पं. दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद दर्शन, लेखक एव प्रकाशक-डॉ. विनोद मिश्रा, 2007

☞ **शुद्ध राजनीतिक चेतना का संरक्षण जरूरी :-** ''सामान्य जन में राजनीतिक चेतना का जागरण इस युग की सबसे बड़ी देन है। यदि इस चेतना को तात्कालिक राजनीति की भूलभुलैयों से बचाकर एक भावनात्मक राष्ट्रीय अधिष्ठान पर सृजन का साधन बनाया जाता तो हम और आगे बढ़ गए होते तथा आज की अनेक समस्याओं से मुक्त रहते। हमें इस चेतना को भावात्मक रूप देकर ही नए युग का निर्माण करना है। किंतु देश में ऐसे अनेक लोग हैं जो या तो बीते युग से ही जकड़े हुए हैं या राष्ट्रमानस से अनभिज्ञ अथवा उसके प्रति सहानुभूतिपूर्ण एवं अश्रद्धालु होने के कारण विदेशीपन से प्रभावित एवं व्यामूढ़ हैं। फलत: युग परिवर्तन सहज न होकर संघर्षपूर्ण हो गया है। हमें सभी विद्यमान समस्याओं का विश्लेषण इस पार्श्वभूमि में करते हुए देश और काल के अनुसार अपनी नीति निर्धारित करनी होगी।''- पं. दीनदयाल उपाध्याय, विचार दर्शन, खंड-7, व्यक्ति-दर्शन, विश्वनाथ नारायण देवधर, सुरूचि प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. 92-93

☞ **सैद्धांतिक राजनीति ही सर्वश्रेष्ठ :-** ''सैद्धांतिक दृष्टि से विरोधी तत्वों के साथ हाथ मिलाकर कोई भी दल अधिक काल तक न तो शासन कर सकता है न अपनी नीतियों का क्रियान्वयन ही कर सकता है। जहाँ यह बात सच है, वहीं यह भी उतना ही सच है कि कभी-कभी आपद्-धर्म के रूप में, विशिष्ट काल व परिस्थिति में, अपने विरोधियों को भी साथ लेना अनिवार्य हो जाता है। द्वितीय महायुद्ध में इंग्लैंड व अमेरिका का सोवियत रूस से हाथ मिलाना क्या सैद्धांतिक दृष्टि से उचित कहा जाएगा? पर उन परिस्थितियों में मोरचा बनाकर नाजीवाद का सफल सामना किया, इसे भी तो कोई अनुचित नहीं कह सकता।''
-स्मारिका 'समग्र दृष्टि' पं. दीनदयाल उपाध्याय जन्मभूमि स्मारक समिति, नगला चंद्रभान, मथुरा, 1 जून, 1985, पृ. 16

आज भाजपा के अधिकांश कार्यकर्ता पं दीनदयाल के रास्ते पर चलने की कसम तो खाते हैं परन्तु दीनदयाल के सिद्धांत से अनभिज्ञ हैं इसी कारणवश भाजपा सत्ता में आने के बाद भी चौराहे पर खड़ा है। भाजपा के कार्यकर्ताओं को गीता, कुरान, पंडित दीनदयाल, चाणक्यनीति तथा राममनोहर लोहिया की पुस्तक पढ़ना चाहिए। ●

घूसखोर बनाम लाईसेंसी आतंकवादी

● **डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह**

राणा राजेन्द्र पासवान
भाजपा नेता

त्रिगुनानन्द
पूर्व मुखिया

जितेन्द्र मिस्त्री
नगर उपाध्यक्ष, भाजपा

माओवादी या नक्सलवाद वहीं पनपेगा जहां घूसखोरों की संख्या चरम सीमा पर है। भ्रष्टाचार के दलदल में न्याय डूब गया है। आज लाखों निर्दोष जेलों के सलाखों में कैद है तथा घूसखोर महल, गाड़ी की कतार सजा रहा है। और अपने बच्चों को उच्च कोटि के स्कूलों में भेजकर बड़े-बड़े पद पर पदस्थापित कर लेता है। घूसखोर पिता वैसे घर की बेटी से अपने बच्चों की शादी करता है जिस घर की बेटी को कपड़ा धोने का भी अवसर नहीं मिलता। जिस निर्दोष को जेल में भेजकर पूरे परिवार का जीवन बरबाद कर देता है। पढ़ाई-लिखाई चौपट हो जाती है तथा चारों तरफ अंधेरा ही अंधेरा झलकता है। घूसखोरों का नामकरण बदलना होगा, और कहना होगा (लाइसेंसी आतंकवादी) सरकार द्वारा जिन नक्सलवादियों के विरूद्ध पुलिस को मोरचा संभालने के लिए लगाया जाता है वह कोई विदेशी नहीं है, वे भारत के ही नागरिक हैं।

आज देश के नागरिक उस मोड़ पर खड़ी है। जहां से अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाना अपने भविष्य से खिलवाड़ करना है यदि साधारण व्यक्ति भ्रष्टाचार के विरूद्ध आवाज उठाता है तो अभियुक्त की तरह चक्रव्यूह में घिर कर मारा जा सकता है या ऐसी दुर्गती कर दी जाती है कि समाज के सामने मुंह दिखाने लायक नहीं रह पाता है। जैसे पटना जिला अन्तर्गत फतुहा प्रखण्ड के उसफा पंचायत के पूर्व मुखिया त्रीगुणानन्द को अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाने के एवज में पटककर पेशाब तक पिलाया गया, जिसके कारण अन्याय के विरोध करने वालों की संख्या का ग्राफ काफी नीचे आ गया है। त्रिगुणानन्द आर. एस. एस. के कार्यकर्त्ता थे। अन्याय के विरूद्ध संघर्ष के कारण कितनी बार जेल गए कितनी बार आमरण अनशन किए। उनके पास भी आकड़ा नहीं है, विरोध के कारण ही रात्रि में मार-पीट किया गया। जिससे सिर में दर्जनों जख्म मिला अन्ततः कई महीनों तक कौमा में रहे कौमा भले ही समाप्त हो गया परन्तु दिमाग 90 प्रतिशत से ज्यादा क्षतिग्रस्त हो गया, बातचीत भी नहीं कर पाते चलना-फिरना मुश्किल है। उम्र 90 साल से ज्यादा हो चुका है। अन्याय के विरूद्ध संघर्ष में अपना जीवन, जीविका का साधन भी बेच दिया और अब दाने-दाने का मोहताज है, अब बेटी के यहां जीवन यापन फतुहा में ही कर रहे है बेटी भी आर्थिक दृष्टि से काफी कमजोर है परन्तु अपने भूखे रहकर अपने पिता को खिला रही है। बावजूद भाजपा के लोग सहयोग को कौन कहे कोई देखने तक नहीं जाता है, धिक्कार है फतुहा के भाजपा के कार्यकर्त्ताओं से अच्छे भविष्य की आशा करना?

फतुहा आर. एस. एस. के कर्मठ कार्यकर्त्ता जितेन्द्र मिस्त्री जो ताला की चाभी बनाकर अपने पूरे परिवार को किसी तरह भरण पोषण कर जीवन निर्वाह कर रहे है। पटना गांधी मैदान में नरेन्द्र मोदी के कार्यक्रम में बम चला था उसमें फतुहा के दो आदमी घायल हुए थे एक श्रवण कुमार दूसरा जितेन्द्र मिस्त्री जो गरीब रहने के बावजूद जुझारू तेवर के साथ अन्याय का विरोध करते है। बावजूद सरकार से मदद की आशा में एक-एक दिन काट रहा है। परन्तु सहायता को कौन कहे अपने लोग भी ताला की चाभी तक शायद ही लोग बनवाते होगे।

आज सुभाष चन्द्र बोष, चन्द्र शेखर आजाद, भगत सिंह, खुदी राम बोष होते तो घूसखोर भ्रष्ट मंत्रियों की नजर में नक्सलवादी, माओवादी ही कहे जाते, तथा मारे भी जाते? भगत सिंह ने कहा था कि ''सच बोलना बगावत है तो समझ लो हम भी बागी है।

महात्मा गांधी ने दुनिया के सात खतरों से सावधान किया था मगर देश के राजनेताओं ने आजादी के 71 वर्षो के बाद भी उन खतरों से देश को नहीं बचाया। उनके बताए खतरे थे- सिद्धान्तहीन राजनीति, श्रमहीन सम्पत्ति, विवेकहीन सुख, चरित्रहीन ज्ञान, दयाहीन, विज्ञान, नीतिहीन व्यापार त्यागहीन पूजा।

आज देश इन्हीं खतरों से जूझ रहा है और भारत माता कराह रही है। भारत माता का सच्चा बेटा वह कौन है जो इन खतरों से देश को बचा सके। ●

जीतन मांझी को हटाना, एनडीए का दोबारा सत्ता में वापसी मुश्किल

समीक्षा यात्रा नीतीश और भाजपा दोनो के लिए खतरे की घंटी

● **डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह**

नीतीश जी का समीक्षा यात्रा का अर्थ होता है भ्रष्टाचारियों को ईमानदारी का सर्टिफिकेट बांटना। नीतीश कुमार चाहते हैं कि जनता द्वारा त्राही-त्राही करते लोगों की आवाज को सुशासन जिन्दाबाद, समीक्षा यात्रा जिन्दाबाद के नारों से मिटा दे। नीतीश के सुशासन एवं समीक्षा यात्रा नीतीश के लिए खतरे की घंटी है तथा नीतीश के कुशासन एवं समीक्षा के नाम पर भ्रष्टाचारियों को ईमानदारी का सर्टिफिकेट बांटना तथा भाजपा को मौनी बाबा बने रहना का अर्थ होता है भ्रष्ट लोगों को समर्थन करना यह भाजपा के लिए खतरे की घंटी है।

नीतीश जी की समीक्षा यात्रा में ईंट पत्थरों से स्वागत तथा घटती भीड़ की संख्या दूसरी ओर तेजस्वी के न्याय की यात्रा में उमड़ती भीड़ तथा फूलों की वर्षा नीतीश तथा भाजपा के लिए खतरे की घंटी है। नीतीश कुमार को शायद भरोसा है कि कुर्मी, मुस्लिम, पिछड़ा, अतिपिछड़ा तथा यादव को मिलाकर आसानी से अकेले भी सरकार बना लेंगे। ऐसी अवस्था में भाजपा से 50 प्रतिशत से ज्यादा सीट मांग सकते है। ज्यादा सीट नहीं मिलने पर अकेले भी मैदान में ताल ठोक सकते हैं वैसी अवस्था में समीक्षा यात्रा नीतीश जी की राजनीतिक विदाई यात्रा साबित होगी। नीतीश जी अभी और कई तरह की यात्रा कर सकते हैं। ऐसी यात्रा से भाजपा को भारी नुकसान हो सकता है। भाजपा को लग रहा होगा कि मेरा बूथ कमिटी तक मजबूती है परन्तु यह सिर्फ कागजी बूथ कमिटी है। नीतीश जी भ्रष्टाचार में लिप्त अधिकारियों को महत्व देने के पीछे छिपा हुआ राज है कि भ्रष्ट लोग ही भ्रष्टाचार उजागर होने से बचा सकता है और बचा भी रहा है इसी कारण ईमानदार अधिकारी से दूर रहते हैं। उदाहरण बताना चाहता हूँ कि समीक्षा यात्रा में एक भी ईमानदार अधिकारी होता तो वह समीक्षा यात्रा स्थल के गांवों में नाली, गली, भवन आदि में खोदकर नमूना लेकर जांच करवा सकता था, यदि जांच करवाता तो 100 प्रतिशत भ्रष्टाचार निकल जाता, नागरिकों के सामने नंगे होना पड़ता तथा भ्रष्टाचार में लिप्त मधुर सम्बन्ध वाले अधिकारी के विरूद्ध कारवाई करना पड़ता। दूसरी ओर समीक्षा यात्रा में किशोर कुणाल, किरण बेदी, विकास वैभव, शिवदीप लांडे की तरह कर्मठ अधिकारी ले जाते तो न्याय के लिए भीड़ उमड़ पड़ती, वैसी अवस्था में समीक्षा यात्रा भ्रष्टाचार की पोल खोल यात्रा बन जाती। जीतन मांझी को भाजपा से हटना, एनडीए को बिहार सत्ता में वापसी मुश्किल होगी।

भाजपा को जनता को न्याय देने के लिए कड़े कदम उठाना पड़ेगा। परन्तु नीतीश के साथ रहकर विकास का योजना तथा न्याय करना मुश्किल होगा।

1. भ्रष्टाचार और अपराध के विरूद्ध हमला करना। 2. भाजपा, लोजपा के उम्मीदवार क्षेत्र में किशोर कुणाल, किरण बेदी, शिवदीप लांडे, विकास वैभव, रत्न संजय के तरह ईमानदार अधिकारी भेजकर अपराध-भ्रष्टाचार पर अविलम्ब अंकुश लगवाना होगा अन्यथा नीतीश के चक्रव्यूह में भाजपा का बोरिया बिस्तर बंधाने से रोका नहीं जा सकता है। 3. संगठन के पदाधिकारी को चेहरा नहीं चरित्र से चुनाव करवाने की आवश्यकता है तथा संगठन में पदाधिकारी को राजनीतिशास्त्र, गीता, कुरान, चाणक्य नीति, पंडित दीन दयाल के डायरी तथा राममनोहर लोहिया के पुस्तक का अध्ययन अतिआवश्यक है। अन्यथा कागजी कार्यकताओं के बताए आंकड़ा जोड़ेंगे वैसी अवस्था में भाजपा, राजद, जदयू तीनों की जीत पक्की है। उदाहरण पटना जिला के फतुहा का ही ले लें। मैं चाहा था कि फतुहा को देश में पहला स्थान ला दें, परन्तु ठीक उल्टा हो गया, मैं इस लेख के लेखक डॉ. लक्ष्मी नारायण सिंह जब भाजपा में सक्रिय योगदान देना शुरू किया तो पहला घटना हुआ कि सरकार द्वारा आतंकवादियों से रक्षा के लिए मिला छः सुरक्षा गार्ड को हटा लिया गया, फतुहा में पाकिस्तानी झंडा फहराया गया, ऐसे गंभीर घटना में भी सहयोग के बदले कुछ लोग झंडा फहराने वालों से अन्दर-अन्दर मिल गए तथा मुझे ही मुसीबत में फंसा दिया। पंडित दीन

दयाल विशेषांक का लोकार्पण किया गया, ठीक उसी दिन भाजपा के कुछ कार्यकर्ताओं द्वारा लिट्टी-चोखा खाने का कार्यक्रम तय किया गया, विशेषांक का लोकार्पण स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडे ने किया था। मेरे घर पर कई बार अपराधिक घटना घटी वैसे गंभीर स्थिति में चेहरा से भाजपा में साथ रहने वाले दूर रहें। यह है बिहार में भाजपा के चाल और चरित्र।

भाजपा को बगैर समय गंवाए ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है। फतुहा में भाजपा द्वारा राष्ट्रीय सम्मान समारोह का आयोजन किया गया था। यह आयोजन नवोदय पब्लिक स्कूल फतुहा में भाजपा तथा प्रेम यूथ फाउंडेशन के संयुक्त तत्वाधान में किया गया था। समारोह का उद्घाटन अंजु कुमारी ने दीप प्रज्जवलित कर किया। अपने

उद्घाटन भाषण में निर्धारित विषय पर विचार करते हुए कहा कि समाज के लोगों को सम्मान और पुरस्कार की अपेक्षा न करते हुए सिर्फ सृजन को देर सवेरे सामाजिक स्वीकृति तो मिलती है।

समाज में राष्ट्रीय पहचान बना रहे सुप्रसिद्ध साहित्यकार रामयतन यादव, प्रेम यूथ फाउंडेशन के अध्यक्ष प्रेम कुमार, सुप्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. लक्ष्मी नारायण सिंह, मो. अब्दुल सत्तार, प्रो. विमल कुमार, मुन्ना कुमार यादव, रंजीत कुमार यादव (युवा जिलाध्यक्ष, लोजपा), अंजु कुमारी को सम्मानित किया गया। समारोह का संचालन प्रो. विमल कुमार ने किया। ऐसे महत्वपूर्ण समारोह में सम्मान लेना तो दूर आने में भी गैर भाजपा सोच वाले नहीं आएं। ●

जनसंख्या बढ़ाओं सत्ता पाओ की होड़

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत का पतन कई स्तरों पर हुआ है। धर्म की दृष्टि से, आचरण की दृष्टि से, भावनाओं की दृष्टि से तथा चारित्रिक दृष्टि से भी पतन हुआ है। आज कोई भी राममनोहर लोहिया, सरदार पटेल, जयप्रकाश नारायण, पंडित दीन दयाल, आदित्य नाथ योगी की तरह वैचारिक ऊर्जा से परिपूर्ण नेता नजर नहीं आ रहा है। जनता ने भी नेताओं का चयन करने से पूर्व नेता का चरित्र, प्रकृतिगुण, लक्षण, व्यवहार आदि की जांच-पड़ताल नहीं करती है। बल्कि जातियों की गणना में उलझ जाती है। जनसंख्या वृद्धि सत्ता की सीढ़ी बन चुकी है। यह सोच नया नहीं है। वैट्रिक ह्यूम की किताब छः डिस्नरी ऑफ इस्लाम, पृष्ठ नंबर 134 में पैगम्बर हजरत मोहम्मद का सुझाव है कि, मैं चाहता हूं कि मेरे लोग दूसरे से कहीं अधिक संख्या में हो। कारण यह है कि बढ़त से नये मुल्क बनाने की मांग को बल मिलता है।

डॉ0 भीमराव अम्बेडकर ने 90 वर्ष पूर्व नवम्बर 1926 में तेलगू समाचार में लिखा था कि मुसलमानों का एक छोटा सा गिरोह हिन्दुओं के एक बड़े समूह को पीट ही नहीं सकता बल्कि बुरी तरह से पीट सकता है। जनगणना आयुक्त डोनॉल ने 1891 ई0 में ही कहा कि 620 वर्ष में हिन्दू समाप्त हो जायेंगे। 1991 की जनगणना के बाद डॉ0 रफिक जकारिया ने लिखा है कि मुसलमान 365 वर्ष के बाद भारत में बहुमत में होंगे। डॉ0 अम्बेडकर भारत के भविष्य को देखते हुए ही शायद मुस्लिम आबादी की समस्या को सुलझाने के लिए ही पाकिस्तान निर्माण का समर्थन किया तथा जनसंख्या अदला-बदली का सुझाव भी दिया था। ऐसा हुआ नहीं। यही नहीं मुस्लिम समान्य नागरिक संहिता भी नहीं मानते। परिवार नियोजन का राष्ट्रीय कार्यक्रम सिर्फ हिन्दुओं के लिए ही है। राजनीतिज्ञों की नजर में मुस्लिम गोलबंद वोट बैंक हैं। लिहाजा राजनीतिज्ञ इनकी प्रत्येक अखरपन की सेकुलरिजम और हिन्दुओं के राष्ट्र भाव को भी संप्रदायिकता बताती है। चुनौती असाधारण है। मुस्लिम मजहब का वास्ता देकर परिवार नियोजन का विरोध क्यों करते हैं? तथ्य स्पष्ट है कि खुद को मजहबी बताकर अपनी आबादी बढ़ाते हैं। हिन्दू भी यदि ऋग्वेद के अनुसार संतती सूत्र पर चलने लगे तो जनसंख्या नियंत्रण के राष्ट्रीय कार्यक्रम का क्या होगा? ऋग्वेद (10, 85, 45) में नवविवाहितों के लिए प्रार्थना है कि, हे इन्द्रदेव आप उसे सौभाग्यशाली बनाये और दस पुत्रों वाली बनाये। आबादी बढ़ी है तो देश के भविष्य को देखते हुए। हिन्दु-मुस्लिम और अन्य जाति-धर्म के लोगों को भी नियमन और जनसंख्या असंतुलन पर गहन विचार करना एवं मानना राष्ट्रीय आवश्यकता है। लेकिन इस्लामी जीवनशैली में जनसंख्या वृद्धि पर रोक लगाने के संबंध में कोई चिंतन नहीं है। अरब मुल्कों में आबादी नियंत्रण के विरोध में 'शाल्फिया' मूवमेंट चला था। 1988 में इस्लाम जनसंख्या वृद्धि दर 20 प्रतिशत थी। यह विकसित तुलना में 33 प्रतिशत अधिक कई इस्लामी देशों में नियंत्रण के कार्यक्रम अपनाये हैं। ईरान ने आबादी के रफ्तार को 3.2 प्रतिशत से घटाकर 2.2 प्रतिशत कर दिया है। पाकिस्तान ने भी जनसंख्या नीति की घोषणा 2002 में की है। मिस्त्र, जार्डन, तजाकिस्तान, कुबैत, ओमान, कतर, सउदी अरब, बनाई और अजर बैजान की आबादी इस प्रयास से स्थिर हो गई। अलबेनिया, फिलिस्तीन और सीरीया की आबादी ऋणात्मक है।

लेकिन भारत में मुसलमानों की आबादी बढ़ाव नीति जारी है। कुछ मुस्लिम विद्वानों ने आबादी नियंत्रण की बाते की मगर मुस्लिम पसर्नल लॉ बोर्ड के चेयरमैन ने परिवार नियोजन को गैर इस्लामी बताकर सबका मुंह बंद कर दिया। भारतीय मुस्लिम जनसंख्यया वृद्धि को सत्ता की सीढ़ी मानते हैं। इसी लोभ में जनसंख्या बढ़ाने में लगी है। दूसरी बात है कि जो लोग भारत को धर्म-निरपेक्ष कहते हैं। उनसे पूछे कि मुस्लिम अपने धर्म के अनुसार चार शादी कर सकते हैं। जबकि रामायण ग्रंथ के अनुसार दशरथ की तीन पत्नियां थी। फिर हिन्दू एक से अधिक शादी नहीं कर सकता है। संसार में मुख्य रूप से चार धर्म प्रचलित है। हिन्दू धर्म, मुस्लिम धर्म, बौध धर्म, ईसाई धर्म, इन चारों धर्मों में अवांतर कई धर्म है। हिन्दू धर्म को छोड़कर शेष तीनों धर्मों के मूल में धर्म चलाने वाला कोई व्यक्ति मिलेगा? जैसे मुस्लिम धर्म के मूल में मो0 साहब, बौध धर्म के मूल में गौतम बुद्ध और इसाई धर्म के मूल में ईसामसीह मिलेंगे। परन्तु हिन्दू धर्म के मूल में कोई व्यक्ति नहीं मिलेगा। कारण है कि हिन्दू धर्म किसी व्यक्ति के द्वारा चलाया हुआ धर्म नहीं है। यह सामुहिक निर्णय पर आधारित है। फिलहाल बढ़ती हुई जनसंख्या पर नियत्रण हेतु तमाम भारतवासियों को सचेत होना पड़ेगा, चाहे वह हिन्दू हो या मुस्लिम-सिक्ख हो या इसाई। जनसंख्या नियंत्रण के कानून से ऊपर कोई नहीं है। भारतीय नेताओं को भी चाहिए कि वह मुसलमानों को वोट बैंक ना समझे, अन्यथा मुसलमानों की बढ़ती आबादी एक ना एक दिन देश की अर्थव्यवस्था को नेस्तानाबूत करके छोड़ेगा। देश की अखंडता पर भी खतरा हो सकता है। ●

भारत की पहचान कर्ज लेकर घी पीओ

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

भारत के सत्ता प्राप्त बुद्धिजीवी दूसरे देश के कर्ज लेकर ऐशों आराम की जिन्दगी जी रहे हैं और देश कर्ज के समुद्र में डुबते जा रहा है कर्ज लेकर वेतन लेना और देना, कर्ज लेकर हेलिकॉप्टर पर सैर करना, कर्ज लेकर सूरा और सुन्दरी में गोता लगाते रहना पैसा वाले एम.पी., एम.एल.ए., मंत्री, आई.ए.एस., आई.पी.एस. को मुफ्त में सवारी, मकान, फोन, चिकित्सा आदि, जिसको पैसा नहीं है वह मकान, भोजन, वस्त्र चिकित्सा के अभाव में तड़पते रहना भारत की पहचान है। भले ही भारत की संविधान ने गरीबों, असहायों को लोकतंत्र की माला तोहफा के रूप में दे दिया कि एक लाइन का मंत्र पढ़ते रहो कि हम लोकतंत्र के मालिक है, हम लोकतंत्र के मालिक है। जिस समय भारत आजाद हुआ था। उस समय भारत पर किसी देश का कोई कर्ज नहीं था, बल्कि आर्थिक दृष्टि से काफी सम्पन्न था। भारत से एक साल पीछे चीन को आजादी मिली थी चीन आज किसी देश का कर्जदार नहीं है। चीन को इस दुनिया को कोई भी देश आँख नहीं दिखला सकता। चीन में हड़ताल और भ्रष्टाचार के लिए कोई सोच भी नहीं सकता है और भारत में हड़ताल और भ्रष्टाचार को कोई गिनती कर नहीं सकता कि एक साल में कहाँ और कितना हड़ताल और भ्रष्टाचार हुआ।

भारत में शर्मनाक स्थिति वहां पर देखने को मिलता है कि एक भाई पच्चास-साठ हजार रुपये नौकरी से कमाता है। आलिशान महल है, गाड़ियों की कतार है और सगे भाई दाने के अभाव में तड़प रहा है। उसके बावजूद भी कोई दया-दृष्टि नहीं होती बल्कि वेतन बढ़ाने के लिए हड़ताल का क्रम चलते रहता है। वैसे स्थिति में उल्टी खोपड़ी वाले नेता भूख से तड़प रहे भाई से हड़ताल में मदद करवाता है जिसे भारी वेतन, गाड़ी, मुफ्त में चिकित्सा, मुफ्त में फोन, नौकर आदि उपलब्ध है। भारत की आज ऐसी दुर्दशा हो गई है कि पाकिस्तान ऐसा छोटा देश भी आंख दिखा रहा है। जैसे कोई बकरी, शेर को आंख दिखा रहा है।

चीन की नजरों में भ्रष्टाचार सबसे बड़ी अपराध है जिसे एक ही सजा होती है फांसी, चीन में एक नदी की पुल ढह जाने के कारण निर्माण करने वाले इंजीनियर को बोरा में बांधकर उसी नदी नदी में डाल दिया गया। चीन में एक अपराध होता है या हथियार बरामद किया जाता है तो वैसी अवस्था में हथियार उत्पन्न स्थल तक पहुंचने की पुलिस की जिम्मेवारी होती है जैसे चापाकल मिस्त्री को पानी निकालने तक की गहराई पर पाईप डालना पड़ता है।

परन्तु भारत ऐसा बेशर्म देश है। जिसे फांसी पर लटका देना चाहिए वैसे अपराधी विधान सभा और सांसद में दहाड़ता है और कानून बनाता है। बिहार की जनता ही मुख्य दोषी है जहाँ चुनाव में वोट के बदले जाति की गिनती की जाती है। वामपंथी की अस्तित्व संकट में है जिसका मुख्य कारण है वामपंथी नौकरी पेशा वाले वेतन बढ़ाने के लिए यानि हड़ताल करता तो खुलकर समर्थन करता है, नौकरी पेशा वाले ड्यिूटी करें या न करें, या टोटल कार्य कागजी ही क्यों न हो। जो इंजीनियर 18-20 बालू में एक सीमेन्ट देकर पुल-भवन आदि निर्माण करवा रहा है उसका विरोध नहीं किया जाता है। परन्तु वैसे भ्रष्ट इंजीनियर हड़ताल करता है तो वामपंथी ताल ठोक कर समर्थन करता है। दोहरी नीति के कारण ही वामपंथी का अस्तित्व संकट में है।

शिक्षा की दुर्गति ऐसी हो गयी कि पढ़कर लोग सोंच में पड़ जाते है कि भारत सरकार की खोपड़ी उलट तो नहीं गई है। भारत के शिक्षा मंत्री हमारे छात्रों को इतिहास में क्या-क्या पढ़ा रहे थे। कुछ उदाहरण इस प्रकार है। (1) राम और कृष्ण का कोई अस्तित्व ही नहीं था। वे केवल काल्पनिक कहानियाँ है। (मध्यकालीन भारत, पृष्ठ 245)। (2) वैदिक काल में विशिष्ट अतिथियों के लिए गोमांस का परोसा जाना सम्मान सूचक माना जाता था (कक्षा 6 प्राचीन भारत पृष्ठ 35)। (3) लाला लाजपत राय, तिलक, अरविन्द घोष, विपिन चन्द्र पाल जैसे नेताओं को उग्रवादी तथा आतंकवादी कहा गया है। (4) कक्षा 12 आधुनिक भारत पृष्ठ 208)। (4) शिवाजी ने धोखे से विजय प्राप्त की (मध्यकालीन भारत पृष्ठ 337) आदि अनेकों उदाहरण है।

हमारे तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह लन्दन में कह आये थे कि हमारे शासन से तो अंग्रेजों का शासन अच्छा था। अंग्रेजों के राज के कानून-व्यवस्था की हालत आज वाली हालत से बेहतर थी। क्यों कि तब कोई डाकू, खूनी, बलात्कारी और लुच्चा, लुटेरा, सांसद, मंत्री नहीं था। विधायक नहीं बन सकता था। आजादी से पहले सन् 1946 में ही ब्रिटेन की संसद में भारत की आजादी के बिल पर बहस चल रही थी। बहस के दौरान चर्चिल ने जो कुछ कहा था उसका हिन्दी अनुवाद है। स्वतंत्रता मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है। लेकिन इस समय भारत की बागडोर कांग्रेस के हाथों में देने का मतलब होगा, लाखों-करोड़ों भूखे, हिन्दुस्तानियों की तकदीर बेईमानों, बदमाशों और लुटेरों के हाथों में सौंपना? कांग्रेस के राज में एक बोतल पानी ओर रोटी का टुकड़ा भी टैक्स से नहीं बच पायेगा, केवल हवा मुफ्त होगी। आजाद हिन्दुस्तान राजनीतिक झगड़ों और फसादों में गुम हो जायेगा, तब हमने चर्चिल के कथन को भारत की आजादी में अड़ंगा डालने वाला माना था। लेकिन आज वही सच पीछे खड़ा है, आज घोटालों का देश भारत है। आजादी के दिन 15 अगस्त 47 तक नहीं किसी देश का कर्ज था और एक रुपया बराबर एक डालर का महत्व था और आज 65-67 रूपया बराबर एक डालर है। भाजपा के सरकार बनने से लोगों में आशा जगी है। परन्तु आदित्य नाथ योगी के तरह मुख्यमंत्री से परिवर्तन लाया जा सकता है। एक बार नीतीश कुमार कुराण ग्रंथ पढ़ ले उसके बाद ही सच्चा देशभक्त बन सकते है। ●

पुलिसकर्मी का तबादला, निलम्बन सजा या सुरक्षा?

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

पुलिस जब नियम एवं कानून को ताख पर रखकर काम करती है तब यदि जनता द्वारा सख्त विरोध किया जाता है तो संबंधित पुलिसकमी को तबादला, निलंबन या लाईन हाजिर कर दिया जाता है। क्या ऐसे करने से पुलिस की मनोवृति बदल जाती है या घूस लेना, निर्दोष को गाली-ग्लौज देना बंद कर देती है। या फिर बड़े अपराधियों की धड़-पकड़ आरंभ कर देती है? या फिर पुलिस के बड़े अधिकारियों द्वारा जनता की आंख में धूल झोंककर मुंह में लगाम लगा दी जाती है या भ्रष्ट अधिकारी को निलम्बन कर सजा के बदले सुरक्षा कर दी जाती है।

दरअसल पुलिस में खामियां भर्ती के समय ही शुरू हो जाती है। जिस व्यक्ति का खानदानी इतिहास अन्याय का विरोध करने का रहा ही नहीं है, जिसका खानदानी इतिहास रहा है घूंसखोरी, कमीशनखोरी, अपराधियों के भय से और बंदूक की गड़गड़ाहट से पेशाब हो जाता है वह भी स्कूल से डिग्री. लेकर पुलिस में भर्ती हो जाता है तथा पुलिस की वर्दी पहनकर मैदान में खड़ा हो जाता है। वह सिर्फ गरीबों पर वर्दी का रोब गाठेगा? क्या चूहा, नेवला का खोल पहनकर सांप को पकड़ सकता है। बाघ को पकड़ने के लिए देश की सभी बकरियों को संवैधानिक अधिकार मिल जाये तब भी बाघ के सामने बकरी खड़ी नहीं हो सकती है? इसी तरह गाय का खोल बैल को पहना दिया जायेगा तो क्या बैल दूध दे सकता है? क्योंकि बैल अक्षम है। बैल को कितना भी ट्रेनिंग दे दें परन्तु घोड़े की तरह सवारी नहीं कर सकती है। स्थानांतरण कौन सी सजा है यह आम जनता की समझ से बाहर है। जनता सिर्फ यह जानती है कि किसी भी मशीन का कोई भी पूर्जा खराब हो गया है या काम करने लायक नहीं है तो वह पार्ट-पूर्जा दूसरे मशीन में भी काम नहीं करेगा तथा खराब पूर्जा दूसरे एवं अच्छे मशीन को भी खराब कर देगा। अपराधी चाहे कितना भी ऊंचे पद पर हो या कितना भी धनी क्यों न हो, स्वाभिमानी पुलिस अपराधियों पर वैसे ही आक्रमण करती है जैसे नेवला सांप पर कर देती है। जिस पुलिस का खानदानी इतिहास अन्याय का विरोध करने का रहा ही नहीं है, वैसे पुलिस को खूंखार अपराधी, राजनीति अपराधी से सामना हो जाता है तो पुलिस की स्थिति वैसे हो जाती है जैसे बिल्ली के सामने चूहे की होती है।

पुलिस ही एक ऐसा विभाग है जो किसी भी तरह के भ्रष्टाचार को कानूनी रूप से सुधार सकता है एवं कारवाई कर सकता है। आंगनबाड़ी केन्द्र, जन वितरण प्रणाली में लूट-खसोट, विकास योजनाओं में गबन, अस्पताल, डॉक्टर एवं स्कूल मं शिक्षक की अनुपस्थिति आदि में पुलिस प्राथमिकी दर्ज कर गिरफ्तार कर

सकती है। परन्तु अपवाद में ही मिलेगा। एक उदाहरण है पटना जिला के फतुहा प्रखंड अंतर्गत सुडीहा ग्राम के प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक को निरंतर अनुपस्थित रहने के आरोप में शिक्षक सकलदेव पांडेय को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। कोई साधारण व्यक्ति पुलिस के दरवाजे पर जाकर ऐसी शिकायत करे कि शिक्षक अनुपस्थित रहते हुए फर्जी हाजरी तैयार करता है, तो पता चल जायेगा कि पुलिस क्या जवाब देती है। यदि उसी पुलिस को यही शिकायत एस. डी. ओ., डी. एम., मंत्री या न्यायालय तक पहुच-पैरवी वाला व्यक्ति शिकायत करे तो पुलिस शिक्षक को पकड़कर तुरंत जेल भेज देगी। पुलिस अपराधी को गिरफ्तार करती है परन्तु अपराध में इस्तेमाल होनेवाला हथियार बरामद करने का प्रयास बिल्कुल नहीं करती है। यदि पुलिस चाहे तो अपराध में इस्तेमाल होने वाले हथियारों के उत्पादनकर्ता तक पहुंचकर उसे गिरफ्तार कर सकती है। कानून के अनुसार अपराधी को गिरफ्तारी के साथ हथियार बरामद करने का प्रावधान भी है। यदि हथियार बराबद हो जाता है तो अपराधी से यह भी जानकारी लिया जा सकता है कि अपराधी हथियार खरीदा कहां से। जिस व्यक्ति से खरीदा है उस व्यक्ति को भी गिरफ्तार कर सख्ती पूर्वक पूछ-ताछ किया जा सकता है कि हथियार तुमने कहां से खरीदा है। इसी प्रकार पूछ-ताछ कर हथियार के कारखाना तक पहुंचकर गिरफ्तार कर सकता है। ऐसा कर अपराध में कमी लायी जा सकती है। परन्तु वैसा करने के लिए राजनीतिज्ञों को आगे आने की जरूरत है। राजनीति में आरक्षण के बल पर आनेवाले तथा ढ़ोंगी नेताओं से यह काम संभव नहीं है बल्कि जन समस्याओं की रगड़ से पैदा होनेवाले राजनीति से ही बदलाव हो सकता है। आज जिस तरह सीरीज बल्ब फैक्ट्री में निर्माण होती है उसी तरह नेताओं की उपज दर्जी के यहां तैयार होती है। जिस प्रकार सीरिज बल्ब से रौशनी नहीं मिलती है सिर्फ शोभा बढ़ाती है उसी तरह दर्जी के यहां तैयार नेता सीरिज बल्ब की तरह शोभा बढ़ाने के काम आते हैं। देश में बदलाव नहीं कर सकते हैं। बिजली के लिए हाहाकार मची है, विकास योजनाओं में लूट-खसोट हो रही है। हत्या-अपहरण से चित्कार मची हुई है बावजूद सभी नेता खामोश हैं। ●

मगही फिल्मों के लिए स्वर्णिम काल का आगाज लिए : विधना नाच नचावे

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

बिहार के क्षेत्रीय भाषाओ मे शामिल है मगही, भोजपुरी, मैथली के साथ ही अंगिका, बज्जिका यानि कुल पांच भाषा के लोग अपनी मातृभाषा का उपयोग किया करते है। इन भाषाओं में बनने वाली फिल्मों में सबसे अहम भूमिका निभाती रही है, भोजपुरी सिनेमा। इस भाषा मे फिल्म बनाने वाले एक नहीं, अनेक लोग अपने अपने हिसाब से कमाई का जरिया बनाते हुए नित्य प्रति पर्दे पर नजर आते है और अश्लीलता के बल बूते पर समाज के युवा वर्ग को आकर्षित करने मे सफल होते हैं। फिल्म के मामले मे मगही –मैथली के लिए किया गया काम बस नाम भर का रह गया है। इनकी गिनती उंगिलयो से भी कम है? मगही भाषा की फिल्म 1960 के दशक मे सोच मे आयी जब फिल्मे लोगों के लिए काफी आकर्षण का केंद्र बन गया था। इसके बाद मगही में वर्ष 1964 में भईया और 1965 में 'मोर मन मितवा' का निर्माण हुआ। वैसै मैथली में बनी फिल्म कन्यादान भी अमूल्य धरोहर के रूप में जाना जाता है और अंगिका –बज्जिका भाषी फिल्मों के शुरुआती इतिहास से जुड़ाव की कोशिशे भी हो सकती है? पर वर्तमान युग की भाषाई सामाजिक फिल्म का निर्माण कार्य शुरू किया है –प्रभात वर्मा ने अपनी आत्म शक्ति से मगही भाषा को स्थापित करने का संकल्प लेकर, इस फिल्म के निर्माण कार्य मे अपने जीवन की सारी कमाई लगा कर। फिल्म बनाई–'विधना नाच नचाबे' जिसकी कथा, गीत भी प्रभात वर्मा की कलम से लिखी गई है । इस फिल्म के निर्माता निर्देशक भी प्रभात वर्मा ही है। भले ही इसके कुछ दृश्यों को फिल्माने में बिहार के चर्चित भोजपुरी निर्देशक संजय सिंहा का योगदान रहा है? पर पूरी तरह से इसे संकल्प लेकर हर संकट का सामना करके धरातल पर उतारा है–फिल्म के निर्माता निर्देशक प्रभात वर्मा ने, जिनकी यह फिल्म पहचान लिए? इस फिल्म

प्रभात वर्मा का संक्षिप्त परिचय

प्रभात वर्मा का जन्म नालन्दा जिले के ककैला गांव मे हुआ है,जो वादको पटनासिटी के निवासी वने। श्री वर्मा एक सफल साहित्यकार, पत्रकार, अधिवक्ता तो है ही, ये रेडियो के स्वीकृत नाटककार 1984 से रहे। इन्होने कई नाटको मे भी अमूल्य योगदान दिया है। समाजिक गतिविधियो में भी बढ़–चढ़ कर हिस्सेदारी करते हुए दिन दुखियों के लिए काम करने में लगे रहते है। श्री वर्मा रेलवे हाकरों के लिए भी संघर्ष कर उन्हे समस्याओं से निजात दिलाने का काम किया है। श्री वर्मा एक उच्च कोटी के पत्रकार तो रहे ही है, जिन्होंने ने की पत्र–पत्रिकाओं के साथ ही अनेक स्मारिकाओं के संपादन का दायित्व निभाया है। प्रभात वर्मा की पहचान कलम के सिपाही के रूप मे रहा है, जो बुराई को उजागर करने की कोशिश करते हुए दस्तक प्रभात समाचार–पत्र के संपादक श्री प्रभात वर्मा ने अपनी साहित्य कला क्षमता का भरपूर प्रदर्शन किया और मगही भाषा को स्थापित करने की कोशिश मे सदैव लगे हुए है। श्री वर्मा ने अपनी साहित्य कला का माध्यम मगही भाषा को बनाकर 1980 से लेकर अब तक कुल दर्जनो पुस्तक की है। जिनमे विधाता के विधान, करमलेख, तमाशबीन, कलमुही, लिलकहवा, बिहार के ई अनमोल रत्न, बिधना नाच नचावे जैसी कृत्तियां प्रमुख है। इसके पहले 1990 के दशक में ही श्री वर्मा ने टेली फिल्म साधना, तन्हाई बनाकर दर्शको के समक्ष पेश किया था। श्री वर्मा 35 वर्षो से अपने साहित्य कला हुनर को आकाशवाणी और दूरदर्शन के माध्यम से भी प्रकाशित–प्रचारित किया और कर रहे हैं। श्री वर्मा ने अपनी मातृभाषा मगही भाषा को स्थापित करने का भरपूर प्रयास किया है और पांच दशक से भी ज्यादा समय तक कुंद मगही भाषा की समाजिक फिल्म–विधना नाच नचावे जैसी कृत्तियां दर्शको के समक्ष पेश किया है। इतना ही नहीं मगही फिल्म विधना नाच नचावे के कथाकार गीतकार निर्माता निर्देशक भी प्रभात वर्मा ही हैं।

के गाने मगही भाषा की सामाजिकता से जुड़ा हुआ आधुनिकता के साथ ग्राहय है।

मगही फिल्मों के शुरुआती इतिहास से जुड़ा आधुनिक काल की सामाजिक फिल्म 'विधना नाच नचावे' भारतीय फिल्मों के शुरुआती दौर मे वर्ष 1961 मे मगध की भाषा मगही को महान निर्देशक सत्यजीत राय ने अपनी बंगला फिल्म 'अभिजान' में ख्यात नायिका वहीदा रहमान को बिहार के एक गाँव की लड़की के रूप में उनसे बिहार के चर्चित निर्देशक गिरीश रंजन से जो बिहारशरीफ के निवासी थे, पटकथा लिखवा कर पेश किया था और यही से मगही भाषा ने फिल्मी पर्दे पर पर्दापरण किया।

फिर इस बीच 1962 मे भोजपुरी फिल्म 'गंगा मैया तोहे पियरे चढ़इवो' की सफलता से उत्साहित होकर मगही भाषा की कुन्दन धारा फुट पड़ी और 1964 में मगही भाषा की समाजिक फिल्म का निर्माण निर्माता पीएन प्रसाद की फिल्म मगही भाषा मे 'भइया' के प्रदर्शन से शुरू हुई। 'भइया' फिल्म की कहानी दो भाई के साथ त्याग और बलिदान के साथ बड़े भाई के मंगेतर के प्रति छोटे भाई का प्रेम त्रिकोण पर आधारित था। जिसकी कथा तब के सबसे ज्यादा भाषा में फिल्म बनाने वाले फणी मजूमदार ने लिखी थी, जिन्होंने ही इस फिल्म का निर्देशन भी किया था। पटकथा नवेन्दू घोष और सम्वाद था ब्रजकिशोर का। गीतकार प्रेम धवन और विन्धवासनी देवी संगीतकार चित्रगुप्त थे। गायक-गायिका मोहम्मद रफी, लता मंगेशकर, आशा भोंसले, उषा मंगेशकर थे। इस फिल्म के मुख्य कलाकारों में गोपाल नायक और नायिका विजया चौधरी के साथ तरूण वोस, लता सिन्हा, रामायण तिवारी, पद्मा खन्ना, अचला सचदेव, भगवान सिन्हा, ब्रजकिशोर, सुन्दर और हेलन थी। इस फिल्म का प्रदर्शन के बीणा सिनेमा हॉल में किया गया था। इसके बाद मगही में वर्ष 1965 मे 'मगध फिल्म्स' के बैनर तले बनी मगही फिल्म 'मोरे मन मितवा' के कथा पटकथा सम्वाद और निर्देशन गिरीश रंजन ने दिया था। इस फिल्म के गाने मगही कवि रचनाकार सोहसराय निवासी स्कूल शिक्षक हरिश्चन्द्र प्रियदर्शी ने लिखी थी जिसके मुखड़े थे 'कुसुम रंग लहंगा मंगा द पियवा हो', मोरे मन मितवा, सुना द उ गितवा और 'गजल'-मेरे ऑसूओ पर न मुस्करा, जिसे अपने-अपने स्वर से संवारा था, मोहम्मद रफी, आशा भोंसले, मुकेश और सुमन कल्याणपुर के साथ मुबारक बेगम ने, जो मगध क्षेत्र के गांव-गांव में लोगो के कंढाहार बन गया था।

'मोरे मन मितवा' के नायक सुधीर और नायिका नाज थी। इस फिल्म के अन्य कलाकारों में सुजीत कुमार, बेला वोस, हेलन, छाया देवी, रवि घोष, सत्यवान सिन्हा, रामानंद, सविता चटर्जी, पहाड़ी संन्याल और सिद्धू ने अपने अभिनय कला का प्रदर्शन किया था। जिसे 1965 में ही आयोजित भोजपुरी फिल्म फेस्टिवल मे निर्णायक मंडल के अध्यक्ष प्रख्यात निर्देशक मृणाल सेन इस फिल्म के निर्देशक गिरीश रंजन समेत पांच पुरस्कारों से नवाजा था । इस फिल्म के बनने के बाद क्षेत्रीय फिल्मों के शुरुआती दौर अनेक फिल्म की कहानी तैयार हो गए, पर असल में बाधा खर्चा उठाने की क्षमता की कमी आड़े आ गया और फिर उत्साह ठंडा पर गया। अब पांच दशक से भी ज्यादा समय के बाद मातृभाषा मगही के प्रति अपने लगाव, मगही के विकास को समर्पित, संकल्पित मगही भाषा के रचनाकार, अधिवक्ता, पत्रकार, दस्तक प्रभात समाचार-पत्र के संपादक श्री प्रभात वर्मा ने अपने जीवन भर की जमा-पूंजी लगाकर 'विधना नाच नचावे' के निर्माण का संकल्प उठाया और इसे पूरा कर दिया है।

प्रोडक्शन के वैनर तले निर्मित किया गया है । फिल्म का नाम - 'विधना नाच नचाबे' है । इस फिल्म के निर्माता, निर्देशक, कथाकार, गीतकार प्रभात वर्मा पटकथा- संवाद सहयोगी मुकेश चित्रांश है। फिल्म निर्माण के सहयोगी रहे है भोजपुरी फिल्म के चर्चित निदेशक संजय सिन्हा। इस फिल्म को संगीत से सजाया है मुम्बई के रितेश मिश्रा और पटनासिटी के पप्पू जिमी गुप्ता ने। फिल्म की कथा एक गाँव की अनाथ बच्ची के जीवन से जुड़ी हुई है। जो अपने माता-पिता, चाचा-चाची के बाद एक साधु के साथ जीवन जीते समाजिक व्यवस्था की शिकार होती है और साधु की मृत्यु के बाद समाज के एक ऐसे संभ्रात व्यक्ति के शरण मे जाती है,

जो उसे अपने घर के लोगो मे स्थान देने के साथ बेटी-बहू बनाकर उसे सहारे अपनी जिंदगी को चलाने के साथ उसे सामाजिक धारा से जोड़ने मे सफल होते है। फिल्म में सात गाने है, जिनमें टाइटिल सांग के अलावे छठ , विवाह, आइटम, वोट, निर्गुण, प्रेम गीत में प्रभात वर्मा ने अपनी साहित्य कला क्षमता का भरपूर प्रदर्शन करते हुए जो गीत लिखे हैं वह गले मे कंढाहार बनने की क्षमता लिये ग्राहय है। इस फिल्म के मुख्य कलाकारो में प्रभात वर्मा के साथ मुकेश चित्रंश, अंशिका वर्मा, अनुप लाल त्रृषी, सरवीन कुमार, ब्रजेश कुमार, अजीतेश, प्रियंका सिन्हा, एश्वर्या झा, डॉक्टर सविता मिश्र 'मागधी' पूजा वर्मा, लालबहादुर प्रसाद, ममता प्रमुख है। इस फिल्म मे जीवन के हर पहलू को लेकर एक बार फिर मगही भाषा की समाजिक फिल्म का प्रदर्शन किया जाएगा, जो मगध क्षेत्र के गांव से लेकर तमाम तरह के लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए तैयार है। फिल्म का प्रदर्शन किया जाना तय किया जा चुका है।

मगही फिल्मों के लिए स्वर्णिम काल का प्रतीक 'विधना नाच नचाबे'। ●

आप भी बनें पत्रकार

भ्रष्टाचार एवं भ्रष्टों के खिलाफ बेझिझक कलम उठाईये। बेरोजगारी के अभिशाप को मिटायें। देश के सभी प्रदेश की राजधानी और देश के सभी प्रदेश के शहरों में संवाददाता की आवश्यकता है। कर्मचारी नहीं हिस्सेदार बने। जितना श्रम उतना पारिश्रमिक पायें।

सम्पर्क करें:- 9431073769/9955077308/9308727077

भ्रष्ट थानाध्यक्ष मनोज कुमार के आतंक से परेशान जनता

आखिर इस भ्रष्ट थानाध्यक्ष पर क्यो मेहरवान है एस.पी.

● अरविन्द मिश्र

पंक्षि कहता है कि चमन बदला है, धरा कहती है कि गगन बदला है, मगर श्मशान की खामोशियॉ कहती है कि ना चमन बदला है, और ना गगन बदला है, मुर्दा वही है सिर्फ कफन बदला है।''

एक तरफ सरकार और वरीय प्रशासन पुलिस–पब्लिक मित्रता की बात करती है जनता का सेवक और रखवाला है पुलिस, लेकिन सुशासन की सरकार में मनोज कुमार जैसे भ्रष्ट और आतंक का प्रयाय थानाध्यक्ष से परेशान नारदीगंज की जनता कहती है की शांति के रखवाले बर्दी के आड़ जब जनता के शोषण और दोहन करे, न्याय मॉगने पर गाली गलौज और लाठी बरसाये, अपराधियो के पकड़ने की जगह उसे महिमामंडित करे, और वरीय पदाधिकारियों से न्याय मॉगने पर न्याय नही मिलने से जनता का भी सब्र का बांध टुट जाता है, और मरता क्या नही करता है, और वहीं हुआ, नारदीगंज पुलिस की एकतरफा कार्रवाई से नाराज ननौरा पंचायत की बुच्ची गांव के ग्रामीणों ने नारदीगंज थाना व सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र को कुरूक्षेत्र का मैदान बना दिया। घटना 18 फरवरी 2018 की दोपहर में घटी है। यह घटना लोगों को हिलाकर रख दिया। इस दौरान आक्रोशित लोगो से निपटने के लिए पुलिस की गुण्डागर्दी भी देखते बना। पुलिस ने भी जमकर लाठी चटकाई । कई लोग चोटिल भी हुए। पुलिस की कहर में महिलाएं किशोर बच्चे के साथ विकलांग व्यक्ति भी निशाने पर रहें। वही आक्रोशित व नाराज लोगो ने भी जमकर पथराव किया, जिसमें चार पुलिसकर्मी भी जख्मी हो गये। इस दौरान पुलिस ने सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र से लेकर नारदीगंज थाना कुरूक्षेत्र का मैदान बना रहा। यह घटना नारदीगंज थाना के लिए एक यादगार बनकर रह गया। यह स्थिति तब हुई जब ग्रामीणों को लगा कि पुलिस विपक्षी को साथ दे रही है,और पुलिस की एकतरफा कार्रवाई से नाराज होकर लोग सड़क पर उतर आये। और बुच्ची गाव के ग्रामीणों ने 18 फरवरी को नारदीगंज थाना से लेकर सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र को रणक्षेत्र बना दिया। सैकड़ो की तायदाद मे पहुंचे महिलाएं व पुरूषों ने थाने में पहुंचकर जमकर रोडबाजी किया। इस दौरान उपद्रवकारियों ने सरकारी वाहनो समेत परिसर में लगाये गये गमले,कुर्सी,शीशे समेत अन्य समानों को क्षतिग्रस्त कर दिया। मौके पर उपद्रवकारियों ने सरकारी दो वाहन के साथ चार बाइक पर हमला बोलकर उसका क्षतिग्रस्त किया।

मनोज कुमार
थाना प्रभारी, नारदीगंज

नारदीगंज थाना में उपद्रवकारियो द्वारा किया गया कुकृत्य ऐतिहासिक बन गया। इस घटना को लेकर पुलिस भी सहम गये। पथराव व रोड़ेबाजी में चार पुलिसकर्मी को भी चोंट लगी। उसके उपरांत आक्रोशित लोग राजगीर बोधगया राजमार्ग 82 पर नारदीगंज थाना परिसर के समीप सड़क जाम कर दिया। आक्रोशित लोग ने थानाध्यक्ष मनोज कुमार व इंन्सपेक्टर राजकुमार मुर्दाबाद के नारे जमकर लगाये। बुलंद आवाज में नारा गुंजते रहे। भ्रष्ट पुलिस प्रशासन मुर्दाबाद,मुर्दाबाद। थानाध्यक्ष व इंन्सपेक्टर की तबादले के साथ उनपर कार्रवाई की मांग पर लोग अड़े रहें। घंटे तक सड़क जाम रहा। इस दौरान सड़क पर वाहनों की लम्बी कतार बन गयी। घटना की सूचना मिलने पर हिसुआ सर्किल इंन्सपेक्टर राजकुमार दल–बल के साथ पहुंचे और आक्रोशित लोगो को समझाने बुझाने मे लग गये। उन्होने आरोपित पर कार्रवाई करने का आश्वासन दिया, तब कहीं जाकर मामला शांत हुआ, उसके बाद वाहन का परिचालन शुरू हुआ। उसके उपरांत हिसुआ पुलिस व नरहट थानाध्यक्ष धर्मेन्द्र कुमार भी पुलिस बल के साथ पहुंचकर स्थिति का जायजा लिया। फिलहाल स्थिति जहां तनावपूर्ण बनी हुई है, वही नियंत्रित भी बताया जा रहा है । बुच्ची गांव के ग्रामीण तनोज कुमार समेत अन्य ग्रामीणो का आरोप है कि यह घटना थानाध्यक्ष व पुलिस प्रशासन के मिलीभगत के कारण हुआ है । मेरे चचेरे भाई संजीत कुमार को गोत्रायण गांव के लोग मारपीट किया था, पीएमसीएम मे इलाजरत है। थाने मे मामला भी दर्ज हुआ था। जिसका कांड संख्या 25/18 दर्ज है। उस समय आरोपी को पुलिस ने

गिरफ्तार कर थाना लाया था,बाद मे उसे छोड़ दिया। पुलिस ने आजतक किसी भी अपराधी को गिरफ्तार नहीं किया है। जिस कारण 18 फरवरी को राजगीर से सब्जी बेचकर लौट रहे मेरे दो परिवार के साथ बुरी तरह मारपीट किया है। मेरे घर में बेटी की शादी है। घटना के पीछे बुच्ची गांव व गोत्रायण गांव मे पूराने विवाद बर्चस्व को लेकर बताया जा रहा है। घटना 18 फरवरी 2018 को 11 बजे के आसपास में घटी। बताया जाता है कि बुच्ची गांव के लाल बाबू साव के पुत्र सुरेन्द्र साव के अलावे जगदीश साव के पुत्र गुणी साव बस से राजगीर से सब्जी बेचकर अपने गांव लौट रहे थें,इसी बीच गोत्रायण गांव के आजाद कुमार व अन्ये लोग बोलोरो पर सवार थे। उनलोग राजगीर के झूला मोड़ के समीप बस को रूकबा लिया,और सुरेन्द्र साव व गुणी साव के साथ जमकर मारपीट किया। जिससे बुरी तरह से दोनो ज़ख्मी हो गये। जख्मी अवस्था में दोनो को इलाज के लिए नारदीगंज स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में दाखिला कराया। जहां बुच्ची गांव के पीडित परिजनो समेत काफी तायदाद मे पहुचे महिला व पुरूषो ने पुलिस पर एकतरफा मदद करने के आरोप मे नोंक झोक हो गया था। पुलिस अपना बचाव के लिए थाना मे जाकर शरण लिया। आक्रोशित लोगो का गुस्सा थम नहीं पाया और सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र नारदीगंज व नारदीगंज थाना परिसर रणक्षेत्र मे बदल गया था। स्थिति यह बनी की अंत में आक्रोशित ग्रामीणो ने थाना परिसर में भी पहुंचकर जमकर रोड़ेबाजी की थी। जिसमे हवलदार समेत चार पुलिस कर्मी जख्मी हो गये थे। सरकारी बाइन समेत अन्य समानो को क्षतिग्रस्त पहुचाया था। बाद मे स्थिति को नियंत्रित करने के लिए हिसुआ व नरहट की पुलिस पहुचकर स्थिति को संभाला था। इस दौरान पुलिस ने भी लाठी चार्ज किया था,जिसमे कई लोग जख्मी होने की सूचना मिली । केन्द्र मे कार्यरत चिकित्सक ने इलाज के उपरांत बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल नवादा भेज दिया। इस घटना की जानकारी मिलते ही बुच्ची गांव के सैकड़ो लोग थाना पहुचकर पुलिस प्रशासन से न्याय की गुहार लगाया। लेकिन पुलिस ने स्थिति को गंभीरता से नहीं लिया,तब नाराज लोगो ने थाना परिसर में तोडफोड़ कर बबाल मचाना शुरू कर दिया। असमाजिक तत्वों ने इस दौरान जमकर उत्पात मचाया जिसमें हवलदार रामविलाश उराबं,सैप जवान आलोक रंजन भी चोटिल हो गये। इसके अलावे सैप जवान में विक्रमादित्य लकड़ा व सुनील कुमार को भी हल्की चोंट लगी। इस दौरान कई लोगों को पुलिस हिरासत मे लेकर पूछताछ कर रही है। थानाध्यक्ष मनोज कुमार ने बताया पुलिस आरोपित के विरूद्ध कार्रवाई कर रही है, आश्वासन भी दिया गया ,`वावजूद असमाजिक तत्वों ने सरकारी वाहनो समेत अन्य समानो की क्षतिग्रस्त किया है,वैसे मामले की तहकीकात की जा रही है। घटना के पांचवे दिन 22 फरवरी 2018 को भाकपा माले के प्रखंड

सचिव सावित्री देवी अपने कार्यकर्ताओं के साथ बुच्ची गांव पहुंचकर पीडित परिजनो सें मिलकर स्थिति की जानकारी लिया। उसके बाद ग्रामीणो व पीडित परिजनों को भाकपा माले के नेता ने न्याय का भरोसा दिलाया। ग्रमीणो ने बताया कि घटना के पांचवे दिन बीत रहा है,लेकिन किसी भी पक्ष से प्राथमिकी दर्ज नही ंहो पाया गया। फिलहाल बुच्ची गांव के ग्रामीण व पीडित परिजन दशहत मे जी रहे है। हमसब ग्रामीण व पीड़ित परिजनों को पुलिस प्रशासन के साथ साथ दबंगो का डर सता रहा है। स्थिति यह है कि महिलाएं नारदीगंज बाजार जाकर रोजमर्रे का कार्य निपटा रही है। वही स्कूली छात्र व रेलवे की परीक्षा देने जाने बाले युवक भी आतांकित है । रेलवे परीक्षार्थी दीपक कुमार,सोंनू कुमार,प्रतिक राज,चंदन कुमार समेत अन्य ग्रामीण युवक ने बताया कि पुलिस व दबंगो का डर है। रेलवे की परीक्षा भी है। कैसे जायेगे परीक्षा देने,बहुत बडा सवाल है। ग्रामीण राधे प्रसाद ,अरूण साव,रिंकू देवी समेत अन्य ने बताया कि 24 फरवरी को अरूण साव की बेटी नीतू कुमारी की शादी है। शादी मे भी डर बना हुआ है। शादी का समान लाने के लिए बाजार कैसे जायेगे। 18 फरवरी को भी गांव में शादी थी। उस दिन की घटना नारदीगंज बाजार मे समान खरीदने गये लोगो को पुलिस ने गांव पूछकर मारपीट किया था। जिसमे कई लोग जख्मी हो गये थे। इधर पुलिस अभी तक बुच्ची गांव के जख्मी गुणी साव व सुरेन्द्र साव के फर्द व्यान आने का इंतजार रही है। विरोधियो व दबंगो की बेहरमी मार से दोनो जख्मी पटना स्थित पीएमसीएम में जीवन व मौत से जुझ रहा है। थानाध्यक्ष मनोज कुमार ने कहा दोषियो के खिलाफ विधि सम्मत कार्रवाई की जा रही थी, वावजूद बुच्ची गांव के ग्रामीणो ने इस तरह के घटना का अंजाम दिया है वैसे पुलिस का मानना है कि स्थिति नियंत्रित में है।

इसी कड़ी में भारतीय कम्युनिष्ट पार्टी माले के सचिव सावित्री देवी अपने कार्यकर्ताओं के साथ बच्ची गांव पहुंचकर स्थिति का जायजा लिया,और पीडित परिजनो से मिलकर घटना की जानकारी लिया। उसके उपरांत ग्रामीणो को न्याय दिलाने का भरोसा दिलाया। कहा कि इस घटना मे एसपी समेत अन्य वरीय पदाधिकारी से मिलकर थानेदार का तबादला कराया जायेगा। घटना में शामिल व्यक्तियो पर कार्रवाई की मांग जिला प्रशासन से किया जायेगा। इसके लिए पार्टी डेरा डालो समेत अन्य कार्यक्रम प्रखंड,जिला व प्रदेश स्तर तक चलाकर आन्दोलन किया जायेगा। इस दौरान बुच्ची गांव जख्मी संजीत कुमार समेत अन्य ग्रामीणो ने भाकपा माले सचिव व अन्य पार्टी कार्यकर्ताओं के समक्ष कहा कि 31 जनवरी 2018 को मेरे साथ दबंगो ने मारपीट किया था। जिसमें गोत्रायण

निवासी गौतम कुमार,आजाद कुमार समेत अन्य नौ लोगो को नामजद अभियुक्त के अलावे पांच छह अज्ञात लोगो के विरूद्ध मामला दर्ज हुआ था,जिसका कांड संख्या 25/2018 दर्ज है। उस घटना मे शामिल दबंगो व विरोधियो ने ही 18 फरवरी 2018 को राजगीर से सब्जी बेचकर लौट रहे बुच्ची गांव के गुणी साव व सुरेन्द्र साव को बेहरमी से मारपीट किया,जो फिलहाल पीएमसीएम पटना में जीवन मौत से जुझ रहा है । पुलिस ने एकतरफा कार्रवाई की। जिसके कारण आज इतनी बडी घटना घटी। दबंगो के प्रति पुलिस मेहरबान बनी हुई है। घटना के पीछे पुरानी रंजिश व बर्चस्व के कारण आज इतनी बड़ी घटना घटी। लोगो का मानना है कि यह घटना बडी घटना होने की संकेत बता दे रही। पुलिस प्रशासन व समाजिक स्तर पर दोनो पक्षों को जोड़ने के लिए सेतू काम नहीं हुआ, तो आखिर इन दोनो गुट मे खूनी खेल जारी रहने की सम्भावना बनी हुई है । इसी बीच भारतीय कम्युनिष्ट पार्टी, माले के कार्यकर्ताओं ने नारदीगंज थानाध्यक्ष मनोज कुमार को बर्खास्त करने,बुच्ची गांव के पीडित परिजनों को न्याय दिलाने समेत सात सुत्री मांगो को लेकर नारदीगंज थाना के गेट के समक्ष 27 फरवरी 2018 को घरना प्रदर्शन कियां । कार्यक्रम का नेतृत्व भाकपा माले प्रखंड सचिव सावित्री देवी ने किया। कार्यक्रम तकरीबन 12 बजकर 30 मिनट से शुरू हुई,और कार्यकर्ता घंटो थाना गेट के समीप पुलिस प्रशासन के खिलाफ जमकर नारेबाजी किया। इस दौरान स्थानीय पुलिस ने चौक चौबंद व्यवस्था की थी। थाना गेट के मुख्यद्धार जहां बंद था,वही पुलिस हर वक्त चौकस रही। इस दौरान बीडीओ ब्रजेश कुमार दीपक,हिसुआ सर्किल इंस्पेक्टर राजकुमार के अलावे एसआई विजय राय,एएसआइ अंजनी कुमार सिह, एएसआई फारूक अंसारी दल–बल के साथ पहुंचकर प्रदर्शनकारियो को समझाने बुझाने मे जूट गये। महिला पुलिस भी मुस्तैद रही। प्रदर्शनकारियो को समझाते हुए बीडीओ ब्रजेश कुमार दीपक ने कहा आप सबो की मांगो की जानकारी वरीय पदाधिकारी को अवगत कराया जायेगा तथा विधि सम्मत कार्रवाई करने का भरोसा दिलाया। इसी बीच प्रदर्शन कर रहे भाकपा माले के कार्यकर्ताओ की जानकारी मिलने पर सदर एसडीओ राजेश कुमार भी घरना प्रदर्शन स्थल पर पहुंचे। और थाना के मुख्य द्धार खुलवाकर सभी कार्यकर्ताओ को लेकर थाना परिसर पहुचे। और उनलोगों से वार्तालाप किया। इस दौरान सदर एसडीओ राजेश कुमार ने मांगो सें संबंधित हरऐक बिन्दुओं पर गंभीरतापूर्वक विचार विमर्श किया। कहा कि मामले की सत्यता की जाचं की जायेगी। दोषी पाये जाने पर विधि सम्मत कार्रवाई करने का आश्वासन दिया। तब कही जाकर मामला शांत हुआ। इस दौरान भाकपा माले सचिव सावित्री देवी ने कहा नारदीगंज थाना प्रभारी मनोज कुमार के शासनकाल में जुल्म,अत्याचार,डैकती वलत्कार, हत्या, अपहरण की बेहताशा वृद्धि हुई है। पुलिस प्रशासन अपराधियों को संरक्षण देने में भरपूर मदद कर रही है। गरीबो को फर्जी मुकदमा मे उलझाकर थाना प्रभारी के माध्यम से मोटी रकम वसूली जाती है। जिसका उदाहरण रामे, फाजिलपुर, बुच्ची आदि अनेक गाव है। पंडपा गांव में एक ही घर मे चार घरो मे डैकती होता है। लेकिन कोई कार्रवाई नहीं की जाती है। सीतारामपुर गांव के संजय मांझी के पुत्र रवि कुमार को लापता हुए काफी दिन बीत गया,लेकिन पुलिस खोजन मे विफल रही। वही गरीबो के उपर हो रहे अत्याचार व जुल्म को उजागर करने बाले पत्रकार को भी बख्शा नहीं जाता है, साथ ही सात सूत्री मांगो का स्मार पत्र एसडीओ व बीडीओ को दियां । कहा गया कि बुच्ची गांव के लोगो पर फर्जी मुकदमा 36/18 को वापस लेने,बुच्ची कांड के नामजद अभियुक्तो को गिरफ्तार करने, नारदीगंज कांड संख्या 48 व 157 के फर्जी मुकदमा को वापस लेने,पंडपा गांव मे हुए डैकती में शामिल अभियुक्तो को गिरफ्तार करने, सीतारामपुर गांव के संजय मांझी के पुत्र रवि कुमार को बरामद करने,नारदीगंज थाना के तमाम गरीबो को गारंटी देने के अलावे नारदीगंज थाना प्रभारी मनोज कुमार को बर्खास्त करने की मांग को रखा। कहा कि जबतक मांग पूरी नहीं होती तबतक आन्दोलन जारी रहेगा। मौके पर दिलीप कुमार,सुदाम देवी, जगदीश चौहान,बेदमियां देवी,सरस्वती देवी, दरोगी चौहान, सरयुग चौहान समेत अन्य कार्यकर्ता मौजूद रहे। साथ ही यह भी बता दें की नारदीगंज के थाना प्रभारी मनोज कुमार को दुबारा नारदीगंज के प्रभारी बनने से इनका मनोबल बढ़ा और नारदीगंज की जनता कह रही है कि मनोज कुमार जनता के रक्षक नही वल्कि भक्षक है इनके कार्यकाल मे अपराधियो का मनोबल बढ़ा है, साथ ही थाना परिसर दलालो का और भ्रष्टाचारो का अड्डा बन चुका है। आखिर कौन है रक्षक मनोज कुमार थानाध्यक्ष का, जबकि दर्जनो आवेदन आरक्षी अधीक्षक, मानवाधिकार आयोग, डी0 जी0 पी0, को देने के बाद भी कोई कार्रवाई नही होने से परेशान और दुखी है नारदीगंज की जनता, और दबे जुवान से बुद्धीजीवियों भी कहते है कि दलित एक्ट की धमकी से सच भी कहने की हिम्मत नही हैं, आखिर ऐसे भ्रष्ट और आतंक के पर्याय से मुक्ति नारदीगंज जनता को मिलेगा। ●

आप भी बनें पत्रकार

भ्रष्टाचार एवं भ्रष्टों के खिलाफ बेझिझक कलम उठाईये। बेरोजगारी के अभिशाप को मिटायें। देश के सभी प्रदेश की राजधानी और देश के सभी प्रदेश के शहरों में संवाददाता की आवश्यकता है। कर्मचारी नहीं हिस्सेदार बने। जितना श्रम उतना पारिश्रमिक पायें।

सम्पर्क करें:- 9431073769/9955077308/9308727077

विद्यालय का वार्षिकोत्सव धूमधाम से संपन्न

● मिथिलेश कुमार/मनीष कमलीया

बच्चे देश के भविष्य है और बच्चों के शैक्षणिक भविष्य को सवॉरने की जिम्मेबारी विधालय के शिक्षको के कंधो पर होती है। विधालय के ऑगंन में बच्चों के शैक्षणिक, सामाजिक, नैतिक गुणों का समावेष एक अच्छे वातावरण में होता है। उक्त बातें विवेकानन्द पब्लिक स्कुल के वार्षिकोत्सव कार्यक्रम समारोह को संबोधित करते हुये आगत अतिथियों ने कही। कार्यक्रम में उन्होनें कहा कि विधालय में बच्चों को सिर्फ शिक्षा का ज्ञान नही दे वरन उनमें नैतिकता और सभ्यता, संस्कृति की रक्षा करने का भी संकल्प दिलाये। उन्होनें बच्चों के द्वारा दी जा रही सांस्कृतिक प्रस्तुति की सराहना करते हुये कहा कि यह प्रस्तुति से

बच्चों की प्रतिभा का आंकलन स्वंय हो जाता है। उन्होनें विधालय प्रबधंन को इसके लिये धन्यबाद दिया। कार्यक्रम में आये स्थानीय विधायक ने कहा कि आप बड़े होकर शिक्षा के जिस क्षेत्र में जाये अपने विधालय को कभी नही भुले और यदा कदा पुनः विधालय में अध्ययन कर रहे बच्चों से रू–ब–रू होकर उन्हें अपन अनुभव को शेयर करते हुये उनका मार्गदर्शन करे। यह विधालय ग्रामीण क्षेत्र में होते हुये भी वारिसलीगंज के लिये मील का पत्थर साबित हो रहा है जरूरत है इसमें पढ़ने वाले बच्चों को नया आयाम देने की। उन्होनें कहा कि लोगो को सिर्फ अपने लिये नही सोचना चाहिये दूसरों की भी मदद किसी न किसी रूप मे करना चाहिये। विधालय के संस्थापक सच्चिदानंद सिंह ने भी संबोधित करते हुये अभिभावकों से अपने बच्चों पर विशेष रूप से निगरानी करने की वकालत की। उन्होनें बच्चों में प्रारंभिक शिक्षा के दौरान ही जाति, धर्म, सम्प्रदाय में विभेद न कर केवल राष्ट्रीय भावना को जागृत करने की सलाह दिया। उन्होनें अभिभावकों से कहा कि बच्चों के आचरण की निगरानी के प्रति हमेशा सजग रहकर उन्हें सहयोग कर उचित मार्गदर्शन दे। कार्यक्रम में आये मुख्य अतिथियों का स्वागत बुके देकर विधालय के निदेशक परमानंद सिंह ने किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति में बच्चों के द्वारा एकल डांस, एकल गीत, समूह नृत्य, एकल नृत्य सहित देष भक्ति से ओत प्रोत कई झांकियों में देश के कई राज्यों

की संस्कृति की झलक एकता में अनेकता, आदि कई सांस्कृतिक प्रस्तुति ने कार्यक्रम में आये अतिथियों अभिभावकों का दिल मोह लिया। अभिभावक प्रत्येक प्रस्तुति पर तालियों की गड़गड़ाहट से प्रतिभागियों का हौसला आफजाई किया। समुह गायन में अब कभी गुलशन न उजड़े की प्रस्तुति देश भक्ति से ओत प्रोत थी जो अग्रेजों के द्वारा देश वासियों पर किये गये दमन को याद दिला गयी। कई बच्चों ने बेहतरीन अदाकारी दिखाया। कार्यक्रम का उद्घाटन विधालय के संस्थापक तथा प्रबंध निदेशक श्री सच्चिदानंद सिंह ने दीप प्रज्जवलित कर किया। कार्यक्रम में आये अतिथियों के प्रति आभार प्रकट करते हुये निदेशक परमानंद सिंह अपने संबोधन में विधालय की उपलब्धियों को गिनाते हुये कहा कि बच्चे जब विधालय में नामांकन कराते है उस समय वे कोरा कागज के रूप में होते है और विधालय मे हम सब मिलकर उनमें कई रंगों से उनके जीवन को भरने का प्रयास करते है। विधालय के वार्षिक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सफल बच्चों को अतिथियों के द्वारा प्रशस्ती पत्र देकर सम्मानित किया गया। समारोह में राजकुमार सिंह, गोविन्द जी तिवारी, बंधु जी शीतल कुमारी, पी.पी. अंकुर, तरूण कुमार सहित सैकड़ो अभिभावक, सभी शिक्षक, शिक्षिकाएं सहित कई गणमान्य लोग मौजूद थे। समारोह का संचालन चुन्नू सर एवं उनके टीम में शामिल श्रुति अंशु, हर्षबर्द्धन, श्रेया ने मिल कर किया। ●

नितांत जरूरी है गैस पर खाना बनाते समय सावधानी बरतना

● ललन कुमार प्रसाद

आज देश के किसी भी शहर के किसी भी घर का ऐसा कोई भी रसोईघर नहीं है, जहां मामूली सी चाय बनाने से लेकर खाना पकाने तक के लिए कुकिंग गैस का इस्तेमाल नहीं किया जाता है। होटल, रेस्तरां, ढ़ाबा, कैंटिन, चाय-नास्ते की दुकान, प्रयोगशाला इत्यादि सभी जगहों पर चाय बनाने से लेकर विविध पकवान तैयार करने के लिए कुकिंग गैस का इस्तेमाल किया जाता है। अब तो प्रधानमंत्री उज्जवला योजना के अंतर्गत लगभग साढ़े तीन करोड़ गरीब परिवारों तक कुकिंग गैस का मुफ्त कनेक्शन सिलेंडर, चुल्हा और रेगुलेटर सहित पहुंचा दिया गया है। उम्मीद जताई जा रही है कि 2019 तक देश के करीब पांच करोड़ गरीब घरों तक यह सुविधा प्रदान करा दी जायेगी।

☆ **खाना पकाने का श्रेष्ठत्तम साधन है कुकिंग गैस :-** आज की तारीख में कुकिंग गैस की बराबरी का कोई विकल्प नहीं है। ऐसा इसलिए कि:-

☞ कुकिंग गैस के इस्तेमाल में ईंधन की जरा सी भी बर्बादी नहीं होती है, क्योंकि जिस क्षण चाहे बिना किसी विलंब के इसका उपयोग करना शुरू कर सकते हैं और काम पूरा होते ही क्षण पर में इसकी खपत रोक सकते हैं।

☞ कुकिंग गैस के उपयोग द्वारा खाना पकाते समय धूंआ बिल्कुल ही नहीं होता है। नतीजा खाना पकाते समय आँखों को धूंए का सामना नहीं करना पड़ता है। बर्तन भी काला नहीं होता है। धुंआ पैदा नहीं होने से किचेन गंदा नहीं होता है और ना ही खाना पकाने वाले व्यक्ति का कपड़ा। कुकिंग गैस को जलाने पर लकड़ी और कोयले की तरह राख नहीं बनता है। इसलिए रसोई घर स्वच्छ बना रहता है।

☞ कुकिंग गैस से खाना पकाने के दौरान लकड़ी और कोयले की तरह बार-बार पंखा झलने की जरूरत नहीं पड़ती है, कुकिंग गैस के जलने की एकरूपता हमेशा एक समान बनी रहती है।

☞ कुकिंग गैस को जलाने के लिए लकड़ी और कोयले की तुलना में बहुत कम हवा की जरूरत पड़ती है। इसलिए गैस के चुल्हे को लकड़ी और कोयले की चुल्हे की तरह कमरे से बाहर निकालकर जलाने की जरूरत नहीं पड़ती है और ना ही पंखा झलने या फैन चलाने की जरूरत पड़ती है।

☞ लकड़ी और कोयले की तरह कुकिंग गैस के चुल्हे को जलाने के लिए समय की जरा सी भी बर्बादी नहीं होती है, क्योंकि यह जलाने के लिए बिल्कुल तैयार ईंधन है।

☞ लकड़ी और कोयले की तुलना में कुकिंग गैस को जलाने पर पर्यावरण नगण्य प्रदुषित होता है, क्योंकि कुकिंग गैस बिना किसी रूकावट के सहजता से जलती है।

☞ लकड़ी और कोयले की तुलना में कुकिंग गैस की खपत बहुत ही कम होती है। बगैर किसी रूकावट के सहजता के साथ जलने के कारण 40 ग्राम कुकिंग गैस जितने दिनों तक जितने पकवान बनाये जा सकते हैं, उतने ही पकवान, उतने ही दिनों तक 42 किलोग्राम कोयले या 42 किलोग्राम लकड़ी से नहीं पकाये जा सकते हैं।

☞ अपेक्षाकृत बहुत ही कम खपत होने के कारण लकड़ी और कोयले की तुलना में कुकिंग गैस पर खाना पकाना बहुत ही किफायती है।

☞ ठोस और तरल ईंधनों की तुलना में कुकिंग गैस का उष्मीय मान बहुत अधिक होता है, इसलिए कुकिंग गैस के इस्तेमाल से खाना जल्दी पकता है।

☞ लकड़ी की ज्वाला नियंत्रणीय नहीं होती है जबकि कुकिंग गैस की ज्वाला नियंत्रणीय होती है। जरूरत के हिसाब से कुकिंग गैस की ज्वाला को जितना चाहे कम कर सकते हैं और जितना चाहे अधिक कर सकते हैं।

☞ सिलेण्डर सहित कुकिंग गैस का चूल्हा बहुत ही कम जगह घेरता है। इसे रखने की जगह इसको रखने से जरा भी जगह गंदी नहीं होती है।

इसमें कोई शक नहीं है कि कुकिंग गैस के इस्तेमाल द्वारा खाना पकाने के फायदे ही फायदे हैं। लेकिन इसका सबसे बड़ा नुकसान है कि इसके इस्तेमाल में जरा सी भी भूल चूक हो जाये या लापरवाही बरती जाये तो आग लगने की संभावना बनी रहती है। फिर कुकिंग गैस से लगी आग बहुत तेजी से लहलहाती हुई जलती है और बहुत तेजी से फैलती है। शॉर्ट सर्किट के बाद आगजनी का सबसे बड़ा कारक कुकिंग गैस के इस्तेमाल में पर्याप्त सावधानी नहीं बरतना ही है। ऐसा इसलिए कि कुकिंग गैस के इस्तेमाल में जरा सी लापरवाही या भूल चूक की बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है, जान-माल का भारी नुकसान होता है।

✯ कुकिंग गैस के सुरक्षित उपयोग के उपाय :- कुकिंग गैस के चलते होने वाली आगजनी की समस्या एक ही निदान है ''आम जनता के बीच जागृति पैदा करना''। यदि आम जनता आगजनी की दुर्घटनाओं के प्रति जागरूक हो जाए और स्वयं ही आगजनी को रोकने के लिए निम्नलिखित उपायों पर अमल करे तो कुकिंग गैस के इस्तेमाल में होने वाली आगजनी की दुर्घटना पर लगाम लगायी जा सकती है :-

☞ रसोई घर में प्रवेश करते समय यदि कुकिंग गैस के लिकेज (रिसाव) या किसी अन्य कारणों के चलते कुकिंग गैस की गंध मिल रही हो तो इलेक्ट्रीक स्वीच ऑन या ऑफ न करे। यदि रसोई घर में अंधेरा हो तो रसोई घर में रौशनी के लिए टॉर्च का इस्तेमाल करे।

यहाँ पर इस तथ्य का उल्लेख कर देना जरूरी है कि रसोई गैस का ना कोई रंग होता है और ना कोई गंध होता है। इसलिए जब इसे सिलेण्डर में भरा जाता है, तो इसमें थोड़ा सा इथाइल मरकप्टेन या थायोफेन मिला दिया जाता है। इन दोनो यौगिकों की गंध बहुत ही तीव्र होती है। नतीजा जब कुकिंग गैस की लिकेज होती है तो इथाइल मरकप्टेन या थायोफेन की गंध के चलते पता चल जाता है कि कुकिंग गैस लिक कर रही है।

☞ गैस का चूल्हा, गैस के सिलेण्डर से हमेशा एक फूट ऊपर किसी समतल प्लेटफॉर्म पर रखें। कभी भी गैस का चूल्हा निचे और गैस का सिलेण्डर ऊपर किसी प्लेटफॉर्म पर न रखें तथा गैस का चूल्हा और गैस का सिलेण्डर समान ऊँचाई के एक ही प्लेटफॉर्म पर न रखें। ऐसा इसलिए कि कुकिंग गैस हवा की तुलना में दोगुना भारी होती है।

☞ गैस का चूल्हा हमेशा किसी खुली खिड़की के पास रखें, जिससे कि यदि किसी कारणवश गैस का रिसाव होने लगे तो चूल्हा और सिलेण्डर की आसपास की हवा में रिसी हुई गैस की सांद्रता डिफ्यूजन के द्वारा लगातार स्वतः ही कम होती रहे।

☞ रात को सोने से पहले सिलेण्डर के रेगुलेटर को घूमाकर अवश्य बंद कर दें।

☞ जब चूल्हा जलाना हो तो पहले चूल्हे का नॉब ऑन करे और तब सिलेण्डर का रेगुलेटर घूमाकर गैस की आपूर्ति चालू करे।

☞ गैस का चूल्हा और गैस के सिलेण्डर को जोड़ने वाली रबड़ से होने वाली गैस लिकेज की जाँच भूलकर भी माचिस की तिल्ली या लाइटर जलाकर न करे। बल्कि रबर पाइप पर साबुन पानी का घोल डालकर करे। यदि बुलबुला बने

तो समझीय की गैस लिक कर रही है।

☞ गैस का सिलेण्डर बदलते समय कोई दूसरा चूल्हा या स्टोप जल रहा हो तो उसे बुझा दें।

☞ गैस वेंडर से गैस का सिलेण्डर लेते समय गैस लिकेज की जांच अवश्य करा लें।

☞ रात में खाना बनाने के बाद सिलेण्डर का रेगुलेटर घूमाकर पहले बंद करे और तब चूल्हें के नॉब को घूमोकर ऑफ करें।

☞ खाली गैस सिलेण्डर पर हमेशा बल्ब सेफ्टी कैप लगाकर रखें। जब लगे की गैस सिलेण्डर और गैस चूल्हे को जोड़ने वाली हरे रंग की रबर की पाइप खराब हो चुकी है तो रबर पाइप को अवश्य बदल दें। वैसे भी गैस चूल्हे और गैस सिलेण्डर को जोड़ने वाली रबर पाइप को साल में एक बार अवश्य बदल दें। हमेशा आईएसआई मार्क वाली रबर पाइप का इस्तेमाल करें।

☞ यदि दो या दो से अधिक बर्नर (मुंह) चूल्हा जलाना हो तो सभी बर्नरों का नॉब एक साथ ऑन न करें। पहले एक बर्नर का नॉब ऑन करके जलावें और तब दूसरे बर्नर का नॉब ऑन करके जलावें। इस तरह बारी-बारी से बर्नरों का नॉब घूमाते हुए ऑन करें।

☞ जब जलते-जलते चूल्हा अपने आप बुझ जाता है, तब भी सिलेण्डर में गैस का कुछ अंश बचा रह जाता है, जिसे भूलकर भी जलाने हेतु सिलेण्डर से बाहर निकालने का प्रयास न करें। जो व्यक्ति गैस सिलेण्डर को झकझोर कर या लिटाकर या उलटकर उस बचे हुए गैस के बहुत ही छोटे से अंश को निकालने का प्रयास करते हैं, वे आगजनी को खूला निमंत्रण देते हैं।

☞ गैस सिलेण्डर को सूरज की रौशनी में नहीं रखनी चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से ताप के चलते सिलेण्डर का भितरी दबाव बढ़ जाता है। इसलिए सिलेण्डर भरा हो या खाली, धूप में न रखें।

☞ बैक फायर रोकने के लिए बर्नर के नोजल को हमेशा साफ रखें।

☞ गैस सिलेण्डर को हमेशा लंबवत (खड़ा) रखें। सिलेण्डर को एक स्थान से दूसरे स्थान तक लिटाकर लुढ़काते हुए न ले जाये। हाँ, गैस सिलेण्डर को हल्का सा झुकाकर एक स्थान से दूसरें स्थान तक घूमा-घूमाकर ले जायें।

☞ कभी भी गैस सिलेण्डर का इस्तेमाल रॉलर की तरह न करें। सिलेण्डर को न घसीटे और न पटके।

☞ नाइलन या टेरीलीन के कपड़े पहनकर खाना न बनावे। हमेशा सूती कपड़े पहनकर खाना बनायें।

☞ गैस सिलेण्डर को हमेशा बल्ब सुरक्षा कैप लगाकर रखें। सिर्फ उस समय को छोड़कर जब सिलेण्डर से रेगुलेटर जुड़ा हुआ हो।

☞ गैस से भरे और खाली सिलेण्डरों को एक साथ न रखें। अलग-अलग स्थानों पर रखें। गैस से भरे सिलेण्डर की तरह खाली गैस सिलेण्डर के ऊपर भी बल्ब सेफ्टी कैप अवश्य लगा दें। गैस से भरे सिलेण्डर पर फूल और खाली सिलेण्डर पर इम्पटी का टैग अवश्य लगा दें। गैस सिलेण्डर को बिजली के स्वीच और बिजली के उपकरण से कम से कम एक मीटर की दूरी पर रखें।

☞ रसोई घर में जलने वाली वस्तुओं का संग्रह कम से कम करें।

☞ रसोईघर में 2 किलोग्राम की क्षमता वाला एक अग्नि शामक यंत्र इंस्टॉल अवश्य करा लें।

☞ रसोईघर में दो-तीन बाल्टी पानी अवश्य रखें जिससे की आरंभिग अवस्था में ही आग पर काबू पा ली जाए। ●

(लेखक फायर एण्ड सेफ्टी विशेषज्ञ हैं।)
मो०:- 9334107607
वेबसाईट :- www.psfsm.in

पहचान प्रमाणिक सेफ्टी मैनेजमेंट इंस्टीच्यूट की

● ललन कुमार प्रसाद

किसी भी सेफ्टी मैनेजमेंट इंस्टीच्यूट में दाखिला लेने के पहले कुछ तथ्यों की जांच कर लेना बहुत जरूरी है, वरना आपका करियर हमेशा-हमेशा के लिए तबाह हो सकता है। एक बार अच्छी खासी मात्रा में पैसा और समय गंवा देने के बाद स्टूडेण्ट्स की कमर टूट जाती है। ऐसे में फिर से संभल पाना बहुत कठीन हो जाता है। ऐसा इसलिए कि हमारे आसपास की जगहों में फर्जी शिक्षण संस्थानों की भरमार है। इन फर्जी शिक्षण संस्थानों के द्वारा बिछाये गये जाल में से निकलना बड़ा ही मुश्किल है। ये फर्जी शिक्षण संस्थान चाहे जितना भी दावा करे, इनके द्वारा स्टूडेण्ट्स को प्रदान की गई डिग्री डिप्लोमा का किसी भी यूनिवर्सिटी से कुछ भी लेना-देना नहीं है। इसलिए स्टूडेण्ट्स के लिए निम्नलिखित तथ्यों की जानकारी बहुत जरूरी है :-

☞ डिप्लोमा या डिग्री की पढ़ाई कराने वाला कोई भी शिक्षण संस्थान जब तक सरकार के यहां अपने शिक्षण संस्थान का रजिस्ट्रेशन नहीं करा लेता है तो उसे ऐसी पढ़ाई कराने का कोई अधिकार नहीं है। फिर भी कई शिक्षण संस्थान ऐसा करते हैं, तो वह शिक्षण संस्थान बिल्कुल फर्जी है।

☞ राज्य या केन्द्र सरकार में रजिस्ट्रड करा लेने के बावजूद यदि बिहार का कोई भी शिक्षण संस्थान बिहार के बाहर के किसी भी यूनिवर्सिटी का डिप्लोमा या डिग्री मुहैया कराता है तो वह डिप्लोमा या डिग्री बिल्कुल फर्जी है, सिर्फ इंदिरा गांधी ओपेन यूनिवर्सिटी को छोड़कर। ऐसा इसलिए कि युनिवर्सिटी अनुदान आयोग (यूजीसी) की अधिसूचना के मुताबिक कोई भी राज्य अपनी सीमा के अंदर बाहरी राज्यों के किसी भी यूनिवर्सिटी का स्टडी सेंटर या आउटरी सेंटर या ऑफ कैंपस या किसी भी तरह का कोई भी पाठ्यक्रम नहीं चला सकता।

☞ कोई भी शिक्षण संस्थान अपने राज्य के किसी भी यूनिवर्सिटी का अधिकृत स्टडी सेंटर होने के बावजूद किसी भी दूसरे शिक्षण संस्थान को डिप्लोमा या डिग्री की पढ़ाई हेतु फ्रेंचाइजी देने का अधिकार नहीं है। यदि कोई शिक्षण संस्थान छात्रों को भ्रमित कर उनका दाखिला ले लेता है, तो वह दाखिला पूरी तरह से अवैध है।

☞ यदि किसी शिक्षण संस्थान द्वारा बगैर स्लेबस के ही डिप्लोमा या डिग्री की पढ़ाई की जाती है तो वहां के स्टूडेण्ट्स न केवल फिसड्डी होते हैं बल्कि उस शिक्षण संस्थान द्वारा प्रदान की गई डिग्री या डिप्लोमा फर्जी है। ऐसा इसलिए कि बगैर स्लेबस के कोई भी डिग्री या डिप्लोमा की पढ़ाई नहीं की जा सकती है।

☞ यदि कोई शिक्षण संस्थान स्टूडेण्ट्स के नामांकन, परीक्षा आदि के फीस का बैंक ड्राफ्ट संबद्ध यूनिवर्सिटी के नाम के बजाय किसी व्यक्ति के नाम से लेता है तो वह शिक्षण संस्थान स्टूडेण्ट्स को भ्रमित कर उन्हें ठग रहा है। ऐसा इसलिए कि किसी व्यक्ति के नाम का बैंक ड्राफ्ट यूनिवर्सिटी में जमा नहीं कराया जा सकता है।

☞ सेफ्टी मैनेजमेंट के ऐसे शिक्षण संस्थान जो फायर सेफ्टी मैनेजमेंट के बारे में नहीं पढ़ाते हैं या कुल मिलाकर दो-चार घंटे पढ़ाकर पल्ला झाड़ लेते हैं, ऐसे शिक्षण संस्थान स्टूडेण्ट्स के साथ सरासर नाइंसाफी कर रहे हैं। ऐसा इसलिए की कोई भी कल कारखाना बिजली के उपयोग के बगैर नहीं चलाया जा सकता। दरअसल आगजनी की 85% दुर्घटनाएं सॉट सर्किट के चलते ही घटती है, जो व्यापक रूप से जान-माल की भारी क्षति का सबसे बड़ा कारक है।

☞ हर सेफ्टी मैनेजमेंट इंस्टीच्यूट की लेबोरेट्री अच्छी तरह से समृद्ध होना चाहिए और वहां भरपूर प्रैक्टिकल कराया भी जाना चाहिए, वरना स्टूडेण्ट्स का करियर बर्बाद हो जायेगा। जो सेफ्टी मैनेजमेंट इंस्टीच्यूट इंडस्ट्रीज के बदलते जरूरत के मुताबिक समय-समय पर अपने स्लेबस को अपडेट करता रहता है, उस सेफ्टी इंस्टीच्यूट के स्टूडेण्ट्स इंडस्ट्रीज की पहली पसंद होते हैं और उन्हें पैकेज भी अच्छा मिलता है।

☞ वह सेफ्टी मैनेजमेंट इंस्टीच्यूट उम्दा होता है, जिसमें स्लेबस में दिए गये सभी टॉपिक की पढ़ाई समय पर पूरी कर ली जाती है।

☞ पूरे बिहार में सेफ्टी मैनेजमेंट का एक भी इंस्टीच्यूट ऑल इंडिया काउंसिल ऑफ टेक्नीकल एडुकेशन (एआईसीटीई)से एप्रुब्ड नहीं है, यहां तक की पटना यूनिवर्सिटी का इंडस्ट्रीयल सेफ्टी मैनेजमेंट इंस्टीच्यूट भी। इसलिए बिहार का जो भी सेफ्टी मैनेजमेंट इंस्टीच्यूट एआईईसीटीई से एप्रुव्ड होने का दावा कर रहा है, वह बिल्कुल झूठ बोलकर स्टूडेण्ट्स को धोखा दे रहा है।

☞ जिस सेफ्टी मैनेजमेंट का प्लेसमेंट सेल स्टूडेण्ट्स को हर सप्ताह देश-विदेश में उपलब्ध होती रहनी वाली हजारों नौकरियों के बारे में पूर्ण जानकारी उपलब्ध कराता है, वह उम्दा सेफ्टी मैनेजमेंट इंस्टीच्यूट है।

☞ जिस सेफ्टी मैनेजमेंट इंस्टीच्यूट में रेगुलर तथा स्तरीय पढ़ाई की जाती है और जहां टिचींग फैकेल्टीज की शानदार टीम है तथा जो अपनी पढ़ाई के द्वारा स्टूडेण्ट्स को पूरी तरह से संतुष्ट कर देती है, वह सेफ्टी मैनेजमेंट इंस्टीच्यूट उम्दा है। ऐसा इसिलए कि ऐसे इंस्टीच्यूट के स्टूडेण्ट्स में पढ़ाई के प्रति भरपूर दिलचस्पी पैदा हो जाती है और वे जीवन में कुछ अच्छा कर गुजरने का जुनून पैदा हो जाता है।

☞ जिस सेफ्टी मैनेजमेंट इंस्टीच्यूट में इंटरव्यू कैसे फेश किया जाता है, इसकी समुचित जानकारी दी जाती है, वह उम्दा इंस्टीच्यूट है। ऐसा इसलिए कि ऐसे इंस्टीच्यूट में एक्सपर्ट्स द्वारा पूछे गये प्रश्नों की सटीक तथा सही जवाब कैसे दिया जाना चाहिए, इसकी जानकारी अच्छी तरह से दी जाती है।

☞ वह सेफ्टी मैनेजमेंट इंस्टीच्यूट उम्दा इंस्टीच्यूट है, जहां शुरू से लेकर आज तक के पास आउट सभी डिप्लोमा व पीजी डिप्लोमाधारी स्टूडेण्ट्स का रिजल्ट डिटेल में ऑनलाईन है :-

स्टूडेण्ट्स का नाम, उसके पिता का नाम, उसकी प्राप्त ग्रेड, मार्क्स का प्रतिशत, रिजल्ट के प्रकाशित होने की तिथि और स्टूडेण्ट्स का रंगीन फोटोग्राफ।

☞ वह सेफ्टी मैनेजमेंट इंस्टीच्यूट उम्दा है, जहां दाखिला लेने के पहले सभी को डेमो क्लासेज के रूप में कुछ फ्री क्लासेज सालो भर दिए जाते हैं और उस डेमो क्लासेज में स्टूडेण्ट्स के साथ उनके अभिभावक, एक्सपर्ट और दोस्त को शामिल किए जाने की छूट रहती है।●

(लेखक फायर एण्ड सेफ्टी विशेषज्ञ हैं।)
मो०:- 9334107607
वेबसाईट :- www.psfsm.in

शॉर्ट सर्किट नहीं होगी तो आगजनी भी नहीं होगी

● ललन कुमार प्रसाद

बिजली ऊर्जा का इतना बहुआयामी और इतना विशिष्ट रूप है कि यह सम्पूर्ण मानव जीवन आवश्यक आवश्यकता बन गई है। क्या घर, क्या बाहर- हर जगह, हर रोज, हर समय बल्ब, ट्यूब लाइट, पंखा, कुलर, एसी, फ्रीज, टोस्टर, हीटर, मिक्सी, ओवेन, माइक्रो ओवेन, इंड्क्शन चुल्हा, गीजर, आयरन (इस्त्री), वाशिंग मशीन, वैक्यूम क्लीनर, जल शोधक मशीन, टी.वी., लैपटॉप, फोटो स्टेट मशीन, स्कैनर, प्रिंटर, ढ़ेर सारे विद्युत उपकरणों से नित्य हमारा वास्ता पड़ता ही रहता है। किसी भी उद्योग की जान बिजली ही है, क्योंकि बगैर बिजली के कोई भी कल-कारखाना नहीं चलाया जा सकता है। यही कारण है कि जब थोड़े समय के लिए भी बिजली चली जाती है, तो सारा का सारा हमारा घरेलू, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और औद्योगिक जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। नमूने के तौरपर नहाने के लिए पानी तो दूर, पीने के लिए पानी का भी हाहाकर मच जाता है, क्योंकि जमीन में बोरिंग कर के जो पानी निकाला जाता है, उसका मोटर बिजली से ही चलता है। लेकिन बहुत दुख की बात है की बिजली के इस्तेमाल के दौरान शॉर्ट सर्किट की घपटनाएं आम हो गई है जो आगजनी का सर्वाधिक प्रमुख कारण है। ऐसा इसलिए कि आगजनी की 85% घटनाएं शॉर्ट सर्किट के चलते ही घटती है। जो जान-माल की अपार क्षति का ऐसा सर्वाधिक प्रमुख कारण है, जिसकी भरपाई कभी भी नहीं की जा सकती है। यदि कागज, कपड़ा, लकड़ी आदि जलकर राख हो जाये तो पुनः उसे कागज, कपड़ा, लकड़ी आदि में तब्दील नहीं की जा सकती है। अगर बगैर इस्तेमाल के टैंक में रखा पेट्रोल-डीजल आदि अगलगी के चलते जलकर समाप्त हो जाये तो किसी भी विधि द्वारा उन्हें पुनः प्राप्त नहीं किया जा सकता है। कोई आदमी, कोई जानवर आदि जलकर मर जाये तो पुनः उन्हें जिंदा नहीं किया जा सकता है और जल जाने के कारण कोई अपंग या कुरूप हो जाये तो उसे पुनः पहली जैसी अवस्था में नहीं लाया जा सकता है। जंगल में लगी आग से यदि मिट्टी झुलस जाये तो उसकी उर्वरा शक्ति नष्ट हो जाती है। धरती की उपरी सतह की उस झुलसी हुई मिट्टी की एक इंच मोटी परत को पुनः उपजाऊ बनाने में प्रकृति को 300 से 800 साल लग जाते हैं।

क्या घर, क्या दुकान, क्या दफ्तर, क्या स्कूल, क्या कॉलेज, क्या लाइब्रेरी, क्या लेबोरेट्र, क्या हॉस्पीटल, क्या सिनेमा हॉल, क्या गोदान, क्या सभागार, क्या अभिलेखागार, क्या संग्रहालय, क्या बंदरगाह, क्या सैन्य डीपो, क्या बाजार, क्या मॉल, क्या पूजा स्थल, क्या कल-कारखाना, हर जगह, हर समय, हर मौसम में शॉर्ट सर्किट के चलते आगजनी की घटनाएं प्रायः घटती ही रहती है। ऐसे में हमारे लिए नितांत आवश्यक हो गया है कि बिजली का उपयोग करते समय इस बात का खास ख्याल रखा जाना चाहिए की इलेक्ट्रीक सर्किट में कही भी, कभी भी शॉर्ट सर्किट न होने पाये।

✯ **शॉर्ट सर्किट क्या है? :-** बिजली का फेज वायर और न्यूट्रल वायर बगैर किसी प्रतिरोध या लगभग शून्य प्रतिरोध के आपस में सट जाना ही शॉर्ट सर्किट कहलाता है। अर्थात् शॉर्ट सर्किट बिजली के सर्किट की वह दशा है, जिसमें बगैर किसी प्रतिरोध (लगभग शून्य प्रतिरोध) के ही

सर्किट पूरी हो जाती है, जिससे सर्किट में करंट की शक्ति एकाएक बढ़ जाती है। नतीजा, सर्किट का तार इतना गर्म हो जाता है कि उसमें से चिंगारियां निकलने लगती है, जो मकान, दुकान, दफ्तर, गोदाम आदि को जलाकर राख में तब्दील कर देती है। फिर सर्किट के तार का अत्यधिक गर्म होने के चलते इलेक्ट्रीक और इलेक्ट्रॉनिक उपकरण भी क्षतिग्रस्त हो जाते हैं।

✯ **शॉर्ट सर्किट के कारण :-**

☞ इलेक्ट्रीक सर्किट में उचित स्थान पर उचित किस्म और उचित क्षमता के फ्यूज का न लगा होना।

☞ ओवरलोडिंग :- (क) एक ही विद्युत लाईन से एक ही बिन्दु पर एक साथ कई विद्युत उपकरणों जैसे-टी.वी., फ्रीज, कुलर आदि का इस्तेमाल करना। (ख) बिजली के पावर उपकरण जैसे- मिक्सी, हीटर, ओवेन, माइक्रो ओवेन आदि के लिए 15 एम्पीयर के सॉकेट और 15 एम्पीयर के प्लग का इस्तेमाल न किया जाना।

☞ इलेक्ट्रीक सर्किट में लगे तांबे के तार पर चढ़ाए गये प्लास्टीक के आवरण का क्षतिग्रस्त हो जाना।

✯ **क्या है इलेक्ट्रीक सर्किट में लगा फ्यूज :-** यह इलेक्ट्रीक सर्किट के तार में सीरीज में एक छोटे से तार के रूप में लगा एक ऐसा उपकरण है, जो सर्किट में वायरिंग किए गये तार में एक निश्चित सीमा से अधिक शक्तिशाली इलेक्ट्रीक करंट के बहने पर स्वयं ही पिघलकर सर्किट को खंडित कर देता है। जिससे मकान, दुकान, दफ्तर आदि भवनों में आग नहीं लगती है। अर्थात् फ्यूज में लगा छोटा सा तार सर्किट में सुरक्षा बल्ब की तरह काम करता है।

✯ **फ्यूज की किस्में :-**

☞ प्लग फ्यूज

☞ काट्रीज फ्यूज

☞ मिनियेचर सर्किट ब्रेकर (एमसीबी)

☞ अर्थ लिकेज सर्किट ब्रेकर (ईएलसीबी)

☞ रेसीड्यूअल करंट सर्किट ब्रेकर (आरसीसीबी)

✯ **फ्यूज लगाने के फायदे :-** घर, दुकान, दफ्तर, स्कूल, कॉलेज, अस्पताल, लाइब्रेरी, लेबोरेट्री, हवाई अड्डा, बस अड्डा, रेलवे स्टेशन, गोदाम, वर्कशॉप, कारखाना आदि के भवनों तथा इन भवनों में इस्तेमाल में लाये जाने वाले कीमती विद्युत उपकरणों और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों में उचित जगह पर उचित किस्म का और उचित क्षमता के फ्यूज लगाने पर शॉर्ट सर्किट की घटना नहीं घटती है और ना ही इन भवनों में इस्तेमाल में लाए गये विद्युत उपकरण व इलेक्ट्रॉनिक उपकरण भी क्षतिग्रस्त होते हैं।

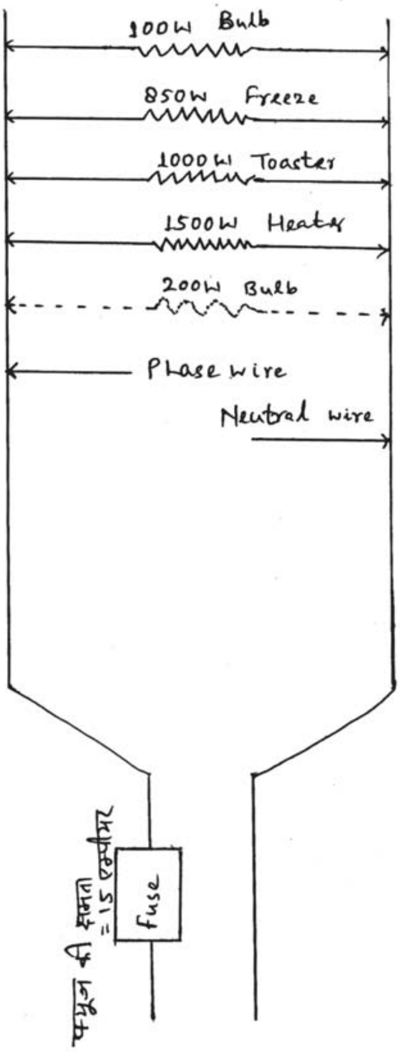

बिजली के प्रत्येक उपकरण से कितनी क्षमता का करेंट बहती है, उसे जानने का सूत्र है:

$$\frac{\text{वाट}}{\text{वोल्ट}} = \text{एम्पीयर}$$

वाट = बिजली उपकरण का पावर

वोल्ट = बिजली की आपूर्ति करने वाले स्रोत का बल

एम्पीयर = बिजली के तार से बहने वाली करेंट की ताकत

$$\frac{100}{230} = \frac{10}{23} \text{ एम्पीयर}$$

$$\frac{850}{230} = \frac{85}{23} \text{ एम्पीयर}$$

$$\frac{1000}{230} = \frac{100}{23} \text{ एम्पीयर}$$

$$\frac{1500}{230} = \frac{150}{23} \text{ एम्पीयर}$$

$$\frac{10}{23} + \frac{85}{23} + \frac{100}{23} + \frac{150}{23} = 15 \text{ एम्पीयर}$$

$$\frac{200}{230} = \frac{20}{23} \text{ एम्पीयर}$$

$$15 \text{ एम्पीयर} + \frac{20}{23} \text{ एम्पीयर} = 15\frac{20}{23} \text{ एम्पीयर}$$

इलेक्ट्रिक सर्किट में ओवरलोडिंग के चलते तार बहुत ही तेजी से इतनी गर्म हो जाती है कि तार के इन्सुलेटिंग आवरण में तुरन्त आग पकड़ लेती है जो भयंकर आगजनी का कारक बनती है, उसे जानने का सूत्र है:

$$\text{ताप} = (\text{करेंट})^2 \times \text{अवरोध} \times \text{टाइम}$$

ध्यान देने वाली बात यह है कि फ्यूज की कीमत मामूली होती है, इसलिए पिघलकर नष्ट हो गए फ्यूज के स्थान पर दूसरा फ्यूज लगाने पर खर्च न के बराबर आता है। इस तरह हम पाते हैं कि मामूल सा फ्यूज सभी तरह के मकानों और कल-कारखानों को न केवल आग लगने से बचाता है, बल्कि इन मकानों में इस्तेमाल हेतु लगे सभी इलेक्ट्रीक और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों व मशीनों के लिए रक्षक संत्री का कार्य भी करता है।

✯ **बिजली के इस्तेमाल के चलते होने वाली आगजनी से बचाव :-** आगजनी से बचाव हेतु जरूरी है निम्नलिखित सावधानियों को बरतना :-

☞ घर, दफ्तर, स्कूल, कॉलेज, कल-कारखाना आदि भवनों में वायरिंग कराते समय उचित जगह, उचित किस्म और उचित क्षमता का फ्यूज अवश्य लगावे।

☞ उपर्युक्त भवनों में कही भी वायरिंग लूज न हो और ना ही वायरिंग का कोई ज्वाइंट ही लूज हो। ज्वाइंट्स पर उम्दा किस्म के इन्सूलेटिंग टेप का इस्तेमाल करे।

☞ स्वीच बोर्ड के किसी भी सॉकेट पर ओवरलोडिंग न होने दें। यथा संभव मल्टीप्लग के उपयोग से बचे। यदि मल्टीप्लग का उपयोग करना भी पड़े तो केवल कम वार्ट यानि कम शक्ति के बिजली के उपकरणों का उपयोग करे। भूलकर भी पावर उपकरण जैसे फ्रीज, एसी, ओवेन, माइक्रो ओवेन, हीटर आदि के लिए मल्टी प्लग का इस्तेमाल न करे।

☞ बिजली के पावर उपकरणों जैसे फ्रीज, एसी, हीटर, ओवेन, माइक्रो ओवेन, गीजर आदि के लिए 15 एम्पीयर के शॉकेट और 15 एम्पीयर के प्लग का इस्तेमाल करे।

☞ बिजली के पावर उपकरणों के आसपास आसानी से आग पकड़ने वाली वस्तुओं को हटाकर कुछ दूरी पर रखे। किसी ऑथोराईज्ड व

एक्सपर्ट बिजली मिस्त्री से साल में कम से कम एक बार बिजली के वायरिंग की जांच अवश्य करा लें।

☞ पावर उपकरणों को लगातार लंबे समय तक चालू न रखें। बीच-बीच में 15-20 मिनट के लिए ब्रेक अवश्य दें।

☞ बिजली के तार का ज्वाइंट (जोड़) जहां कभी भी ढ़ीली पड़ गई हो, उसे तुरंत टाइट कर दें वरना आगजनी की घटना कभी भी घट सकती है।

☞ बिजली के उपकरणों को उपयोग में लाने के बाद उनके स्वीच ऑफ कर दे और शॉकेट को प्लग से निकाल दें।

☞ कालीन या चटाई के नीचे से बिजली के तारों को ले जाने पर जूते के ठोकर से तार में टूट-फूट हो जाती है, जिसके कारण शॉट सर्किट हो सकती है, जो आगजनी का कारण बनती है। इसलिए कालिन, चटाई या दरी के नीचे से बिजली के तार एक स्थान से दूसरे स्थान तक न ले जायें।

☞ लंबे समय के लिए घर छोड़कर जाते समय बिजली के मेन स्वीच को ऑफ अवश्य कर दें।

☞ खलियान में दौनी के समय फसल की सूखी बंडलों को बिजली के पोल के चारो ओर अथवा बिजली के तार के नीचे एकत्रित न करे।

☞ हमेशा स्टैंडर्स कंपनी के बिजली के उपकरणों का इस्तेमाल करें।

☞ आग लगने पर लिफ्ट का उपयोग भूलकर भी न करे, क्योंकि ऐसा करने पर लिफ्ट के भीतर भर गये धूंए के चलते घूटन की समस्या पैदा हो जाती है। जिससे लिफ्ट में मौजूद व्यक्ति की मौत हो जाती है। ऐसे में हमेशा सिढ़ियों का ही उपयोग करे।

☞ हर घर में कम से कम पांच किलोग्राम क्षमता का स्टोर्ड प्रेसर टाईप डीसीपी आग बुझाने वाला यंत्र अवश्य रखें। इस आग बुझाने वाले यंत्र की विशेषता यह है कि इसका इस्तेमाल हर तरह के आग बुझाने के लिए कर सकते हैं। फिर इस तरह के अग्नि शामक यंत्र को मेंटेन करने की जरूरत नहीं पड़ती है। बस एक बार इस अग्नि शामक यंत्र को चलाने का तरीका भर जान लेना पर्याप्त होता है। यह अग्नि शामक यंत्र बिजली की वायरिंग और बिजली के चलने वाले उपकरणों में लगी आग को कुछ ही सेकेण्ड में बुझा देता है। ●

(लेखक फायर एण्ड सेफ्टी विशेषज्ञ हैं।)
मो०:- 9334107607
वेबसाईट :- www.psfsm.in

मगध कप पर मुजफ्फरपुर टीम का लगातार चौथी बार कब्जा

● **मिथिलेश कुमार/मनीष कमलीया**

नवादा के हरिश्चंद्र स्टेडियम में आयोजित मगध कप क्रिकेट टूर्नामेंट 2018 पर पांचवी बार फिर से मुजफ्फरपुर की टीम ने कब्जा जमाया है। रविवार को हरिश्चंद्र स्टेडियम में शुरू हुए फाइनल मैच के दौरान पहले टॉस जीतकर गया की टीम ने बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 25 ओवर में मात्र 101 रनों का लक्ष्य रख सकी। जिसके जवाब में खेलते हुए मुजफ्फरपुर की टीम ने 22 ओवर में ही निर्धारित लक्ष्य को 5 विकेट गंवाकर पूरा कर लिया। विजेता टीम को सदर एसडीओ राजेश कुमार, एसपी अभियान आलोक कुमार, सदर एसडीपीओ विजय कुमार झा, संयोजक अफसर नवाब, अध्यक्ष जेकी हैदर सहित अन्य लोगों ने कप के साथ-साथ 25000 नगद देकर सम्मानित किया। आयोजन समिति की ओर से उप विजेता टीम गया को भी रणजी ट्रॉफी के साथ-साथ 15000 नगद दिए गए। प्रवीण यादव को मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार दिया गया। जबकि समीर खान को मैन ऑफ द सीरीज का पुरस्कार प्रदान किया गया। इस मौके पर आयोजन समिति की ओर से पूर्व खिलाड़ी मनीष कुमार सिन्हा, कपिल देव उर्फ केडी, सुनील कुमार कारी, रितेश कुमार मंशु तथा मोहम्मद सोहेल को सम्मानित किया गया। मौके पर प्रगति फाउंडेशन के मोहम्मद कामरान की ओर से प्रत्येक छक्का – चौका लगाने वाले खिलाड़ियों को सिसका एलईडी बल्ब प्रदान किया गया। मौके पर आर पी साहू, उपेंद्र प्रसाद, नवीन केसरी, वरुण शंकर केसरी, मोहम्मद शकील, सहाबुद्दीन गुड्डू, विकास कुमार फुल्लू, श्रवण कुमार बरनवाल, अलखदेव यादव सहित अनेक लोग मौजूद थे। ●

बढ़ते अपराध से सहमे जिलेवासी

एक ओर जहॉ बिहार सरकार न्याय के साथ विकास और सुशासन का ढिढ़ोरा पीटती है दुसरी तरफ बिहार में बढ़ते अपराध के ग्राफ से बिहारवासी सहमे हुए है। हम पाठकों को यह बताना चाहेगें कि केवल सच हमेशा बिहार की तमाम छोटी मोटी घटनाओं से लेकर बड़ी घटनाओं पर अपनी पैनी नजर रख कर पाठकों के सामने पुरी पारदर्शिता और सच्चाई से अवगत कराता रहा है। यह सत्य है कि बिहार में अपराधियों का वर्चस्व कायम हो रहा है। एक बार फिर जंगलराज की ओर बिहार बढ़ रहा है। जहॉ पुरे बिहार में प्रतिदिन दर्जनों हत्या और बलात्कार एवं लूट की घटना अखबारों की सुर्खिया बटोरती है वही कई मॉओं की गोद सुनी होती है दर्जनों बहनों का शीलभंग एवं दर्जनों विधवायें अपनी भाग्य पर आसूॅ बहाती है। परन्तु बिहार सरकार के द्वारा कानून का राज स्थापित करने की घोषणा छलावा साबित हो रही है। नवादा जिले में एक माह में छः महादलित की हत्या समेत कई बलात्कार एंव लूट की घटना को अपराधी अंजाम देकर अपने हौसला को बुलंद कर पुलिस को चकमा देने में कामयाब हो रहे है। दुसरी तरफ पुलिस अपने कार्य में अपराधियों की धरपकड़ के लिये समय गुजार कर अपना दामन को बचाने का असफल प्रयास कर रही है। जिले की भौगोलिक बनाबट के अनुसार करीब आधे दर्जन थाना क्षेत्र जंगल और पहाड़ी होने के कारण नक्सली गतिविधियों से प्रभावित है वही जिले के शराबबंदी कानून का असरहीन होना नवादा के सेहत के लिये भी खतरनाक साबित हो रहा है। जिला प्रशासन लाख अपराध पर काबू पाने का दाबा करले परन्तु निकट में हुये कई लोमहर्षक घटनाओं ने जिलेवासियों को सकते में डाल दिया है। खास कर महादलितों की लगातर हत्या से प्रशासन के दाबे की पोल खुल रही है। नवादा में बढ़ते अपराधिक घटनाओं पर प्रस्तुत है **मिथिलेश कुमार, अमित कुमार सिंह एवं मनीष कुमार** की विशेष रिर्पोट :–

जिले के विभिन्न थाना क्षेत्रों में बढ़ रहे अपराधिक मामले जहॉ आम लोगो में दहशत पैदा कर रही है वही पुलिस के प्रति अविश्वास की भावना भी बढ़ रही है। आकड़े के अनुसार जिले के विभिन्न थानों में अपराधिक मामले के सैकडों मामले दर्ज किये जा चुके हैं। खास कर अनुसूचित जाति अत्याचार निवारण से जुड़े दर्जनों मामले में हत्या और बलात्कार के मामले सामने आये है। दलितों पर बढ़ रहे अत्याचार के विरोध में आये दिन जिला मुख्यालय में धरना प्रर्दशन का कार्य किया जा रहा है। बीते फरवरी और मार्च महीने में ही जिले में 6 महादलितों की हत्या जिसमें 12 फरवरी को वारिसलीगंज थाना क्षेत्र के अपसढ़ गॉव में जहॉ भाजपा विधायक अरूणा देवी का गॉव है विधायक के नजदीक के रिश्तेदार ने गॉव के ही टाले मांझी की हत्या पीट–पीट कर दिया। यहॉ तक कि साक्ष्य छिपाने का प्रयत्न भी किया गया। स्थानीय पुलिस को जानकारी के बाबजुद सक्रियता नही दिखाई जैसे ही दलित नेताओं को इस घटना की जानकारी हुई तो राज्य मुख्यालय के आला अधिकारियों को सुचित करते ही पुलिस हरकत में आयी और अधजले लाश के अवशेषों को थाना लाया गया। पीड़ित परिवार के फर्द ब्यान पर हत्या का मामला दर्ज हुआ। दबंगो के दहशत के कारण पीड़ित परिवार भय के माहौल में जीने को विवश है। हत्या के कारणों की गहराई तक जाने से दबंगो की दबंगता प्रकाश में आयी है। जो

दलितों पर जुल्म की कहानी को बयां कर रही है। हालांकि इस मामले में पुलिस ने त्वरित कारवाई करते हुये हत्या के आरोपित धर्मेन्द्र कुमार उर्फ मामु को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। परन्तु इसमें पुलिस की भद्दी पिट गयी। हत्या आरोपित स्थानीय विधायक के बहुत करीबी होने के कारण मामला दबाने का काफी प्रयास किया गया परन्तु दलित नेताओं के दबाब में प्रशाशन अपना दामन बचाने के लिये आरोपित को गिरफ्तार किया। यह मामला ठंढा भी नही हुआ कि 15 फरवरी को वारिसलीगंज थाना क्षेत्र के हाजीपुर के निकट रेवाड़ गॉव गोपाल चौधरी की पत्नी की हत्या कर लाश को बधार में पेड़ से लटका दिया। 20 फरवरी को कौआकोल थाना क्षेत्र के पनसगवा गॉव में गॉव के दंबगो ने मुन्द्रिका मांझी की हत्या शराब बनाने से मना करने पर कर दिया। रजौली थाना क्षेत्र के धरमपुर गॉव में भुवनेश्वर मांझी की हत्या गॉव के दबंगो ने ऑख फोड़ कर पीट पीटकर दिया। सिरदला थाना क्षेत्र में धनेश्वर राजवंशी की हत्या तथा तारण गॉव में राजो राजबंशी की हत्या कर दी गयी। 5 मार्च को कादिरगंज थाना क्षेत्र के आती गॉव के बधार में 20 वर्षीय नंदे तांती की लाश मिलने से पुरे क्षेत्र में सनसनी फैल गयी जानकारी के अनुसार मृतक अपने ननिहाल में आया था। और दुसरे दिन उसकी लाश गॉव के बधार में पायी गयी। वही वारिसलीगंज

थाना क्षेत्र के मसुदा गॉव में ट्रैक्टर की चपेट में आने से 15 वर्षीय बालिका की मौत हो गयी। परिजनों के द्वारा जान बुझ कर हत्या करने का आरोप लगाया गया। परन्तु इस मामले में जानकारी के अनुसार गॉव के रास्ते का विवाद लंबे अर्से से चला आ रहा था। और पीड़ित परिवार के परिजनों के द्वारा आने जाने वाले वाहनों के चालको के साथ अभद्र व्यवहार करते थे। हालांकि वाहन मालिक ने बताया कि मृतक जान बुझकर ट्रैक्टर के चपेट में आ गयी जिसके कारण उसकी मौत हो गयी। हालांकि पुलिस मामले की जॉच कर रही है। लेकिन अनुसूचित जाति अत्याचार निवारण कानून के तहत पीड़ित परिवार के परिजनों को मिलने वाली सहायता राशि प्रशासन के द्वारा उपलब्ध कराया जा चुका है। जिले के मुफसिल थाना क्षेत्र अर्न्तगत भरौसा गॉव के बधार से एक युवक लाश बरामद की गयी। जिसका सुराग अब तक नही मिल सका है। वही नगर थाना क्षेत्र अर्न्तगत मिर्जापुर में 13 फरबरी को बोरे में बंद खंडित लाश की जानकारी मिलते ही क्षेत्र में सनसनी फैल गयी। हालांकि पुलिस के द्वारा इस घटना का खुलासा कर हत्याआरोपित को गिरफ्तार किया जा चुका है।14 मार्च को खुरी नदी से पॉच बर्षीय बालक की लाश बरामद की गयी। 15 मार्च को जिले के काशीचक थाना क्षेत्र के खखरी गॉव में शौच के लिये गयी महिला के साथ बुरी नियत से छेड़छाड़ करने के विरोध पर महिला के पति पपु यादव एवं ससुर को गॉव के ही रंजीत यादव ने गोली मार दी। जख्मी अवस्था में दोनो को सदर अस्पताल नवादा में भर्ती कराया गया।

कौशल कुमार
डीएम, नवादा

बलात्कार के और महिला उत्पीड़न के मामले में भी जिले के कई क्षेत्रों में मामले सामने आये है 2 फरबरी को गोविन्दपुर थाना क्षेत्र के बस्तुरबा गॉव में नावालिक के साथ रेप का असफल प्रयास गॉव के नीतिश कुमार मुन्ना कुमार आदि के द्वारा किया गया। जिसकी प्राथमिकी थाने में दर्ज कराया गया। 9 फरवरी को रोह थाना क्षेत्र के मंडरा गॉव की नाबालिक स्कुली छात्रा के साथ संजीव कुमार , आदि ने दुष्कर्म किया। 3 मार्च को नरहट थाना क्षेत्र के पासी टोला में पॉच वर्षीय बालिका के साथ 55 वर्षीय लखी साव ने मुहँकाला किया। मामले में आरोपित को गिरफ्तार कर लिया गया। गोविन्दपुर थाना क्षेत्र के माधोपुर पंचायत के जेतसारी गॉव में विवाहिता पुजा की हत्या उसके ससुराल वालों ने कर दिया। 5 मार्च को शाहपुर ओपी अर्न्तगत देवनविगहा गॉव में 13 वर्षीय नवालिक के साथ गॉव के ही बलम कुमार ,चंदन कुमार रहीश कुमार ने शौच जाते समय बलात्कार का प्रयास किया। बलात्कार के दर्जनो मामले पुलिस की निष्क्रियता और सामाजिक प्रभाव के कारण दर्ज नही हो पाते है। कई ऐसे मामले सामने आये है जहॉ बलात्कार की घटना को छेड़छाड़ में बदल दिया गया है।

★ **लूटपाट में भी जिला अव्वल** :– नगर थाना क्षेत्र सहित हिसुआ और नारदीगंज थाना क्षेत्र में दर्जनों मामले लुटपाट और चोरी का दर्ज हुआ है। नगर थाना क्षेत्र में अकेले दर्जनों घरों मे लुटपाट और छिनतई की घटना हो चुकी है। पुलिस लाख प्रयास कर रही है परन्तु क्षेत्र में अपराधिक वारदातों में कमी नही आ रही है। जिले में बढ़ रहे अपराधिक घटनाओं से जहॉ जिलेवासी सकते में है वही पुलिस की कार्यशैली पर भी प्रश्न उठने लगे है। हालांकि विभिन्न घटनाओं में आरोपितो को पुलिस गिरफ्तार भी कर चुकी है। लेकिन आखिर पुलिस प्रशासन का भय और डर लोगो में क्यों खत्म हो रहा हैं लोग अक्सर कानून को अपने हाथ में लेने से क्यों नही हिचकते है बड़ा सवाल है। महिला उत्पीड़न का मामला हो या अन्य सभी मामले में पुलिस की भुमिका संदिग्ध हो जाती है। अनुसंधान के क्रम में लाभ शुभ के आधार पर आरोपितों को लाभ मिल जाता है । कई गंभीर घटनाओं के आरोपित अक्सर बरी हो जा रहे है। न्यायालय में समय पर पुलिस के द्वारा समय पर चार्जशीट दाखिल नही करना और अनुसंधान में देर कर केस को प्रभावित करना पुलिस की नियती बन गयी है। जिसका सीधा लाभ आरोपित को मिल जाता है और फिर घटना को अंजाम देने से नही हिचकते है।

★ **जिले में अवैध रूप से भारी मात्रा में हो रही शराब का निर्माण और बिक्री**
जिले के विभिन्न थाना क्षेत्रों में शराब का अवैध निर्माण और बिक्री धडल्ले से की जा रही है पुलिस के नाक के नीचे शराब का धंधा परवान पर है। पुलिस अपनी सक्रियता साबित करने के लिये एकाध मामले में शराब को जप्त कर इति श्री कर लेती है। वारिसलीगंज थाना क्षेत्र के दर्जनो गॉव में अभी भी शराब का निर्माण और बिक्री परवान पर है। होली के दौरान जमकर विदेशी शराब की बिक्री शराबबंदी कानून को ठेंगा दिखा दी गयी। पुलिस की मिली भगत से करोड़ों रूपय का कारोबार फल–फूल रहा है। दुपहिया वाहनों से लेकर लक्जरी वाहनों से शराब को घर घर पहुँचाया गया। आकड़ें बताते है कि जिले में बीते दिनों अपराधिक वारदातो में बेतहाशा बृद्वि हुई है प्रशासन लाख दावे करे परन्तु आम नागरिक तीव्र गति से बढ़ रहे अपराधिक वारदातों से सहमे हुये है। बहरहाल, पुलिस को अपनी

कार्यशैली और सक्रियता को बदलना होगा। साथ ही साथ घटना की सुचना मिलते ही त्वरित कारवाई करने की नियत होने की भावना को प्रर्दशित करना होगा। गरीब और लाचार लोगो की व्यथा और उत्पीड़न को रोकने के लिये प्रशासन को लचीला और पारदर्शी होने की जरूरत है। वही अपराधिक गतिविधियों में शामिल हो रहे युवा वर्ग को बेहतर माहौल पैदा करने के लिये जागरूकता कार्यक्रम और पुलिस–पब्लिक का बेहतर संवाद कायम करना निहायत ही जरूरी है। अन्यथा गरीब पर हो रहे जुल्म और सितम जब ज्वालामुखी बन कर फुटेगा उस समय प्रशासन और सरकार भी उसकी गर्मी को बर्दाश्त नही कर पायेगी।

★ **महादलितों पर हो रहे जुल्म पर प्रतिवाद मार्च जारी :–** जिले के विभिन्न क्षेत्रों मे महादलित परिवारों को निशाने पर लेकर किये जा रहे हत्या पर विभिन्न राजनैतिक दलों एवं सगंठनों ने इसकी निंदा करते हुये अपराधियों के बढ़ रहे मनोबल को तोड़ने के लिये सरकार को ठोस कदम उठाने को कह रही है वही आये दिन हो रहे घटनाओं के विरोध में प्रतिवाद मार्च एंव पुतला दहन का सिलसिला जारी है। भाकपा माले और भीम आर्मी के कार्यकर्ताओं के द्वारा पीड़ीत परिवारों से मिलकर घटना की जानकारी लेकर न्याय का भरोसा दिलाया जा रहा है। घट रहे घटनाओं की निंदा पूर्व विधानसभा अध्यक्ष उदयनारायण चौधरी, सिरदला की जिला परिषद सदस्य पिंकी भारती, भीम आर्मी के चंदन चौधरी, अनुसूचित जाति छात्रावास के नायक विजय चौधरी, माले नेता भोला राम,नेत्री सावित्री देवी आदि दर्जनों नेताओं ने विभिन्न पीड़ीत परिवारों से भेंट कर घटना की जॉच किया। अपसड़ में टाले मांझी की हत्या के बाद जिले में सियासत गर्म हो गयी। आरोपित भाजपा विधायक के करीबी होने के कारण आरोप प्रत्यारोप का दौर जारी हो गया। उदय नारायण चौधरी एवं जदयू नेता मसीउद्दीन के दौरे के क्रम में आरोपित समर्थको के द्वारा अभद्र व्यवहार पर दलितों मे काफी आक्रोश व्याप्त है। नेताओं के द्वारा दलितों पर हो रहे अत्याचार के खिलाफ आंदोलन की तैयारी भी जोर शोर से प्रारंभ हो रही है। ●

बाजार में दिनों भर बिजली गुल, पानी के लिए हाहाकार

● **मुन्ना पाण्डेय**

स्थानीय थाना से महज पच्चास फीट की दूरी पर स्थानीय बिजली विभाग के विद्युत कर्मी एवं महिला ग्रामीणों के बीच कमोवेश दिनोंभर हाई वोल्टेज ड्रामा चलते रहा। जिसके चलते हरनौत बाजार में पूरा दिन विद्युत आपूर्ति बंद रही। पानी के चलते पूरा जनजीवन अस्त–व्यस्त हो गया। पानी के लिये बाल्टी लेकर कुछ लोग हैंडपम्प के तरफ भी दौड़ते नजर आए। पूरा घटनाक्रम यूं हुआ कि थाना के पास स्थित सदभावना नगर के छह लोगों के मकान के ऊपर से ग्यारह हजार एवं 440 वोल्ट का लाइन प्रवाहित होता था, जिसे बुधबार को ठेकेदार के द्वारा बिजली बनाने के नाम पर छत के ऊपर से गुजर रहे हाई वोल्टेज तार को काट दिया गया। बताते चलें कि प्रखंड परिसर में एक गोदाम का निर्माण की जा रही है, जिसके ऊपर से तार गुजरने के कारण गोदाम बनाने का कार्य बाधित होता रहा था। विद्युत विभाग के द्वारा पोल को पहले स्थान से दूसरे स्थान पर किया जा रहा है। ठेकेदार के द्वारा तार को पलटने के नाम पर शट डाउन कर लेकर मकान के ऊपर से गुजर रहे बिजली तार काटा गया। स्थानीय निवासी

अनिल कुमार ने बताया कि 50 वर्ष पूर्व परित जमीन से ही लाइन जा रहा था, लेकिन धीरे–धीरे आबादी बढ़ते गया और वर्तमान समय में उनके मकान के ऊपर से बिजली प्रवाहित हो रही है। जिसके चलते दर्जनों बार मकान में करंट भी आया है। उन्होंने बताया कि तार हटाने को लेकर 2002 में आवेदन दिया गया था, जिसका स्वीकृति होकर स्थानीय बिजली ऑफिस में आया भी था, लेकिन स्थानीय कर्मियों के द्वारा एक लाख रूपये की मांग की गई थी। जिसके कारण बिजली का तार आज तक नहीं हटाया जा सका। उन्होंने यह भी बताया कि ठेकेदार को तार हटाने के नाम पर बीस हजार रूपये दे दी गई है और बकाया तीस हजार रूपये तार हटाने के बाद देने की बात हुई थी। विभाग के कनीय अभियंता तरूण कुमार ने बताया कि निर्माणाधीन गोदाम से ऊपर गुजर रहे तार को हटाने के लिए ठेकेदार को सट डॉउन दी गई थी, ठेकेदार अपनी मर्जी से मकान के ऊपर से गुजर रहे तार को काटकर हटा दिया, बिना ऊपर के आदेश के लाइन को दूसरे जगह शिफ्ट नहीं किया जा सकता है। इस दौरान स्थानीय निवासी एवं विद्युतकर्मियों के बीच नोक झोंक भी हुई। समाचार लिखने तक तार को ठीक नहीं किया गया है। ●

ओडीएफ अब भी कोसो दूर

● मुन्ना पाण्डेय

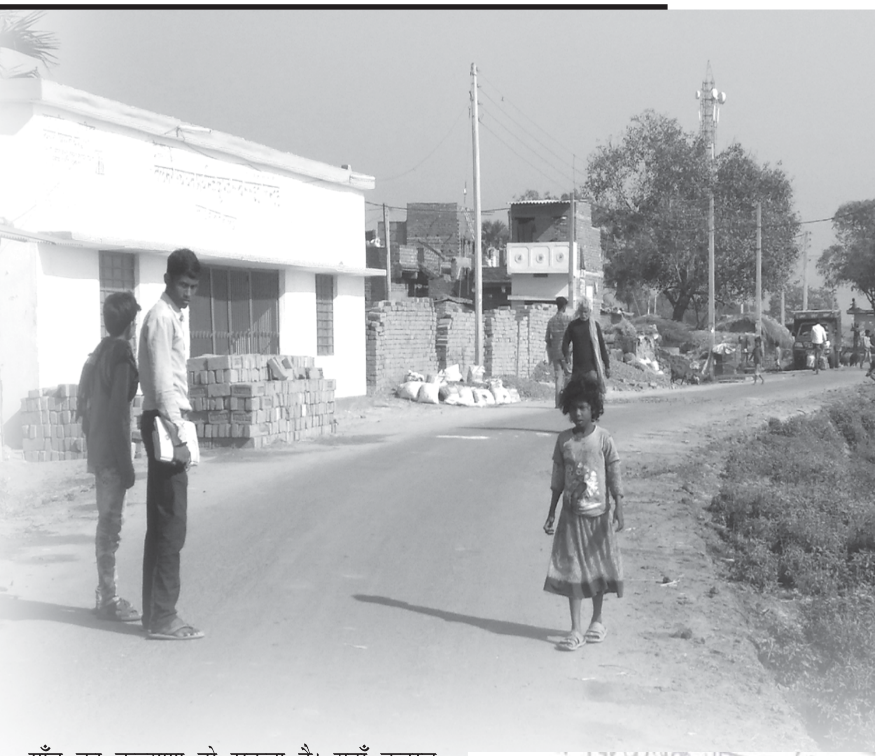

कागजी घोड़े तो खूब दौड़े धरातल पर कार्यवाही नहीं वाली कहावत इन दिनों सी.एम. के गृह प्रखण्ड में देखना आम बात हो गई है। जी हाँ हम बात कर रहे हैं सी.एम. के गृह प्रखण्ड हरनौत के तेलमर गाँव का जहाँ अन्य मामलों को छोड़ भी दें तो भी खुले में शौच मुक्त को लेकर सरकारी फाइलों में भले ही कार्य हो रहा हो धरातल पर कुछ और ही देखने को मिलता है। आबादी के दृष्टिकोण से यह गाँव जिले में बड़े गाँव की श्रेणी में आता है। यहाँ की आबादी करीब दस हजार से ऊपर है। गाँव से गुजरने वाली मुख्य सड़क पर मानव मल का अंबार लगा हुआ रहता है। बच्चे का क्या, बड़े लोग भी यहाँ से गुजरने से गुरेज रहना चाहते हैं। लोग नाक पर रूमाल या गमछा रखकर चलते हैं। स्थानीय लोगों की माने तो यहाँ खुले में शौच मुक्त करने में प्रशासनिक ढील रही है। प्रखंड मुख्यालय से दूर रहने के कारण यहाँ वरीय पदाधिकारियों का आना-जाना भी नहीं के बराबर होता है। सिति यह है कि यहाँ जनता दरबार लगने वाली है, जो गाँव से करीब एक किलोमीटर दूर हाई स्कूल में लगाया जाएगा, ताकि वरीय अधिकारी गाँव के हालात से रूबरू ना हो, ग्रामीणों के मुताबिक गरीबी रहने के कारण उनके पास रहने के लिए ही एक कमरा है, तो शौचालय कहाँ बनाएं। सामूहिक शौचालय से ही गाँव का कल्याण हो सकता है। यहाँ कुटुम्ब परिवार भी आने से दूर रहना चाहते हैं।

मिथलेश कुमार

ग्रामीण सूरज कुमार ने बताया कि यहाँ खुले में शौच मुक्त करने के कार्य में सबसे बड़ी कमी अधिकारियों की है। ये लोग एक दो बार आते हैं। लीपापोती करते हैं और कागज पर ही कार्य कर लौट जाते हैं। जागरूकता अभियान की कमी भी रही है। जागरूकता के लिये पोस्टर बैनर इत्यादि लगाया नहीं गया है। गरीब तबका के लोग यहाँ अधिक है, जिनके पास रहने के लिए मात्र एक कमरा है, तो शौचालय कहाँ से बनाएं। इसके लिए सामुहिक शौचालय बनाने की आवश्यकता है।

सूरज कुमार

सोनू कुमार

ग्रामीण सोनू कुमार ने बताया कि बड़े-बड़े अधिकारी देख कर इधर-उधर निकल जाते हैं। सड़क पर फैली गंदगी के कारण ही लगने वाली जनता दरबार यहाँ से करीब एक किलोमीटर दूर हाई स्कूल में रखा गया है, जिससे बड़े

अधिकारियों की नजर इस पर ना पड़े।

सरकार की तरफ से कोई ध्यान नहीं दी जा रही है। गरीबी बहुत है। कुछ ऐसे लोग हैं, जिनके पास रहने को घर नहीं है, शौचालय कहाँ से बनाएं। सामुहिक शौचालय बनाने की आवश्यकता है। इस गाँव को संसद गोद लिए हैं। हवा हवाई बात करके चले जाते हैं। स्कूल है टेन प्लस टू, लेकिन पढ़ाई नहीं होती है, स्वास्थ्य केन्द्र है, लेकिन डॉक्टर नहीं है, बिहार राज्य में यह कहिए कि सबसे बड़े गंदगी वाला गाँव है। पूर्व वार्ड सदस्य मिथलेश कुमार ने बताया कि कुटुम्ब परिवार भी इस गाँव में एक ही बार आते हैं। गंदगी के कारण दुबारा नहीं आते, तेलमर गाँव मशहूर हो गया है, गंदगी के नाम से।

ग्रामीण सुबोध कुमार ने कहा कि जनता दरबार गाँव में स्थिति मिडिल स्कूल में ही लगाया जाए, ताकि ग्रामीणों की समस्याओं का निष्पादन हो सके।

बी.डी.ओ. देवेन्द्र कुमार ने बताया कि तेलमर में ओ.डी.एफ. पर कार्य चल रहा है। व्यवहार में परिवर्तन करना कठिन है। फिर भी व्यवहार परिवर्तन हो रहा है। दो महीने में तेलमर को भी ओ.डी.एफ कर लिया जाएगा। ●

श्री रामचरित्र मानस मानव जीवन का संविधान : श्री रत्नेश जी महराज

● मुन्ना पाण्डेय

चंडी प्रखंड के सिरनावां पंचायत स्थित कोरनामा गाँव में तीन दिवसीय श्री सीताराम संत सम्मेलन का आयोजन किया गया, कार्यक्रम के दौरान विभिन्न प्रदेशों से साधु संत सम्मेलन में भाग लिए हैं। कार्यक्रम के आयोजक श्री हरिहर प्रसाद सिंह ने बताया कि यह कार्यक्रम ग्रामीणों के सहयोग से पिछले 48 वर्ष से की जा रही है। उन्होंने बताया कि होली के एक दिन बाद चौबीस घंटे का अखंड रामधुनी की जाती है। जिस के अगले दिन से तीन दिवसीय श्री सीताराम संत सम्मेलन का आयोजन किया जाता है। सम्मेलन में आये श्रद्धालुओं के द्वारा धार्मिक पुस्तक श्री रामायण के विभिन्न प्रसंगों का जिक्र व उसके महत्व को बताया जाता है। इस दौरान प्रतिदिन शाम में भंडारा का आयोजन भी की जाती है। भंडारा के दौरान बनाए जाने वाले भोजन भी गाँव के महिलाओं के द्वारा ही तैयार किया जाता है। कार्यक्रम के दौरान आयोध्या के कथा भास्कर जगतगुरू रामानुजम आचार्य श्री रत्नेश जी महाराज ने अपने वाचन में कहा कि श्री राम का चरित्र मानव जीवन का मापदंड है। विश्व संस्कृति को सबसे अधिक किसी का चरित्र अगर प्रभावित किया है, तो वह भगवान

श्री रामचंद्र जी हैं। उन्होंने मानव जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि एक श्रेष्ठ मानव का जीवन श्रीराम की तरह होना चाहिए। श्री राम के अवतार का प्रयोजन भी मानवों को शिक्षा देने के लिए हुआ है। एक तरह से यह कहा जाए कि श्री राम चरित्र मानस मानव जीवन का संविधान है। जो मानव को जीने की कला सिखाता है। उन्होंने कहा कि समाज में नैतिक मूल्यों का पतन बहुत ही तेजी से हो रहा है। जिससे मनुष्य में मानवता खत्म हो रहा है। वर्तमान परिवेश में भाई भाई को बहन बहन को, पुत्र अपने माँ बाप को भी नहीं पहचान रहा है। इससे बचने का एक मात्र उपाय है। वह है धार्मिक कार्यों का आयोजन धार्मिक आयोजन के दौरान संतों के वाणी को लोग अपने जीवन में लागू करें। व्यक्ति के निर्माण में अच्छे वातावरण का निर्माण भी आवश्यक है। कार्यक्रम के दौरान मेला भी लगाया गया, जिसमें कई दुकान झूला आदि भी शामिल है। ●

लोगों की सेवा ही मेरी पहली प्राथमिकता : रणविजय

उड़ने के लिए पंख जरूरी नहीं सपनों में भी जान होनी चाहिए। भारतीय प्रशासनिक सेवा का अधिकारी बनना हर युवाओं की पहली पसंद होती है। कुछ लोग स्कूली टाइम से ही तैयारी शुरू कर देते हैं, तो कुछ लोग इंटर, ग्रेजुएशन से लेकिन आर्थिक रूप से पिछड़े लोग कहीं न कहीं जॉब करते हुए भी अपनी सपनों को जिंदा रखना चाहते हैं। यू.पी.एस.सी. द्वारा संचालित यह परीक्षा देश की नम्बर वन परीक्षा है। इसका परिणाम सबों को नसीब नहीं होता। यहाँ तक कि इस परीक्षा में सफलता हासिल करने वाले छात्र भी श्योर नहीं रहते कि उनका रिजल्ट जरूर आएगा। यह कठिन परिश्रम, त्याग की चीज है। सुखी से जीवन गुजारने वालों के लिए यह असमान का तारा है। देखता ता सब कोई है, मगर महसूस सिर्फ पाने वालों की हो जती है। आज हम 2015 बैच के आई.ए.एस. श्री रणविजय कुमार की बात करेंगे जो अपने सपने को सच करने के लिए क्या-क्या किया, किन-किन परेशानियों से जुझते हुए एवं आई.ए.एस. ही क्यों बनना चाहते थे, इन्हीं सब मुद्दों पर बातचीत हुई। फिलवक्त रणविजय कुमार सहायक प्रशासक संचार भवन, नई दिल्ली में पोस्टेड हैं। **आई.ए.एस. रणविजय कुमार** एवं **श्रीधर पाण्डेय** के बीच हुई बातचीत के कुछ सम्पादित अंश :-

बातचीत के क्रम में आइ.ए.एस. रणविजय ने बताया कि वह मूल रूप से बिहार के ही निवासी हैं। कुछ परिस्थितियाँ ऐसी बनी कि इनके पिताजी श्री रमेश सिंह बलिया के शोभा छपरा में परिवार के साथ शिफ्ट कर यहाँ पर मुर्गी पालन का बिजनेश शुरू किए। पाँच भाई एवं बहनों में वह सबसे बड़े है। प्राथमिक शिक्षा इनकी गाँव में ही हुई है। मैट्रीक की परीक्षा श्री नरहर बाबा इंटर कॉलेज से 2002 में उत्तीर्ण की। आगे उच्च शिक्षा के लिए इलाहाबाद जाने का प्रोग्राम बनाया। घर की पारिवारिक स्थिति भी काफी दयनीय थी, चुकि पिताजी लघु बिजनेश करते थे, परिवार बड़ा था। फिर भी पिताजी ने हमें इलाहाबाद में भेज दिया। वहाँ हिन्दी माध्यम से ही मैंने PAV इंटर कॉलेज में दाखिला लिया, चूंकि आर्थिक तंगी की वजह से अंग्रेजी माध्यम से पढ़ नहीं पाता। मुझे घर से एक हजार रूपये आते थे, जिसमें 800 रूपये किराया में ही चला जाता व सरकारी स्कूल में पढ़ाई की स्थिति भी अच्छी नहीं थी। हमें कहीं ट्यूशन करने की जरूरत पड़ने लगी। शुरू में तो तीन-चार माह पैसा आता रहा। उस समय बैंकिंग व मोबाईल भी इतना विकसित नहीं था कि घर में भी कुछ कहा जाए या समय पर पैसा मिले। घर की भी आर्थिक तंगी को मैं समझ रहा था। मैंने शहर में तकरीबन 10 किलोमीटर दूर जहाँ फोर्थ ग्रेड के लोग रहते थे, उसमें से कुछ लोग क्षेत्र के भी थे वहाँ जाकर 400 रूपये में एक कमरे किराए पर लिया, जिसकी स्थिति बदतर थी, लेकिन इतनी कम रकम में इससे ज्यादा क्या उम्मीद किया जा सकता है। वहाँ रहकर मैंने कुछ बच्चों को ट्यूशन देना भी शुरू किया। वहाँ बच्चे आसानी से मिल जाते थे। उसके बाद अपनी कॉलेज एवं ट्यूशन के लिए निकलता। चूकि शहर से काफी दूरी हो जाने के चलते एक बच्चा जिसको

ट्यूशन मैं दे रहा था, उसके गार्जियन ने मुझे शहर पढ़ने आने के लिए उनकी घर में पड़ी एक लेडिज साईकिल दे दी, जिससे मैं रेगुलरी अपनी क्लास हाइवे होकर जाता। आर्थिक स्थिति इतनी खराब थी कि मुझे तीन-तीन मोजे चप्पल पर पहनकर ठंढे के दिनों में कॉलेज जाना पड़ता। आए दिन हाइवे पर घटना होते रहती मगर मुझे पढ़ने की जिद ने इन सबों पर ध्यान नहीं दिया व मैंने 72% अंकों के साथ इंटर की परीक्षा उत्तीर्ण की। उसके बाद बी.टेक करने का सपना आया। एजुकेशन लोन उस समय इतनी आसानी से नहीं मिल पता। अतएव मैंने अपने सपने को दबाना ही उचित समझा एवं इलाहाबाद विश्वविद्यालय में बी.एस.सी. (गणित) ऑनर्स में नामांकन लिया। जबकि मेरे सारे साथी जो अच्छे परिवार से आते थे इंजिनियरिंग करने चले गए। घर की अब आर्थिक स्थिति और विकराल होते जा रही थी, क्योंकि बहनें अब बड़ी हो चुकी थी व उसके भी पढ़ाई जरूरी थे। जब मैंने ग्रेजुएशन कम्पलीट किया तो मेरी बहन भी उच्च शिक्षा के लिए इलाहाबाद आना चाह रही थी। पिताजी इसके लिए सक्षम नहीं थे। इधर मैं भी परेशान क्योंकि शुरू से ही परिवार के प्रति मेरी गहरी संवेदना रही है।

''लेकिन भगवान के घर में देर है, अंधेर नहीं'' यह कहावत सत्य होती दिख पड़ी उन दिनों कॉलेज में बहुत सारी कंपनियां कैम्पस सेलेक्शन के लिए आई हुई थी, मैंने भी उसका फार्म भरा। सभी कम्पनियों में मेरा सेलेक्शन होगा। चूकि बच्चों को समझाते पढ़ाते हुए यह ज्ञान भी हो गया था कि अपनी बात प्राथमिकता के साथ कैसे लोगों के बीच रखा जाए ताकि एक अलग पहचान बने। बहुत सारी आई.टी. कम्पनियों का इंटरव्यू भी पास किया, कोई तीन, तो कोई चार-पाँच लाख सलाना देने को तैयार था, लेकिन विप्रो कम्पनी ने सात हजार मासिक वेतन के साथ मुझे बिट्स पिलानी से एम.टेक करने का मौका दे रहा था। घर परिवार के सभी सदस्य अपनी सुझाव अच्छी पैकेज वाली कम्पनी को ज्वाइन करने के लिए दे रहे थे, लेकिन मेरा अब बी.टेक के बदले उससे बड़ा एम.टेक करने का हुआ। मैंने विप्रो दिल्ली ज्वाइन कर लिया। यहाँ से तीन दिन कॉलेज के लिए गाड़ी जाती थी और दो दिन ऑफिस का काम करना पड़ता था। अब मैंने अपने 7000 के वेतन से 5000 रूपये घर भेज देता ताकि जिस स्थिति से मैं गुजरा हूँ वह स्थिति मेरे भाई-बहनों को न देखना पड़े। जैसे-जैसे सैलरी बढ़ती गई। मैंने घर पैसा भेजता रहा।

स्कूली दिनों की बात है, रणविजय काफी भावुकता के साथ बताते हैं कि इलाहाबाद युनिवर्सिटी में चुनाव के समय सभी लोग चाहते थे कि वह उनकी प्रचार करे चूंकि गोल्डमेडलिस्ट थे लेकिन कभी भी वह अपने को आकर्षण का केन्द्र नहीं बनने दिया। हलांकि इनके दोस्तों में आज कोई विधायक तो कई मंत्री के आप्त सचिव तो कुछ लोग राजनीति में संघर्ष कर रहे हैं। गर्लफ्रेंड के बारे में चर्चा करने पर बताया कि वह ग्रामीण परिवेश में पले बढ़े हैं जहाँ आज भी लड़के लड़कियों से बात करने में शर्म महसूस करते हैं। घर परिवार में भी खुलकर बात नहीं करते। लेकिन मजाकिया लहजे में बताया कि यह काफी Costly affair है इसके लिए जेब में मनी होनी चाहिए। समय की बर्बादी के साथ-साथ भविष्य पर भी आँच आने का खतरा रहता है, इसलिए इनसे दूर रहना ही उचित समझा। हाँ पर लड़की के रूप में कई मित्र थी लेकिन किसी को खास बनाने की चाहत ही कभी न रहा। इलाहाबाद की धरती पर कई छात्रों के भविष्य को संवरते हुए देखा है। पर कहीं उससे ज्यादा बर्बाद होते हुए भी दिखे जा रहे थे। कुछ छात्र मुझ पर ही हँसते थे कि ग्रेजुएशन करने लेडिज साइकिल से आया है।

आई.ए.एस. बनने के बाद रणविजय कुमार की सोच, समझ एवं परिपक्वता आम से खास बनती गई। दिन-प्रतिदिन नए सोच कार्यविधि एवं अनुशासनता, मृदुभाषी होने के चलते लोगों एवं अपने कर्मचारियों के बीच काफी लोकप्रिय होते दिख रहे हैं। आगे रणविजय बताते हैं कि प्रशिक्षण में उन्होंने बहुत कुछ सीखा, समझा एवं आत्मसात किया जिनसे आज के कार्यों में काफी लाभ मिला है। अनुशासन का एक अलग ही महत्व हैं, जो इनको प्रशिक्षण के दौरान सीखने को मिला। आई.ए.एस. अधिकारी को त्वरित एवं उचित कारवाई करनी चाहिए। कोई भी काम पेंडिंग में नहीं डालना चाहिए। तत्काल समस्या का निदान हो। हर फाइल आम जनता के लिए होती है और उसका सेवक होने के नाते उसकी सेवा के लिए उचित एवं न्यायपूर्ण कदम उठाने में देर क्यूं भला। साथ ही साथ बताया कि सभी सरकारी कर्मचारी एवं अधिकारियों से नम्र निवेदन है कि जनता से जुड़े हुए कार्य को ससमय करना चाहिए, क्विक एक्शन लेनी चाहिए। हर फाइल में एक असहाय, मजबूर पीड़ित व्यक्ति की नजर मुझे आती है, हर व्यक्ति के घर जाकर सेवा करना तो पॉसिबल नहीं है, परन्तु मेरे टेबल पर पड़ी फाइल को ससमय कर देने से उनका कल्याण हो सकता है। विभिन्न जगहों पर सेवा कर चुके रणविजय आज संचार भवन, नई दिल्ली में सहायक प्रशासक के पद पर आसीन है।

बायोमेट्रिक सिस्टम की आवश्यकता भारत जैसे देशों में पड़ने का कारण वह उच्च पद पर आसीन लोग को ही मानते हैं। अगर वह ससमय ऑफिस पहुँच जाते हैं तो बायोमेट्री की जरूरत ही कहाँ खासकर सरकारी संस्थानों में इसकी जरूरत सोचने पर मजबूर कर दिया है। मैं हमेशा 9.15 में अपने कार्यालय पहुँच जाता हूँ तो देखता हूँ मेरे यहाँ सभी कर्मचारी 9.10 से ही आए हुए रहते हें। अगर देश को सशक्त एवं मजबूत बनाना है तो हर एक अधिकारी, कर्मचारी एवं आमलोग अपनी जवाबदेही को पूरी करें।

अंततः एम.टेक फाइनल करने के बाद मुझे विप्रो से 15 लाख का पैकेज का ऑफर मिला। शुरू से ही मुझे सिविल सेवा करना था, सरकारी नौकरी का सपना लिए हुए बैठा था इसलिए मैंने सोचा यहाँ तो पैसों की लालच में सपनों को मरते हुए दम तोड़ना पड़ेगा। फलतः मैंने यह ऑफर ठुकरा दिया। वहाँ के मैनेजर ने सोचा कि अधिक पैसों की चक्कर में मैं कहीं दूसरी कम्पनी ज्वाइन कर लूँ। इसलिए वह मुझे 20-25 लाख तक ऑफर दिया। मैंने उनको अच्छी तरह से समझाया कि देखिए मेरा सपना यह नहीं है, मैं सिर्फ पैसों की दुनिया नहीं देखना चाहता। मैंने गरीबी को काफी नजदीक से देखा है, मैं पब्लिक के बीच रहकर उनकी सेवा करना चाहता हूँ। व उनको भरोसा दिलाया कि मैं कहीं कोई दूसरा कम्पनी ज्वाइन नहीं करने वाला हूँ। लेकिन यहाँ पर भी घर परिवार के लोग सुझाव देने लगे कि इतनी बड़ी नौकरी छोड़कर तुम क्या हासिल कर लोगे? लेकिन मेरे बाबा ने बोला कि ''देखो रणविजय तुम क्या कमाते हो, क्या करते हो ये मुझे मालूम नहीं, लेकिन तुमने समाज के लिए क्या किया, मैं ये नहीं कह रहा हूँ कि तुम समाजसेवी बन जाओ। राजनेता बन जाओ, उसके लिए पैसों की जरूरत होती है, और वो तुम्हारे पास है नहीं, लेकिन तुम एक प्रशासक तो बन सकते हो न, अपनी पद के सदउपयुग कर जहाँ भी रहोगे लोगों की सेवा कर सकते हो एवं उन्होंने मेरी बचपन की एक चिट्ठी दिखाई, जिसमें मैंने दादाजी से वादा किया था कि एक दिन मैं बहुत बड़ा अधिकारी बनकर आऊँगा, निली बत्ती की गाड़ी में पूरे बिहार का भ्रमण कराऊँगा। यह बात मेरे दिमाग पर और जोड़ देने लगा एवं लगा कि मेरे सपनों के पंख मिल गए हो मैंने तत्काल जाकर विप्रो से रिजाईन कर दिया।

अब यहाँ जिंदगी मेरी एक ऐसी मोड़ पर खड़ी थी, चूंकि पाँचसालों की लाइम लाइट की जिंदगी को अलग करना था। कम्प्यूटर, लैपटॉप से दूर रहता था। तब मैंने अपने भाई रौशन सिंह जो विप्रो में जॉब करते थे उनके साथ ग्रेटर नोएडा में रूम लिया एवं भाई से रिक्वेस्ट किया कि देखो इतना दिन तक तो हमलोग जीते रहे अब तुम मेरी मानसिक सहयोग करो। खाना-पीना बनाने का काम, बाहर से राशन, सब्जी लाने का काम सब तुम्हीं करो और मैंने अपने को कमरे में कैद कर लिया। लगातार मेहनत व रूटिंग वर्क करने से मुझे पहले ही वर्ष सफलता मिल गई, जिसका मुझे बेसब्री से इंतजार था। घर परिवार में सभी लोग खुश थे, लेकिन अफसोस रहा कि दादाजी के दिए हुए वचन को पूरा न कर सका। उससे पूर्व ही उनकी मृत्यु हो गई थी। ●

महिलाओं को आत्म-निर्भर बनाना हमारा उद्देश्य : गौरी मुकुल

तुम दान कर चुकी पहले ही जमीन के सोने से सपने, नारी! तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास-रजत-जग-पग, तल में, पीयूष स्रोत सीबहा करो, जीवन के सुंदर समतल में'' प्राचीन युग में ही हमारे समाज में नारी का विशेष स्थान रहा है। हमारे पौराणिक ग्रंथों में नारी को पूजनीय एवं देवी तुल्य माना गया है। भारतीय नारियों ने अपना विशिष्ट स्थान सिद्ध किया। हमारी इन परंपराओं को देखें तो नारियों ने हर समय अपनी योग्यता का परचम फहराया है। आज भी कोई भी परिवार, समाज अथवा राष्ट्र तब तक सच्चे अर्थों में प्रगति की ओर अग्रसर नहीं हो सकता जबतक वह नारी के प्रति भेदभाव, निरादर अथवा हीन भाव का त्याग नहीं करता। आज की जुझारू महिला का व्यक्तित्व उसकी कार्य क्षमता में झलकता है, लेकिन एक पहलू यह भी है कदम-कदम पर आज की महिलाओं को परीक्षा के दौर से गुजरना पड़ता है। उन्हें एक नहीं कई अग्नि परीक्षाओं से गुजरना पड़ता है। हर साल अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के दिन एक निश्चित थीम पर कार्य होता है। इस साल इसका थीम 'प्रेस फॉर प्रोगेस' है, इसका मुख्य उद्देश्य महिलाओं को उनके अधिकारों के लिए प्रोत्साहित करता है। केवल सच राष्ट्रीय मासिक पत्रिका के विशेष प्रतिनिधि **आनन्द प्रकाश पाण्डेय** व जिला संवाददाता **सत्येन्द्र प्रसाद** ने सीवान (इप्टा) की चेयरपर्सन गौरी मुकुल (ताप्ति वर्मा) से कुछ ताजातरीन मुद्दो पर साक्षात्कार किया, प्रस्तुत है इसके अंश :-

✯ आपका नाम

तृप्ति वर्मा (गौरी मुकुल)

✯ अधिकारी के रूप में कौन-कौन से पदों पर काम किया है?

मैं गोपालगंज, बैकुंठपुर से प्रखंड विकास पदाधिकारी के पद से अवकाश प्राप्त की हूँ। डी.आर.डी.ए. सीवान पंचरूखी, सारण में भी काम किया। आंगनबाड़ी पर्यवेक्षिका वयस्क शिक्षा में एल.ई.ओ.तथा कुछ दिन रेलवे में भी काम किया।

✯ एक महिला होने के बावजूद आपने घर और ऑफिस दोनों को कैसे संभाल पायीं?

शुरूआती के दिनों में घर वर ऑफिस संभालना थोड़ा मुश्किल लगता था। लेकिन धीरे-धीरे जिम्मेवारी को संभालने की आदत-सी पड़ गई। अबतक का कार्यकाल बेहतर ढंग से पूर्ण हो पाया। कार्यकाल के दौरान मैं जहाँ भी रही फिल्ड वर्क ही ज्यादा किया। मसलन महिलाओं के अधिकार के प्रति जागरूक करना महिलाओं को स्वावलंबी कैसे बनाया जाय। इस तरह की तरक्की चुनौतियों का सामना करना पड़ता था। चूँकि 10-20 वर्ष पहले की ग्रामीण महिलाएँ काफी संकुचित होती थी, उन्हें इसी बात का पता था कि सिर्फ चूल्हा चौका, बच्चा पालना ही उनका कार्य था। उन्हें इसके इतर अन्य कार्यों के लिए जागरूक करने में काफी मशक्कत करनी पड़ी। हमारा यही उद्देश्य था कि महिलाओं में क्रान्ति आये ताकि वे अपने उद्देश्यों में कामयाब हो सके। महिला शिशु विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत भी मैंने महिलाओं को जानकारियाँ दी गई। इसका असर यह हुआ कि महिलाओं में जो शर्म की दिवार भी ढह गई। वे अपने अधिकार को समझने लगी। उन्हें आभास होने लगा कि बेटी को पढ़ाना उनका धर्म है।

✯ महिलाओं के विकास में आपका क्या योगदान रहा है?

मैंने महिलाओं को घर, चौका, चूल्हे के इतर उन्हें आर्थिक रूप से संबल देकर आत्मनिर्भर बनाने के क्षेत्र में संगठित करने का काम किया। उन्हें लघु उद्योग जैसे कमाची का ट्रेडिशनल ढाका, हरिदास की बिन्दी, पेन स्टैण्ड, फूलदानी, डस्टबीन, पेनरिंग रोड का डब्बा से लेकर अन्य जरूरत की चीज बनायी। प्रगति मैदान, दिल्ली के उद्योग मेले में ये वस्तुएं काफी सराही गई। हमारी महिलाएँ आत्म-निर्भरता के क्षेत्र में कामयाबी की इबारत दिनानुदिन लिखती गई। सर सीवान में शादी के दौरान जो दौरा दिया जाता है, उसे नये स्वरूप में बनाने की शुरूआत करायी जिससे महिलाएँ आत्मनिर्भर होने लगी।

✯ इन सारे कार्यों में लोगों ने विरोध नहीं किया?

पूछिए मत! विरोध तो इतना हुआ कि लोगों ने यहाँ तक कह डाला कि आप हमारे घर की औरतों को बिगाड़ने का काम कर रही है। लेकिन महिलाओं को आत्मनिर्भर और अर्थोपार्जन को देखकर वे भी मनोयोग से साथ देने लगे। फिर हमलोगों ने दोगुने उत्साह से काम करना शुरू कर दिया।

✯ महिलाओं के लिए तो आपने काम गिनाये इसके इतर पुरूषों के लिए आपने क्या किया?

बहुत कड़वा सत्य आपने पूछा है। मैंने गरीबी रेखा के नीचे वाले लोगों के लिए रिक्शा, दर्जी की मशीन, स्टील बक्सा का कारोबार हेतु आर्थिक सहायता प्रदान कराया। आज भी वे अपने व्यवसाय में सफल और आत्मनिर्भर है।

✯ आपने कई जगहों पर सेवा दी है कहीं कोई परेशानी तो नहीं आयी?

देखिए, ऐसा कटु अनुभव मिला बैकुंठपुर बी.डी.ओ. के रूप में। कईयों ने कहा कि बैकुण्ठपुर में बहुत कम लोग ही टीक पाते हैं। मैंने महशूस किया कि राजनीतिक दबाव ज्यादा महसूस हुआ। लेकिन लोगों के मन में कहीं न कहीं यह बात घर कर गई थी कि उन्हें न्याय नहीं मिलेगा। जब उन्हें न्याय मिलने लगा तो उसकी मानसिकता में बदलाव आने लगा। बेस्ट बी.डी.ओ. का पुरस्कार भी मिला था।

✯ आपको अपने कार्यकाल में कई अधिकारियों का सहयोग मिला होगा? कुछ खास अधिकारियों के बारे में बताएँ?

सुधीर प्रसाद, अमृत लाल मीणा, शिशिर सिन्हा, रेयाज अहमद, कृष्ण मोहन प्रसाद, कुमार सुनील, जैसे अधिकारियों को मुझे काफी सहयोग मार्गदर्शन मिला, जिनकी मैं जितनी प्रशंसा करूँ काफी कम होगा।

✯ आप वर्तमान में इप्टा सीवान की चेयर पर्सन हैं। अबतक की उपलब्धि के बारे में बताएँ।

देखिए, मैं इप्टा से छात्र जीवन से ही जुड़ी हूँ। समाज में व्याप्त कुरीतियों को जड़ से उखाड़ फेंकना, युवाओं में लिंग-भेद को समाप्त करना, महिला को आत्मनिर्भर बनाना, उनके उत्पीड़न के खिलाफ लड़ना, अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करना, शराबबंदी, बाल विवाह, दहेज-प्रथा को जड़ से मिटाना ही हमारा मूल उद्देश्य है। उनके मानसिकता को जड़ से मिटाना ही हमारा उद्देश्य है। वैसे भी इप्टा खुद में एक आंदोलन है।

✯ शराबबंदी पर आपकी क्या राय है? क्या सरकार की शराबबंदी योजना पूर्ण रूप से सफल है?

जी नहीं, मुख्यमंत्री की यह योजना पूर्ण रूप से सफल नहीं है, नाम की शराबबंदी है। हर जगह सुविधानुकूल शराब उपलब्ध है। पुलिस वाले छापेमारी भी कर रहे है, लेकिन इसके इत्तर क्या हो रहा है जग जाहिर है।

✯ बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ पर आप क्या कहेंगी?

सरकार की यह योजना काफी सराहनीय है। लेकिन जब मैं महिला प्रसार पदाधिकारी थी तो इन उद्देश्यों पर शुरू से ही काम करती आयी हूँ। उन्हें शुरू से ही विद्यालय भेजने के लिए प्रेरित करती रही हूँ। जो क्रांतिकारी शुरूआत हुई आज हम अपने उद्देश्यों में कामयाब हो रहे हैं। आज बेटियाँ हर क्षेत्र में बाजी मार रही है।

✯ आप होमियो चिकित्सा क्षेत्र में आ रही हैं? इसके खास उद्देश्य क्या है?

मेरी दिली तमन्ना है कि उन गरीबों को मुफ्त चिकित्सा सेवा उपलब्ध करा सकूँ। वैसे लोग विशेष रूप से लाभान्वित होंगे जो गरीबी रेखा से नीचे हैं, उनकी सेवा करके मुझे काफी सुकुन महशूस होगा।

✯ भ्रष्टाचार पर आप क्या कहेंगी?

देखिए, आज के समय में मनुष्य को संतोष नहीं है। संतोष नहीं होने के कारण वह भ्रष्टाचार में लिप्त हो जाता है। भ्रष्टाचार में नीचे से उपर तक भ्रष्टाचार का आलम है। इसके लिए भी आम जनता भी दोषी हैं। आम जनता जिस दिन जागरूक हो जाएगी, तो स्वत: सुधार हो जायेगा।

✯ केवल सच राष्ट्रीय मासिक पत्रिका के माध्यम से आप देश की बेटियों को क्या संदेश देना चाहती हैं?

किसी काम को छोटा मत समझें। कौन क्या कर रहा है, इसको मत देखें? Think positive do positive हमेशा मेहनत से, लगन से कार्य करें, सफलता आपकी कदम चुमेगी।

केंचुआ खाद खेती का वरदान

● मुन्ना पाण्डेय

स्थानीय कृषि विज्ञान केन्द्र में बिहार कौशल विकास मिशन के तहत केंचुआ खाद उत्पादक विषय पर प्रशिक्षण का आयोजन किया गया है। मृदा वैज्ञानिक सह प्रशिक्षक डॉ. उमेश नारायण उमेश ने बताया कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम दो सौ घंटे का है। प्रशिक्षण कार्य में जिले के विभिन्न प्रखंडों के पच्चीस प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ प्रयोगिक कक्षाओं के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जा रहा है। प्रशिक्षण के बाद लोग उसे उद्योग के रूप में भी कर सकते हैं। जिससे उन्हें आर्थिक रूप से मदद मिलेगी, जो उनके परिवार को विकास में मदद पहुँचाएगा।

आज की सघन खेती में भूमि की उर्वरा शक्ति बनाए रखने के लिए प्राकृतिक खादों में गोबर की खाद, कम्पोस्ट, हरी खाद, मुख्य है। कंपोस्ट बनाने के लिए फसलों के अवशेष कूड़ा करकट, गोबर को गड्डे में जमा किया जाता है।

इस प्रक्रिया में समय अधिक लगता है एवं पोषक तत्वों का नुकसान भी होता है। साधारण कंपोस्टिंग प्रक्रिया में ज्यादा समय लगन से से पर्यावरण भी दूषित होता है, इसके वैज्ञानिकों द्वारा कंपोस्ट बनाने की नई विधि विकसित की गई है। जिसमें केंचुआ का प्रयोग किया जाता है। केंचुआ भूमि में अपना महत्वपूर्ण योगदान भूमि सुधारक के रूप में देता है। इनकी क्रियाशीलता मिट्टी में चलती है। मिट्टी में पाए जाने वाले जीवों में सबसे प्रमुख है। अपने आहार के रूप में मिट्टी तथा कच्चे जीवांश निगलकर अपनी पाचन नली से गुजारते हैं, जिससे वह कंपोस्ट में परिवर्तित हो जाते हैं, जिससे वर्मी कंपोस्ट कहा जाता है, केंचुआ की खाद पौष्टिक तत्वों वाली खाद होती है, जिसमें नाइट्रोजन 14 प्रतिशत फास्फोरस 0.5, पोटाश 1.7 प्रतिशत के अलावा अन्य सूक्ष्म पोषक तत्व भी मौजूद होते हैं, केंचुआ खाद को भूमि में देने से भूमि की उपजाऊ क्षमता बढ़ जाती है। इससे मिट्टी में पोषक तत्व एवं जल संरक्षण की क्षमता बढ़ जाती है। फसल की उत्पादन बढ़ जाती है तथा रासायनिक खाद नहीं देने से फसल भी शुद्ध माना जाता है। इसे औद्योगिक स्तर पर करने से एक चक्र में उत्पादक को लगभग दस हजार रूपये का लाभ भी होता है। ●

दर्शकों का प्यार ही मेरे लिए सबकुछ : रीना रानी

'ए रामवचन! कसम खाके कहते है कि आज के बाद तुम्हारा अंगना में टपबे नहीं करेंगे। डायलॉग से एशियाई शेर सोने की चिड़िया कहे, जाने वाले हमारे सपनों के भारत के घर-घर में पहचान बना चुकी है। डुमरी वाली चाची। जी हाँ, हम स्टार भारत के बहुचर्चित ''धारावाहिक'' निमकी मुखिया की। बिहार के महाराजगंज की बेटी रीना रानी की। इस धारावाहिक निमकी मुखिया में हर जुवाँ पर है 'डुमरी वाली चाची'। एक ओर हमार घरवाली, दुल्हनिया लेके जाइब हम, लाल चुनरिया वाली, गंगा तोहरे देश में, प्यार हो गईलत हो गईल, चंदा, अपने-बेगाने, गुंडईराज, रंगबाज राजा, वाह खिलाड़ी वाह, छैला बाबू तू कईसन दिलदार बाऽहो, अंगिका में 'अंगपुत्र', मिथिला में 'आउ पिया हमार' राजकुमार संतोषी की फिल्म 'पावर' तो दूसरी ओर धारावाहिकों में 'फुलवा', झाँसी की रानी', 'सी आई डी', 'क्राइम पेट्रोल', कोई है सावधान इंडिया, 'खानदान', 'बड़ी मालकिन', जैसे धारावाहिकों से घर-घर में पहचान बना चुकी है। केवल सच राष्ट्रीय मासिक पत्रिका के विशेष प्रतिनिधि, बिहार **आनन्द प्रकाश पाण्डेय** की **रीना रानी** (डुमरी वाली चाची) से खास साक्षात्कार :-

✯ आपका नाम?

रीना रानी।

✯ आप किसे अपना आदर्श मानती हैं?

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपिगरियसि। मेरी माताजी मेरा आदर्श हैं, जिन्होंने मुझे सिर्फ मेहनत, ईमानदारी से हक के लिए लड़ना सीखाया है।

✯ अपने अबतक के फिल्मी कैरियर के बारे में बताएँ।

मेरा कैरियर भोजपुरी के भिखारी ठाकुर के नाटक 'गबर घिचोर' के जरिये थियेटर की शुरूआत की। क्योंकि मैं भारतीय जन नाट्य संघ (इप्टा) से जुड़ी रही हूँ। इप्टा स्वयं में एक जन आंदोलन है। आंदोलन की जो भी विचारधारा है वह शुरू से ही मेरे अंदर थी। उसके बाद 1994 में मैं सीवान से पटना आ गई तथा थियेटर में व्यस्त हो गई। लगभग पैंतीस भोजपुरी फिल्मों और ढेरों टेलीविजन धारावाहिकों में काम कर चुकी हूँ। साल 1998 में मिस बिहार का खिताब जीतने के बाद मेरे हौसलों को पंख मिल गए और मैं निरंतर आगे बढ़ते गई। दर्शकों के अपार स्नेह ने मुझे यहाँ तक पहुँचा दिया।

✯ क्या आपने मॉडलिंग भी की है?

जी हाँ। मॉडलिंग, एंकरिंग और एक्टिंग के क्षेत्र में मैंने कार्य किया है। हाल ही में सदी के महानायक अमिताभ बच्चन जी के साथ एक स्वच्छता पर विज्ञापन करने का सौभाग्य मिला है।

✯ देश की बेटियों से आप क्या कहना चाहेंगी?

देश की बेटियों को पढ़ाई के साथ-साथ अपनी जिंदगी का मकसद तय कर लेना चाहिए। शादी के बाद भी कैरियर जारी रखने या बनाने का हक हासिल करने की जरूरत है।

✯ यद्यपि आप एक अभिनेत्री हैं, फिर राजनीति में क्यों आना चाहती हैं?

देखिए, पत्रकार महोदय! सिस्टम को बदलने के लिए सिस्टम के अंदर घुसना जरूरी है। बाहर खड़े होकर लोग राजनीति में बदलाव की बात तो करते हैं, लेकिन राजनीति का हिस्सा बनने से कतराते हैं। लगभग लोग नोट, मुर्गा-दारू पर ईमान को गिरवी रख देते हैं, जिसकी वजह से उनका सिर्फ और सिर्फ शोषण ही करते हैं। जनता 5 साल तक बददुआ देती है फिर 5 साल में भूलकर नोट, मुर्गा और शराब लेकर वहीं काम करती है। जनता की यही नियति बन चुकी है। पढ़े-लिखे लोगों के राजनीति में हिस्सा लेने से ही राजनीति का चाल-चरित्र व चेहरा बदल सकता है। खास कर युवाओं को राजनीति में पहल करनी चाहिए।

✯ आज के दौर में बिहार की बेटियों की क्या स्थिति है?

देखिए, आज के दौर में सरकार, प्रशासन कितनी भी पीठ थपथपा ले बेटियाँ सुरक्षित नहीं हैं। किसी भी क्षेत्र में बेटियों की हालत ठीक नहीं है। मॉडलिंग, थियेटर सिनेमा और राजनीति में घुसकर यही देखा और जाना है। देश की बेटियों की तरक्की केवल राजनीति नोटों, सरकारी योजनाओं और किताबों तक सिमट गई है। हकिकत में चारो तरफ यह असुरक्षित ही महसूस करती हैं।

✯ आप पटना से मुंबई कैसे पहुँची?

एक आम परिवार की तरह मेरे माता-पिता भी चाहत थे कि मेरी बेटी पढ़-लिखकर अच्छी नौकरी करे। एक्टिंग और एंकरिंग के काम को लेकर माता-पिता उहापोह की हालत में रहते थे। लेकिन अनवरत काम, पहचान और पैसा मिलने लगा तो घरवालों ने राहत की साँस ली। पटना में पहचान बनाने के बाद 2008 में मैं मायानगरी मुंबई पहुँच गई।

✯ भ्रष्टाचार पर आपकी क्या राय है?

भ्रष्टाचार की जड़ें चारों तरफ जड़ से फुनगी तक व्याप्त है। भ्रष्टाचार दीमक की तरह पूरे मूल्क को शनैः-शनैः खोखला कर रहा है। हर इंसान इससे त्रस्त है। देश का सच्चा नागरिक होने के नाते प्रत्येक व्यक्ति को भ्रष्टाचार का विरोध करना होगा।

✯ केवल सच राष्ट्रीय मासिक पत्रिका के माध्यम से आप देश की बेटियों/जनता को क्या संदेश देना चाहेंगी?

सर्वप्रथम आपकी पत्रिका का नाम केवल सच है, जिसमें कड़वा सच का ही समावेश रहता है। मैंने पत्रिका परिवार को इसकी बेबाकी व निर्भिकता के लिए साधुवाद देती हूँ। हालाँकि, मेरे चुनाव में केवल सच ने अच्छी खबर बनाई थी, जिसका मैं शुक्रगुजार हूँ। आप लोगों से कहना चाहती हूँ कि देश की बेटियों को मौका दें ताकि वे निष्कंटक ''बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ' के योग्य बनें। यही मेरा संदेश है।

जर्जर होते सड़क को लेकर ग्रामीणों ने मीडिया का दरवाजा खटखटाया

● **मणिभूषण तिवारी**

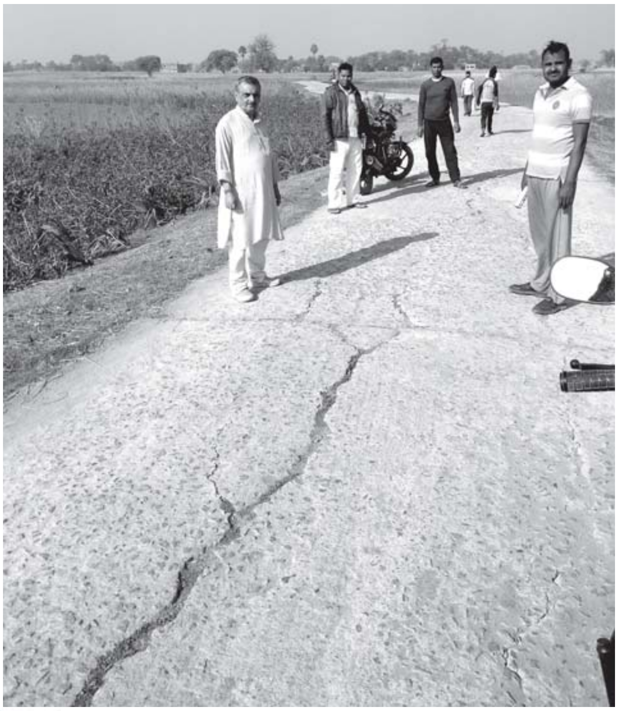

भोजपुर जिले के चरपोखरी प्रखण्ड अन्तर्गत ग्राम-वैदेकारी में प्रधानमंत्री सड़क योजना अंतर्गत सीमेंटेड सड़क का निर्माण वर्ष 2014 में किया गया था। 1.20 किलोमीटर में बने सड़क का निर्माण ग्रामीणों की सुविधा के लिए कराया गया था। मगर ग्रामीणों को क्या पता कि हमारा दुख-दुख ही रहेगा। सरकारी मुलाजिमों के लापरवाही के कारण जनता इतना परेशान है कि अनेकों जगह इसके मरम्मत के लिए मगर किसी ने इसकी सुधी नहीं ली। ग्रामीणों का यह भी कहना है कि काफी मशक्कत एवं जमीन दान देकर हमलोग ने सड़क निर्माण में सहयोग किया, परन्तु दुर्भाग्य की बात ये है कि ठेकेदार के मनमाने ढंग से अप्रशिक्षित लोगों से काम करवाने के कारण यह पथ जगह-जगह दरार का रूप ले लिया है।

अब भरोसा तो केवल मीडिया पर ही है, जो कि सच को उजागर करके समस्या से निजात दिलावें। कोयल पंचायत के पूर्व मुखिया श्री कामलेश्वर मिश्र ने केवल सच पत्रिका के टीम को बुलाया और इस पथ से जुड़े मामले की जानकारी दी। मुखिया जी के अनुसार जब ये पथ ट्रक ले जाने लायक बनाया गया था, परन्तु सच तो यह है कि इस सड़क से कभी कोई ट्रक गुजरा ही नहीं। इसके बावजूद भी इतने कम दिनों में इस सड़क का हालत इतना जर्जर स्थिति तक पहुँच गया है। इससे साफ जाहिर होता है कि इसके निर्माण में घोर लापरवाही ठेकेदार के द्वारा किया गया है। ग्रामीणों का कहना है कि उस समय मुखिया जी के ठेकेदार से अनेकों बार बोले थे कि ठीक से बनाना और ठेकेदार ने आश्वासन भी दिया था कि निर्माण में कोई कमी नहीं रहेगी। पूर्व मुखिया जो कि आज कोयल पंचायत के पैक्स अध्यक्ष है, उन्होंने इस पथ के निर्माण के बारे में जानकारी मुहैया करवाते हुए बताये कि योजना का नाम 1030 से बैदे कोरी पैकेट संख्या BR-07R-0 पथ की लम्बाई 1.20 किमी. प्राक्कलित राशि 95.09 लाख 05 साल तक रख-रखाव की राशि 00.18 लाख कार्य प्रारम्भ की तिथि - 8.042013 कार्य समाप्ति की तिथि - 08.03.2014, संवेदक का नाम- जय बजरंग बली, कंस्ट्रक्शन, रोहतास। कार्यकारी एजेन्सी - कार्य अभियंत्रण ग्रामीण कार्य विभाग प्रमण्डल पीरो, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा संपोषित। ग्रामीणों का कहना है कि अभी एक साल बाकी है तथा 18 लाख रूपया भी है। मगर ठेकेदार है कि सुनता ही नही है वह सरकारी मुलाजिमों के सहायता से उक्त मरम्मत की रखी हुई 18 लाख की राशि को डकार लेना चाहते हैं और हम ग्रामीण ऐसाहोने नहीं देंगे। हमलोग देख रहे हैं, अगर सड़क का मरम्मत नहीं हुआ तो हमलोग ठेकेदार और सरकार के खिलाफ आंदोलन करेंगे। उपस्थित रहे ग्रामीणों में मीडिया को उक्त बातों की जानकारी देने वालों में वार्ड नं.-11 के वार्ड सदस्य प्रतिनिधि सतीश कुमार, उमेश कुमार, महेश प्रसाद, मुन्ना राम, छोटे लाल राम, राजेन्द्र प्रसाद, सरपंच प्रतीमा कुमारी, लीलावती देवी, वार्ड संदस्य 09 के प्रतिनिधि एवं नशार अहमद मौजूद थे। ●

ग्रामीणों ने मीडिया को घेरा

● मणिभूषण तिवारी

भोजपुर जिले के चरपोखरी प्रखण्ड अंतर्गत कोयल पंचायत के कोयल गाँव के पास ग्रामीणों ने 14.03.18 को सुबह नौ बजे नेता समझ कर घेर लिया। ग्रामीणों का कहना था कि चाहे कोई भी नेता या पदाधिकारी हो हम उन्हें इस सड़क से गुजरने वाले सभी लोगों का ध्यान आकृष्ट कराते रहते हैं। ये सिलसिला पिछले 8 वर्षों से जारी है। मामला दरअसल टुटे-फुटे सड़क को लेकर ग्रामीणों का आक्रोश है। उनके अनुसार वर्तमान विधायक अगिआंव विधानसभा क्षेत्र के प्रभुनाथ राम ने आश्वासन दिया था कि फरवरी 2018 में किसी भी हाल में इस अधुरे सड़क का कार्य पूरा कराया जाएगा। इससे पहले पूर्व विधायक शिवेश कुमार ने पाँच साल आश्वासन में गुजार दिये। इस सड़क का नाम मनैनी-पीरो पथ है जो कि लगभग 15 किलोमीटर में है, ये सड़क पक्की सड़क है। मगर दुःख की बात ये है कि लगभग 3 किलोमीटर कच्ची एवं टुटे-फुटे हालत में गढ्ढा के रूप में है। इसके मरम्मत को लेकर ग्रामीणों का कहना है कि ये कौन सा विकास है, सरकार का 12 किलोमीटर सड़क बनाने का क्या फायदा। क्या 12 किलोमीटर सड़क बनवाने में सरकार का पैसा नहीं लगा था या सरकार इतना गरीब हो गई है कि 3 किलोमीटर सड़क नहीं बनवा सकती हैं। वो फिर ये विकास के ढिंढोरे क्यों पीट रही है। इस सड़क से जुड़े जानकारी को ग्रामीणों ने इस प्रकार बयां किया। अगर आरा-पीरो अनुमण्डल से मनैनी बाजार की ओर चलेंगे तो पहला गाँव सारोपुर है, जिसकी आबादी लगभग 300 की है। दूसरा गाँव हरीला है, जिसकी आबादी लगभग 250 की है। इसके बाद रजमलडीह गाँव इसकी आबादी 275 के

करीब है तथा ग्राम नौवां इसकी आबादी 600 के आस-पास है। इसके बाद ग्राम कोयल इसकी आबादी बड़ा गाँव है। इसके बाद ग्राम-ढेढ़ा इसकी आबादी 300 की तथा ग्राम कुम्हैला की आबादी करीब 600 की है। इसके बाद ग्राम इंटौर इसकी आबादी करीब 1100 हके आस-पास है तथा ग्राम काशीडिह की आबादी करीब 200 की है। इसके बाद ग्राम सिजपुराटोला 250 के करीब जनसंख्या वाला है तथा ग्राम इंगलिश टोला 100 एवं रतनिया टोला 150 के करीब है। मनैनी गाँव की जनसंख्या 600 के करीब है और मनैनी बाजार भी है जहाँ की लगभग 20 से 25 गाँव के लोग बाजार करने वाले हैं। इस प्रकार इस सड़क के बदहाली के चलते लगभग 10500 की जनसंख्या अपनी बदहाली पर आँसू बहा रही है। और नेता अधिकारी को इसकी कोई फिक्र नहीं है। आपको जानकारी के लिए बता दें कि इससे जुड़े लिंक पथ से जुड़े गांव है मधुरी, चरपोखरी, चकियाँ, रजमलडीह, भैरोडिह, रेपुरा टोला। यानि कि इस समस्या से करीब 15 हजार लोग जुझ रहे हैं। बरसात के दिनों में यह मार्ग बिल्कुल बंद हो जाता है, क्योंकि नहर के किनारे बने इस सड़क पर गड्ढ़ा इतना ज्यादा है कि कहीं कमर भर तो कहीं छाती पर पानी भर जाता है। जिसके कारण बीमार बुढ़े और बच्चों को पार करना मुश्किल हो जाता है। बरसात में तो साईकिल भी नहीं पार करता तो ऐसे में आप अंदाजा लगा सकते हैं कि यहाँ का जनजीवन कैसा है। मीडिया को घेरने वाले ग्रामीणों में प्रमुख थे। कमलेश राम, कामेश्वर सिंह, अरविन्द राम, योगेन्द्र राय, वीरेन्द्र, ज्ञानचन्द शर्मा, तारकेश्वर राम, योगेन्द्र पासवान, जागा लाल, अशोक ठाकुर, कैफ रहमान, संजीव पासवान, हरिद्वार, सूर्यकान्त कुशवाहा, हुसैन अंसारी, रमेश सिंह, कुशवाहा, आदि। वर्तमान मुखिया के पति तारकेश्वर राम ने ग्रामीणों को बताया कि ये तो केवल सच पत्रिका की टीम है तब जाकर ग्रामीणों ने खबर लिखने के शर्त पर छोड़ा। ●

आप भी बनें पत्रकार

भ्रष्टाचार एवं भ्रष्टों के खिलाफ बेझिझक कलम उठाईये। बेरोजगारी के अभिशाप को मिटायें। देश के सभी प्रदेश की राजधानी और देश के सभी प्रदेश के शहरों में संवाददाता की आवश्यकता है। कर्मचारी नहीं हिस्सेदार बने। जितना श्रम उतना पारिश्रमिक पायें।

सम्पर्क करें:- 9431073769/9955077308/9308727077

डंडेवाली सी.डी.पी.ओ. का तांडव एक नजर में

● बिन्ध्याचल सिंह

जहॉ गोइली खाको रानी ओहीजा ले गोइली आग–पानी'' उपयूक्त भोजपुरी कहावत को चरितार्थ करती हुई प्रखण्ड इटाढी में पदस्थापित समेकित बाल विकास पदाधिकारी श्रीमति कविता कार्यालय में पदस्थापित कर्मचारियो व सेविकाओ को पागल बनने या आत्महत्या करने को मजबुर कर रही है जिसका प्रमाण केवल सच प्रतिनिधी के पास उपलब्ध आवेदन से स्पष्ट होता है। डंडेवाली सी0 डी0 पी0 ओ0 का कहर झेल रही सेविका श्रीमति अंजु देवी आंगनबाडी केन्द्र–37 महिला उतर टोला पंचायत–बसुधर प्रखण्ड–इटाढी जिला–बक्सर। सी0 डी0 पी0 ओ0 के कहर का जहर की घुंट पी रही सेविका अंजु देवी न केवल अपने उपर हो रही अनैतिक कार्य की जानकारी उच्चपाधिकारी को अवगत करा चुकी है;बल्कि चौसा प्रखण्ड में जब श्रीमति कविता पदस्थापित थी; वहा का भी कार्यप़द्धति की जानकारी उच्च पदाधिकारी को अवगत जिसका आवेदक–धर्मेन्द्र पासवान अभियोग संख्या–564सी न्यायालय में दाखिल किया था।जो अभी लंबित है। आंगनबाडी सेविका संघ द्वारा जिला प्रोग्रम पदाधिकारी ;बक्सर को दी गई आवेदन इस प्रकार है।

विषय– बाल विकास परियोजना पदाधिकारी इटाढी द्वारा बार–बार गाली–गलौज अभद्र व्यवहार; अपमानित कराना इतना ही नही डंडा ले मारने दौडना।

महाशय– सविनय निवेदन के साथ कहना है कि हमलोग इटाढी प्रखंड; जिला–बक्सर की ऑगनबाडी सेविका एवं सहायिका है। बाल विकास परियोजना पदाधिकारी द्वारा ऑगनबाडी सेविका सहायिका के उपर तरह–तरह का धमकी देना, अपमानित करना, लाठी तथा डंडा लेकर मारने दौडना, जबतक पैसा लेगी नही तबतक पोषाहार की राशि या मानदेय भेजेंगी नही और बात–बात में चयन रदद् करने की धमकी देती है। बाल विकास परियोजना पदाधिकारी इटाढी के द्वारा सभी सेविका तंग आकर मानसिक रूप से प्रताड़ित हो रही है। सेविका ही नही बल्कि कार्यालय के सभी कर्मचारी तंग होकर मानसिक रूप से परेशान है। उपरोक्त विषय पर श्रीमान से नम्र निवेदन है कि सी0डी0पी0ओ0 का तत्काल तबदला किया जाय इसके बाद कानूनी कारवाई किया जाए;अन्यथा हमलोग धरना प्रदर्शन करेगें और भूख हडताल पर जायेगें। श्रीमान से निवेदन है कि उपरोक्त विषय पर विचार किया जाय, ताकि हमलोग अपने कार्य को सही रूप से कर सकें। अध्यक्ष–शारदा देवी सचिव–सुषमा देवी।

मच्छरों के आतंक से भयभीत हैं लोग

मानव जीवन के लिए आतंक का पर्याय बना हुआ है, मच्छरों की बढ़ती जनसंख्या और हमारे मोदीसरकार के डिजिटल इण्डिया के जुनुन के कारण सभी अधिकारी कर्मचारी स्वास्थ्य को लेकर लापरवाह होते जा रहे हैं। डिजिटल इण्डिया तो सही कदम है, परन्तु ये कहाँ का न्याय है कि स्वास्थ्य जो कि सबसे ज्यादा जरूरी है। इसको दरकिनार करते जा रहे हैं। अगर सरकार कोशिश नहीं करेगी तो और कौन करेगा। मच्छरों के बढ़ते संख्या और बेराइटी के रोकथाम के लिए सरकार के पास कोई योजना, कोई बजट नहीं है। सरकार ने जगह-जगह बैंक खोलवा दिये, जगह-जगह, कौशल विकास योजना के लिए संस्थान खोलवा दिये, मगर जगह-जगह मच्छर भरे हुए हैं, इसपर कौन ध्यान देगा। स्वच्छता मिशन कार्यक्रम के लिए सरकार के पास कोई बजट नहीं है। सिर्फ दिखावे के लिए हाथ में झाड़ू पकड़ लेने से भारत स्वच्छ नहीं हो जाएगा। इसके लिए स्वयंसेवी संस्थानों को धन मुहैया करवाना पड़ेगा। वरना अब वो दिन दूर नहीं जब मच्छर, डेंगू, मलेरिया और कालाजार के साथ-साथ एड्स भी फैलायेगें। सरकार क्या चाहती है कि लोग दिन में दफ्तर में भी मच्छरदानी ओढ़कर बैठें। सभी लोगों का खुन दूषित होता जा रहा है। एक मच्छर एक दिन में हजारों लोगों को काट लेता है, परन्तु हम उस मच्छर को कुछ भी नहीं कर पाते। 'नाना पाटेकर' ने क्रांतिवीर मूवी में ठीक ही कहा थाकि एक मच्छर पूरी दुनिया को हिजड़ा बना सकता है। तो क्या ये सच साबित होने वाला है। कितनी दबाईयाँ खिलाओगे साहब, कितने लोगों को अस्पताल भेजवाओगे साहब अब तो रहम करो बहुत हो गया स्वच्छ भारत मिशन का ढिंढोरा। अब भी अगर ध्यान नहीं दिया गया तो धरती पर इंसान नहीं बचेंगे। सिर्फ मच्छर ही रह जायेगे। सोचिये जरा किसके दम पर आपका सरकार बनेगा। कौन देगा आपको वोट। कौन करेगा आपका प्रचार -प्रसार। क्या डिजिटल इण्डिया मच्छरों के लिए बनवा रहे हैं। कौशल विकास योजना से मच्छर नहीं लाभान्वित होंगे और मच्छर ही डिजिटल इण्डिया का सपना साकार करेंगे। अगर नगर निगम की बातों पर भरोसा करें तो वह मच्छर भगाने के नाम पर सिर्फ प्रदूषण फैलायेंगे। बेवकूफ बनाया जाताहै, लोगों को नगर निगम की मच्छर भगाने वाली गाड़ी को दिखाकर। सरकार के पास मच्छर मारने के लिए कोई स्कीम नहीं है। जो कि तरह-तरह की बिमारियों को पैदा कर रहे हैं। सरकार नहीं चाहती कि मच्छर मरे और उसके प्रजनन की रोक थाम हो, क्योंकि मॉरटीन, गुड नाईट जैसी बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ बन्द हो जाएगी और सरकार का रेवेन्यू का नुकसान होगा। डॉक्टरों और दवा कम्पनियों का भी नुकसान होगा। क्योंकि मच्छर नहीं रहेंगे तो इन्सान को बीमार कौन करेगा। यही सच है इसको झुठलाया नहीं जा सकता। आपको जानकारी के लिए यहाँ बता देना सही होगा कि आज से 20 साल पहले देहातों में एक भी मच्छर नहीं थे। घनी आबादी वाले शहरों में भी मच्छर कम थे परन्तु आज स्थिति में है कि क्या शहर क्या देहात सभी जगह मच्छरों के आतंक का पर्याय है। **प्रस्तुति :- मणिभूषण तिवारी**

बेचैनी एक प्रतिबद्ध राष्ट्रवादी की

● बिन्ध्याचल सिंह

आज कल मन बडा बेचैन रहता है। आज हमारे राष्ट्र में हो क्या रहा है? फिर सोचता हूँ एक प्रतिब़द्ध राष्ट्रवादी के रूप मे मुझें कैसा राष्ट्र चाहिए? मैं धर्मनिरपेक्षता लोकतंत्र साम्यवाद मानवतावाद इस्लाम इसाईयत से बेहद नफरत करता हूँ इस हद तक कि इन्हे जडमूल से समाप्त कर देना चाहता हूँ ताकि अपने आपको एक आदर्श राष्ट्र का नागरिक होने का गौरव प्राप्त कर सकूँ। हमारे जैसो की ऐसी चाहत तो 19वीं सदी के उतरार्द्ध से ही पैदा हो गयी थी, पर संगठित और सशक्त रूप से 1925 से हमने प्रयास शुरू किया, राष्ट्रवाद का प्रयास स्वीकार कर आदर्श राष्ट्र की परिकल्पना इस देश की जनता के सामने रखी। इस्लामी पार्टी ने भी हमारे इस इस सिद्धांत के समर्थन में प्रस्ताव पास कर दिया। लगा था कि अब हम एक आदर्श राष्ट्र देख पायेगें। पर हुआ क्या? इस्लामी राष्ट्र तो राष्ट्र के नाम पर बन गया, देश बंट गया, पर हमारा आदर्श राष्ट्र तो समना ही रह गया। हमने समझा कि धर्म–निरपेक्षता, मानवता और लोकतंत्र जैसी परिकल्पनाएँ ही हमारे आदर्श की राह में सबसे बडी बाधा है और इसका पुरोधा है गाँधी। हमने एसे मौत के हवाले कर दिया। कितनी खुशी मिली थी उस दिन हमने मिठाईयाँ तक बॉटी थी। पर हुआ क्या? गॉधी का भूत इस राष्ट के सर चढकर बोलने लगा। 4–5 सालो तक तो हमें सर ढके; चेहरा छुपाए भटकते रहना पडा। फिर महसूस हुआ कि हम कहीं घुटकर दम न तोड दें, तब हमने लोकतत्र की छद्म चादर ओढ़कर बाहर आने का निर्णय लिया। इस चादर की तासीर ने हमें धीरे–धीरे एहसास दिलाया कि इस लबादे के बूते तो हम सता तक पहुँच सकतें है। एक बार सता हाथ आ गयी तो फिर तो हमारे आदर्श राष्ट्र की कल्पना साकार होते देन नही लगेगी। इस एहसास ने हमें बल दिया हम उसी राह चल दिये। जिन राष्ट्र विरोधी परिकल्पनाओं यथा– धर्मनिरपेक्षता, मानवता कम्युनिज्म इसमियत, इसाइयत को हम समाप्त करना चाहतें थे; उसके लिए लोकतंत्र का छद्म लबादा मुफीद साबित होने लगा। इन पर सीधे आक्रमण की जरूरत हमें पडी ही नही। इसके लिए तो हमारा मातृ संगठन है ही जिसने सीधी कार्रवाई के लिए कई बैनरों से संगठन खडे कर लिये सिर्फ एक केसरिया रंग की साझा पहचान से। इन बैनरो से कभी धर्म के नाम पर; कभी

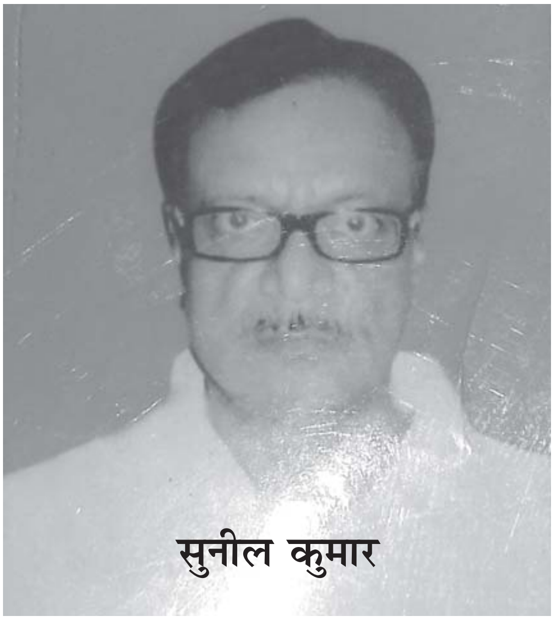

सुनील कुमार

गाय के नाम पर, कभी काश्मीर के नाम; तो कही साम्यवाद के भूत के नाम पर मनचाहा तांडव करातें रहे। लोकतांत्रिक लबादे के बूते सारे बवालो और मारकाट का दोषी बस दूसरे पक्षों को ठहराना भर हमारा काम रहा। धीरे–धीरे जनता हमारे इस माया जाल की जद में आने लगी। सताधारी पार्टियो के राजनीतिक भ्रष्टाचार नीति की असफलता; वंशवाद आदि तत्वों की हमें खूब मदद मिली और कितनी खूबसुरती से हमने इनका इस्तेमाल किया, वाह। हमें मुक्कलम सता हासिल हो गयी। पर आज मन बेचैन है। हमारा आदर्श राष्ट्र? हमारे सपनोका परिवेश? आज हमें उस गॉधी के नाम पर योजनाएँ चलानी पड़ रही है, जिसका आज से 70 वर्ष पहले वधकर दिया था। उस संविधान की दुहाई देनी पड रही है, जिसे हमने गुलामी का प्रतीक घोषित किया था। उस तिरंगे को सलामी देनी पड़ रही है, जिसकी जगह में भगवा लहराना था। धर्म निरपेक्षता को छद्म धर्म–निरपेक्षता तक तो कह पा रहे है; पर उसे नकार देने की कुवत नहीं। अगर हममें से कोई हमारी छद्म रणनीति के तहत खुलकर बोल देता है; तो उससे क्षमा मंगवानी पड रही है या फिर उसे व्यक्तिगत विचार कह के खारिज कर देने की मजबुरी हो जा रही है। मन विचलित हो रहा है– कही यह सब उस लोकतांत्रिक लबादे के कारण तो नही; जिसे हमने आज से 56 साल पहले ओढा था? पर हमने तो उसे भी आज से 41 साल पहले उतार फेका था और गंगा स्नान कर आये थे। अपने केसरिया में थोडा हरा रंग भी मिला लिया था। फिर भी? यह लबादा भी माकूल नहीं लगता। पर क्या करें? इसे भी हटाया तो लोग हमें हिटलर के समकक्ष घोषित करने को तैयार बैठे हैं। आखिर हिटलर ने भी क्या गलत किया? जर्मन 'रेस' को एक सशक्त जाति के रूप में स्थापित करने का सफल प्रयास किया। इस रास्तें में बडे पैमाने पर यहूदियों का कत्लेआम करना था तो किया। इसमें क्या गलत है? हम भी ऐसा करना चाहतें है। एक बार तो 'कचकचाके' होना जरूरी है। पर वाह री दुनिया हिटलर को इतिहास का सबसे बडा खलनायक बना दिया। लेकिन यह क्या हमारा आज का पुरोधा यहूदियों को गले लगा रहा है। हिटलर को भी चिढाना पड रहा है। मन बहुत चिंतित है।––कहीं लोकतंत्र के लबादे में कोई जात तो नही; जिसे हमने अपने को छिपाने के लिए ओढ तो लिया; पर वह हमें ही किसी दूसरी दिशा में लिये जा रहा है? कहीं गॉधी को भूत अभी भी हमारा पीछा तो नही कर रहा? और मुझे बेचैनी तो आज सबसे बडी यह है कि कहीं आदर्श राष्ट्र की हमारी परिकल्पना रूमानी तो नही? मेरे एक सहकर्मी मित्र को मेरी बेचैनी का आभासा हो गया। बोला इतने बेचैन क्यों हो यार। वो पुरानी कहानी वाली कहावत याद हैं? लग्गा लगाया है; पर तिरिया पटियाया है। लगेगा तो लगेगा, नही तो गॉव में तो आया है।'' इसी को ध्यान करों और चैन की नींद लो। ●

● पूनम जायसवाल

भारतीय संस्कृति में नारी के सम्मान को बहुत महत्व दिया गया है। संस्कृत में एक श्लोक है- **यस्य पूज्यंते नार्यस्तु तत्र रमन्ते देवताः।** अर्थात्, जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं। किंतु वर्तमान में जो हालात दिखाई देते हैं, उसमें नारी का हर जगह अपमान होता चला जा रहा है। उसे भोग की वस्तु समझकर आदमी अपने तरीके से इस्तेमाल कर रहा है। यह बेहद चिंताजनक बात है। लेकिन हमारी संस्कृति को बनाए रखते हुए नारी का सम्मान कैसे किया जाए, इस पर विचार करना आवश्यक है। मां अर्थात माता के रूप में नारी, धरती पर अपने सबसे पवित्रतम रूप में है। माता यानी जननी। मां को ईश्वर से भी बढ़कर माना गया है, क्योंकि ईश्वर की जन्मदात्री भी नारी ही रही है। मां देवकी कृष्ण तथा मां पार्वती गणपति-कार्तिकेय के संदर्भ में हम देख सकते हैं इसे। किंतु बदलते समय के हिसाब से संतानों ने अपनी मां को महत्व देना कम कर दिया है। यह चिंताजनक पहलू है। सब धन-लिप्सा व अपने स्वार्थ में डूबते जा रहे हैं। परंतु जन्म देने वाली माता के रूप में नारी का सम्मान अनिवार्य रूप से होना चाहिए, जो वर्तमान में कम हो गया है, यह सवाल आजकल यक्षप्रश्न की तरह चहुंओर पांव पसारता जा रहा है। इस बारे में नई पीढ़ी को आत्मावलोकन करना चाहिए। अगर आजकल की लड़कियों पर नजर डालें तो हम पाते हैं कि ये लड़कियां आजकल बहुत बाजी मार रही हैं। इन्हें हर क्षेत्र में आगे बढ़ते हुए देखा जा सकता है। विभिन्न परीक्षाओं की मेरिट लिस्ट में लड़कियां तेजी से आगे बढ़ रही हैं। किसी समय इन्हें कमजोर समझा जाता था, किंतु इन्होंने अपनी मेहनत और मेधाा शक्ति के बल पर हर क्षेत्र में प्रवीणता अर्जित कर ली है। इनकी इस प्रतिभा का सम्मान किया जाना चाहिए।

अक्सर देखा जाता रहा है कि नारी का सारा जीवन पुरुष के साथ कंधो से कंधा मिलाकर चलने में ही बीत जाता है। पहले पिता की छत्रछाया में उसका बचपन बीतता है। पिता के घर में भी उसे घर का कामकाज करना होता है तथा साथ ही अपनी पढ़ाई भी जारी रखनी होती है। उसका यह क्रम विवाह तक जारी रहता है। उसे इस दौरान घर के कामकाज के साथ पढ़ाई-लिखाई की दोहरी जिम्मेदारी निभानी होती है, जबकि इस दौरान लड़कों को पढ़ाई-लिखाई के अलावा और कोई काम नहीं रहता है। कुछ नवयुवक तो ठीक से पढ़ाई भी नहीं करते हैं, जबकि उन्हें इसके अलावा और कोई काम ही नहीं रहता है। इस नजरिए से देखा जाए, तो नारी सदैव पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर तो चलती ही है, बल्कि उनसे भी अधिक जिम्मेदारियों का निर्वहन भी करती हैं, नारी इस तरह से भी सम्माननीय है। वही विवाह पश्चात तो महिलाओं पर और भी भारी जिम्मेदारियां आ जाती है। पति, सास-ससुर, देवर-ननद की सेवा के पश्चात उनके पास अपने लिए समय ही नहीं बचता। वे कोल्हू के बैल की मानिंद घर-परिवार में ही खटती रहती हैं। संतान के जन्म के बाद तो उनकी जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है। घर-परिवार, चौके-चूल्हे में खटने में ही एक आम महिला का जीवन कब बीत जाता है, पता ही नहीं चलता। कई बार वे अपने अरमानों का भी गला घोंट देती हैं घर-परिवार की खातिर। उन्हें इतना समय भी नहीं मिल पाता है वे अपने लिए भी जिएं। परिवार की खातिर अपना जीवन होम करने में भारतीय महिलाएं सबसे आगे हैं। परिवार के प्रति उनका यह त्याग उन्हें सम्मान का अधिकारी बनाता है। साथ ही बच्चों में संस्कार भरने का काम मां के रूप में नारी द्वारा ही किया जाता है। यह तो हम सभी बचपन से सुनते चले आ रहे हैं कि बच्चों की प्रथम गुरु मां ही होती है। मां के व्यक्तित्व-कृतित्व का बच्चों पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार का असर पड़ता है। इतिहास उठाकर देखें तो मां पुतलीबाई ने गांधी जी व जीजाबाई ने शिवाजी महाराज में श्रेष्ठ संस्कारों का बीजारोपण किया था। जिसका ही परिणाम है कि शिवाजी महाराज व गांधाी जी को हम आज भी उनके श्रेष्ठ कर्मो के कारण आज भी जानते हैं। इनका व्यक्तित्व विराट व अनुपम है। बेहतर संस्कार देकर बच्चे को समाज में उदाहरण बनाना, नारी ही कर सकती है। अतः नारी सम्माननीय है।

गौरतलब है कि आजकल महिलाओं के साथ अभद्रता की पराकाष्ठा हो रही है। हम रोज ही अखबारों और न्यूज चौनलों में पढ़ते व देखते हैं, कि महिलाओं के साथ छेड़छाड़ की गई या सामूहिक बलात्कार किया गया। इसे नैतिक पतन ही कहा जाएगा। शायद ही कोई दिन जाता हो, जब महिलाओं के साथ की गई अभद्रता पर समाचार न हो। क्या कारण है इसका? प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में दिन-पर-दिन अश्लीलता बढ़ती जा रही है। इसका नवयुवकों के मन-मस्तिष्क पर बहुत ही खराब असर पड़ता है। वे इसके क्रियान्वयन पर विचार करने लगते हैं। परिणाम होता है दिल्ली गैंगरेप जैसा जघन्य व घृणित अपराध। नारी के सम्मान और उसकी

अस्मिता की रक्षा के लिए इस पर विचार करना बेहद जरूरी है, साथ ही उसके सम्मान और अस्मिता की रक्षा करना भी जरूरी है।

कतिपय आधुनिक महिलाओं का पहनावा भी शालीन नहीं हुआ करता है। इन वस्त्रों के कारण भी यौन-अपराध बढ़ते जा रहे हैं। इन महिलाओं का सोचना कुछ अलग ढंग का हुआ करता हैं। वे सोचती हैं कि हम अधुनिक हैं। यह विचार उचित नहीं कहा जा सकता है। अपराध होने यह बात उभरकर सामने नहीं आ पाती है कि उनके वस्त्रों के कारण भी यह अपराध प्रेरित हुआ है।

देवी अहिल्याबाई होलकर, मदर टेरेसा, इला भट्ट, महादेवी वर्मा, राजकुमारी अमृत कौर, अरुणा आसफ अली, सुचेता कृपलानी और कस्तूरबा गांधी आदि जैसी कुछ प्रसिद्ध महिलाओं ने अपने मन-वचन व कर्म से सारे जग-संसार में अपना नाम रौशन किया है। कस्तूरबा गांधी ने महात्मा गांधी का बायां हाथ बनकर उनके कंधो से कंधा मिलाकर देश को आजाद करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इंदिरा गांधी ने अपने दृढ़-संकल्प के बल पर भारत व विश्व राजनीति को प्रभावित किया है। उन्हें लौह-महिला यूं ही नहीं कहा जाता है। इंदिरा गांधी ने पिता, पति व एक पुत्र के निधन के बावजूद हौसला नहीं खोया। दृढ़ चट्टान की तरह वे अपने कर्मक्षेत्र में कार्यरत रहीं। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति रोनाल्ड रेगन तो उन्हें चतुर महिला तक कहते थे, क्योंकि इंदिरा जी राजनीति के साथ वाक्य-चातुर्य में भी माहिर थीं।

अंत में यही कहना ठीक रहेगा कि हम हर महिला का सम्मान करें। अवहेलना, भ्रूण हत्या और नारी की अहमियत न समझने के परिणाम स्वरूप महिलाओं की संख्या, पुरुषों के मुकाबले आधी भी नहीं बची है। इंसान को यह नहीं भूलना चाहिए, कि नारी द्वारा जन्म दिए जाने पर ही वह दुनिया में अस्तित्व बना पाया है और यहां तक पहुंचा है। उसे ठुकराना या अपमान करना सही नहीं है। भारतीय संस्कृति में महिलाओं को देवी, दुर्गा व लक्ष्मी आदि का यथोचित सम्मान दिया गया है अत: उसे उचित सम्मान दिया ही जाना चाहिए।

गौरतलब हो कि 8 मार्च को विश्व की हर महिला के सम्मान में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता हैं। लेकिन महिला दिवस मनाए जाने का इतिहास हर कोई नहीं जानता। 8 मार्च को मनाए जाने वाले अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर सम्पूर्ण विश्व की महिलाएं देश, जात-पात, भाषा, राजनीतिक, सांस्कृतिक भेदभाव से परे एकजुट होकर इस दिन को मनाती हैं। साथ ही पुरुष वर्ग भी इस दिन को महिलाओं के सम्मान में समर्पित करता है। दरअसल इतिहास के अनुसार समानाधिकार की यह लड़ाई आम महिलाओं द्वारा शुरू की गई थी। प्राचीन ग्रीस में लीसिसट्राटा नाम की एक महिला ने फ्रेंच क्रांति के दौरान युद्ध समाप्ति की मांग रखते हुए इस आंदोलन की शुरूआत की, फारसी महिलाओं के एक समूह ने वरसेल्स में इस दिन एक मोर्चा निकाला, इस मोर्चे का उद्देश्य युद्ध की वजह से महिलाओं पर बढ़ते हुए अत्याचार को रोकना था। सन् 1909 में सोशलिस्ट पार्टी ऑफ अमेरिका द्वारा पहली बार पूरे अमेरिका में 28 फरवरी को महिला दिवस मनाया गया। सन् 1910 में सोशलिस्ट इंटरनेशनल द्वारा कोपनहेगन में महिला दिवस की स्थापना हुई और 1911 में ऑस्ट्रिया, डेनमार्क, जर्मनी और स्विटजरलैंड में लाखों महिलाओं द्वारा रैली निकाली गई। मताधिकार, सरकारी कार्यकारिणी में जगह, नौकरी में भेदभाव को खत्म करने जैसी कई मुद्दों की मांग को लेकर इसका आयोजन किया गया था।

1913-14 प्रथम विश्व युद्ध के दौरान, रूसी महिलाओं द्वारा पहली बार शांति की स्थापना के लिए फरवरी माह के अंतिम रविवार को महिला दिवस मनाया गया। यूरोप भर में भी युद्ध के खिलाफ प्रदर्शन हुए। 1917 तक विश्व युद्ध में रूस के 2 लाख से ज्यादा सैनिक मारे गए, रूसी महिलाओं ने फिर रोटी और शांति के लिए इस दिन हड़ताल की। हालांकि राजनेता इस आंदोलन के खिलाफ थे, फिर भी महिलाओं ने एक नहीं सुनी और अपना आंदोलन जारी रखा और इसके फलस्वरूप रूस के जार को अपनी गद्दी छोड़नी पड़ी साथ ही सरकार को महिलाओं को वोट देने के अधिकार की घोषणा भी करनी पड़ी। महिला दिवस अब लगभग सभी विकसित, विकासशील देशों में मनाया जाता है। यह दिन महिलाओं को उनकी क्षमता, सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक तरक्की दिलाने व उन महिलाओं को याद करने का दिन है, जिन्होंने महिलाओं को उनके अधिकार दिलाने के लिए अथक प्रयास किए। वही संयुक्त राष्ट्र संघ ने महिलाओं के समानाधिकार को बढ़ावा और सुरक्षा देने के लिए विश्वभर में कुछ नीतियां, कार्यक्रम और मापदण्ड निर्धारित किए हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार किसी भी समाज में उपजी सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक समस्याओं का निराकरण महिलाओं की साझेदारी के बिना नहीं पाया जा सकता। भारत में भी महिला दिवस व्यापक रूप से मनाया जाने लगा है। पूरे देश में इस दिन महिलाओं को समाज में उनके विशेष योगदान के लिए सम्मानित किया जाता है और समारोह आयोजित किए जाते हैं। महिलाओं के लिए काम कर रहे कई संस्थानों द्वारा जैसे अवेक, सेवा, अस्मिता, स्त्रीजन्म, जगह-जगह महिलाओं के

रितु करढ़ाल

मौमिता दत्ता

नंदिनी हरिनाथ

अनुराधा टी.के.

लिए प्रशिक्षण शिविर लगाए जाते हैं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। समाज, राजनीति, संगीत, फिल्म, साहित्य, शिक्षा क्षेत्रों में श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए महिलाओं को सम्मानित किया जाता है। कई संस्थाओं द्वारा गरीब महिलाओं को आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। भारत में महिलाओं को शिक्षा, वोट देने का अधिकार और मौलिक अधिकार प्राप्त है। धीरे-धीरे परिस्थितियां बदल रही हैं। भारत में आज महिला आर्मी, एयर फोर्स, पुलिस, आईटी, इंजीनियरिंग, चिकित्सा जैसे क्षेत्र में पुरुषों के कंधो से कंधा मिलाकर चल रही हैं। माता-पिता अब बेटे-बेटियों में कोई फर्क नहीं समझते हैं। लेकिन यह सोच समाज के कुछ ही वर्ग तक सीमित है। सही मायने में महिला दिवस तब ही सार्थक होगा जब विश्व भर में महिलाओं को मानसिक व शारीरिक रूप से संपूर्ण आजादी मिलेगी, जहां उन्हें कोई प्रताड़ित नहीं करेगा, जहां उन्हें दहेज के लालच में जिंदा नहीं जलाया जाएगा, जहां कन्या भ्रूण हत्या नहीं की जाएगी, जहां बलात्कार नहीं किया जाएगा, जहां उसे बेचा नहीं जाएगा। समाज के हर महत्वपूर्ण फैसलों में उनके नजरिए को महत्वपूर्ण समझा जाएगा। तात्पर्य यह है कि उन्हें भी पुरूष के समान एक इंसान समझा जाएगा। जहां वह सिर उठा कर अपने महिला होने पर गर्व करे, न कि पश्चाताप, कि काश मैं एक लड़का होती।

सनद् रहे कि ऐसे ही कई उदाहरण हैं, जो लड़का और लड़की में फर्क के सोच को बदल रही है। अब तक हम सुनते आए हैं कि हर सफल इंसान के पीछे एक महिला का हाथ होता है, लेकिन अब हम कह सकते हैं कि हर सफल अंतरिक्ष मिशन के पीछे भी एक नहीं बल्कि सैकड़ों महिला वैज्ञानिकों का सहयोग होता है। जी हां, यह बात हम यूंहीं नहीं बोल रहे बल्कि इस बात को सच साबित करती हैं ये 8 महिला वैज्ञानिक, जो हाल ही में हुए सफल अंतरिक्ष मिशन का हिस्सा रही हैं। भारत ने सफलतापूर्वक अंतरिक्ष में चंद्रमा और मंगल की कक्षा में कृत्रिम उपग्रह को स्थापित कर दिया है, वह भी इतनी किफायत के साथ, कि विकसित देश भी इसकी सराहना कर रहे हैं। लेकिन इस सफलता के पीछे, कुछ खास है जो दुनिया कि नजरों के सामने नहीं। सरल और सकारात्मक बुद्धिमान महिलाएं, जो भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान के कई महत्वपूर्ण मिशनों का हिस्सा रहीं। इन महिलाओं के लिए सफलता की सीमा आकाश तक सीमित नहीं, बल्कि उससे आगे का जहां इनका है। ये जोश से भरी हुई सशक्त और आत्म-निर्भर महिलाएं हमारे आसपास दिखाई देने वालीं सामान्य महिलाओं की तरह ही हैं, लेकिन वैज्ञानिक प्रभाव इन्हें कुछ खास बनाता है। आइए मिलते हैं इसरो की इन खास महिला वैज्ञानिकों से -

☞ **रितु करढाल :-** इसरो में कई समस्याओं को विचार-विमर्श से सुलझाने वालीं रितु, दो बच्चों की मां हैं, लेकिन बावजूद इसके वे ज्यादातर सप्ताहांत इसरो में बिताती हैं। जब वे छोटी थीं, तब वे यह देखकर आश्चर्यचकित होती थीं कि चंद्रमा बड़ा और छोटा कैसे होता है। उन्हें हमेशा से चंद्रमा कौतुहल का विषय लगता है जिससे जुड़े कई सवाल उनके दिमाग में थे। लेकिन अब सदियां बीत जाने के बाद वे मंगलयान मिशन की डिप्टी ऑपरेशन डायरेक्टर हैं। बचपन में ही अंतरिक्ष विज्ञान के बारे में हर छोटी-बड़ी जानकारी पढ़ने के बाद आज वे इसरो के जाने माने इस मिशन की प्रमुखों में से एक हैं।

☞ **मौमिता दत्ता :-** मौमिता ने बचपन में चंद्रयान मिशन के बारे में पढ़ा था, और आज वे मंगलयान मिशन के लिए बतौर प्रोजेक्ट मैनेजर काम कर रहीं हैं। उन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय से प्रायोगिक भौतिक विज्ञान में एम.टेक की पढ़ाई की है। वर्तमान में वे 'मेक इन इंडिया' का हिस्सा बनकर प्रकाश विज्ञान के क्षेत्र में देश की उन्नति हेतु टीम का प्रतिनिधित्व कर रही हैं।

☞ **नंदिनी हरिनाथ :-** नंदिनी हरिनाथ अपनी पहली नौकरी के तौर पर इसरो में शामिल हुई थीं और आज 20 साल हो गए, वे निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर हैं। वे स्टार ट्रैक सीरिज को देखने के बाद विज्ञान विषय पढ़ने के लिए प्रेरित हुईं। शिक्षकों एवं इंजीनियरों के परिवार से होने के कारण विज्ञान और तकनीक के प्रति उनका स्वभाविक झुकाव था। आज एक इसरो में डिप्टी डायरेक्टर होते वे 2000 रूपए के नोट पर प्रकाशित मंगलयान मिशन का चित्र देश गौरवान्वित महसूस करती हैं। वे बेहद परिश्रम करती हैं। बच्चे होने के बावजूद वे लांचिंग से पहले कुछ दिनों तक घर नहीं जाती, इसे कहते हैं प्रतिबद्धता।

☞ **अनुराधा टी.के :-** अनुराधा जियोसेट प्रोग्राम डायरेक्टर के तौर पर इसरो में सबसे वरिष्ठ महिला अधिकारी हैं। उनकी उम्र लगभग 9 साल रही होगी, जब उन्होंने यह जाना कि चंद्रमा पर पहुंचने वाले पहले अंतरिक्ष यात्री नील आर्मस्ट्रांग थे। बस यही था एक अंतरिक्ष यात्री बनने का उनका पहला पाठ, जिससे वे सम्मोहित हुईं। एक वरिष्ठ अधिकारी होने के नाते वे इसरो की हर महिला वैज्ञानिक के लिए एक प्रेरणास्त्रोत हैं। विद्यार्थी जीवन में उन्हें तार्किक विषयों को पढ़ने में अधिक रूचि थी, बजाए रटने या याद करने वाले विषयों के। आज वे इसरो के बेहद महत्वपूर्ण विभाग की प्रमुख होते हुए भी अपना वही तार्किक दिमाग लगाती हैं। उनका कहना है कि यहां समानता के व्यवहार के चलते कई बार उन्हें याद नहीं होता कि वे एक महिला हैं या अलग हैं।

एन. वलारमथी

मीनल संपथ

कृति फौजदार

टेसी टॉमस

☞ **एन.वलारमथी :-** भारत के पहले देशज राडार इमेजिन उपग्रह, रिसेट वन की लांचिंग का एन.वलारमथी ने प्रतिनिधित्व किया है। टी.के अनुराधा के बाद वे इसरो के उपग्रह मिशन की प्रमुख के तौर पर वे दूसरी महिला अधिकारी हैं। 52 वर्ष की उम्र में उन्होंने अपने प्रदेश तमिलनाडु को गौरवान्वित किया है। एन.वलारमथी ऐसी पहली महिला हैं जो रिमोट सेंसिंग सेटेलाइट में प्रयुक्त मिशन की प्रमुख हैं।

☞ **मीनल संपथ:** - मंगलयान कक्षीय मिशन के लिए दिन में 18 घंटे काम करने वाली मीनल संपथ, इसरो की सिस्टम इंजीनियर के तौर पर 500 वैज्ञानिकों का प्रतिनिधित्व करती हैं। पिछले दो सालों में उन्होंने रविवार और शासकीय अवकाशों को लगभग अलविदा ही कह दिया। लेकिन इस समझौते का फल भी उन्हें मंगल मिशन की सफलता के तौर पर सबसे बड़ी खुशी के रूप में मिला। अब उनका अगला लक्ष्य राष्ट्रीय अंतरिक्ष संस्थान में पहली महिला डायरेक्टर बनना है।

☞ **कीर्ति फौजदार :-** कीर्ति फौजदार इसरो की कम्प्यूटर वैज्ञानिक हैं जो उपग्रह को उनकी सही कक्षा में स्थापित करने के लिए मास्टर कंट्रोल फेसिलिटी पर काम करती हैं। वे उस टीम का हिस्सा हैं, जो उपग्रहों एवं अन्य मिशन पर लगातार अपनी नजर बनाए रखती है। कुछ भी गलत होने पर सुधार का काम वही करती हैं। उनके काम का समय कुछ अनियमित सा है, कभी दिन में तो कभी रात भर। वे बिना डरे शांति से काम करती हैं क्योंकि उन्हें बस अपने काम से प्यार है। कीर्ति भविष्य में इसरो की बेहतर वैज्ञानिक बनने के लिए एम.टेक करना चाहती हैं।

☞ **टेसी थॉमस :-** टेसी, भारत की वह मिसाइल महिला हैं जिसने अग्नि 4 और अग्नि 5 मिशन में प्रमुख सहभागिता दी। टेसी थॉमस इसरो के लिए नहीं बल्कि डीआरडीओ के लिए तकनीकी कार्य करती हैं। लेकिन वे इस लिस्ट में शामिल होने योग्य हैं। यह उनका परिश्रम और समर्पण ही है जो भारत को आईसीबीएमएस के साथ अन्य देशों के खास समूह का हिस्सा बनाने में सहयोगी रहा। अपनी उपलब्धियों के कारण ही वे मीडिया में अग्निपुत्री के नाम से भी जानी गईं। वर्तमान में 16 हजार से भी ज्यादा महिलाएं इसरो के लिए काम कर रही हैं और प्रगति कर रही हैं। इस बात की कल्पना आसान है कि इसरो में पूरी तरह से पुरुषों का समावेश है, क्योंकि अब तक इसरो के सभी 7 प्रमुख पुरुष ही रहे। लेकिन सच तो यह है कि हजारों महिलाएं हमारे प्रमुख अंतरिक्ष संस्थान के लिए कठिन परिश्रम कर रही हैं।

गौरतलब हो कि इसरो के अलावा भी अन्य क्षेत्रों में महिलाओं ने अपना कृतिमान गढ़ा है और आज ऐसा ही एक उदाहरण है, जिससे देश को इन पर गर्व होगा। बताते चले कि मध्यप्रदेश पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी ने महिला दिवस के मौके पर अरण्य नगर में अनोखा विद्युत जोन बनाया है। इस जोन की विशेषता है कि यहां सभी 25 कर्मचारी महिलाएं हैं। इन महिलाओं ने जोन पर कामकाज संभाल लिया है। इस जोन को विधिवत उद्घाटन महिला दिवस 8 मार्च को किया गया। यह देश का पहला ऐसा बिजली जोन है जहां सभी कर्मचारी महिलाएं हैं। इस जोन का सारा कार्य जैसे बिल बनाना, मीटर रीडिंग, बिल जमा करना, बिल राशि वसूलना, कनेक्शन काटना व जोड़ना जोन पर आने वाली शिकायतों का समाधान करना। नए कनेक्शन जारी करना, ट्रांसफार्मर या लाइन का रखरखाव व प्राथमिक सुधार कार्य सभी कार्य महिलाएं करेंगी। इस जोन पर सहायक यंत्री के रूप में भाग्यश्री दागोड़ व कनिष्ठ यंत्री के रूप में अंशिका खरे पदस्थ की गई हैं। इसके अलावा अन्य कार्य के लिए भी महिलाएं ही तैनात की गई है। जोन मुख्यालय को पिंक स्वरूप दिया गया है। यही नहीं इंजीनियरों का वाहन व फ्यूज कॉल अटेंड करने जाने वालों के लिए वाहन भी पिंक कलर का होगा। वही इनकी कामयाबियों से हर्ष होता है तो दूसरी ओर महिला उत्पीड़न की घटनाओं से देश चिंतित भी है। फलस्वरूप अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने कहा कि महिलाओं के साथ हो रहे अन्याय तथा उनकी पीड़ा दूर करने के लिए केंद्र, राज्य सरकारों, सांसदों, विधायकों तथा समाज के विभिन्न वर्गों को मिलकर संकल्प लेना चाहिए। राज्यसभा में शून्यकाल के दौरान 'अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस' के अवसर पर लगभग 1 घंटे तक चली विशेष चर्चा का जवाब देते हुए स्वराज ने कहा कि महिलाओं ने बहुत सारी उपलब्धियां हासिल की हैं। महिलाएं ऐसे क्षेत्रों में प्रवेश कर रही हैं जिनमें अभी तक पुरुषों का वर्चस्व रहा है। उन्होंने कहा कि हालांकि अभी भी कमियां बाकी हैं। महिलाओं के साथ हो रहे अन्याय तथा उनकी पीड़ा को दूर करने के लिए केंद्र सरकार, राज्य सरकारों, सांसदों, विधायकों को समाज के विभिन्न वर्गों को मिलकर काम करने की जरूरत है। इसके लिए संकल्प लिया जाना चाहिए और एक आंदोलन चलाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि विदेश यात्रा के दौरान वे गर्व के साथ बताती हैं कि भारत में महिलाएं शीर्ष पदों पर रही हैं। देश में महिलाएं राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राज्यसभा की सभापति, लोकसभा अध्यक्ष, राज्य की मुख्यमंत्री तथा राज्यपाल जैसे पदों को सुशोभित कर चुकी हैं। कई राष्ट्रीय राजनीतिक दलों की प्रमुख महिलाएं हैं। स्वराज ने गणतंत्र दिवस समारोह में सीमा सुरक्षाबल की

सुमित्रा महाजन

महिला कमांडो के मोटरसाईकिलों पर हैरतअंगेज प्रदर्शन का उल्लेख करते हुए कहा कि महिलाओं ने ऐसे तमाम क्षेत्रों में अपनी पहुंच बनाई है जिन्हें पुरुषों का आधिपत्य समझा जाता था। दूसरी ओर लोकसभा अध्यक्ष सुमित्रा महाजन ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर शुभकामनाएं देते हुए कहा कि महिला सशक्तीकरण विश्व समुदाय के समक्ष वर्तमान समय की बड़ी चुनौती है। महाजन ने लोकसभा की कार्यवाही शुरू होते ही अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का उल्लेख किया और सदन की तरफ से सभी को इस अवसर पर शुभकामनाएं दीं। उन्होंने महिला सशक्तीकरण यानी महिलाओं को समर्थ बनाना समय की आवश्यकता बताया और कहा कि यह एक प्रकार से विश्व समुदाय के समक्ष बड़ी चुनौती है। उन्होंने कहा कि यदि स्त्री एवं पुरुष को मानवतारूपी पक्षी के 2 पंख मानें तो ऊंची एवं सफल उड़ान के लिए दोनों का समान रूप से सशक्त होना आवश्यक है। लोकसभा अध्यक्ष ने कहा कि अगर हम सब नारी की सर्वांगीण प्रगति तथा महिलाओं के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन के लिए संकल्पित होकर इस दिशा में मिलकर कार्य करें तो मेरा

सुषमा स्वराज

विश्वास है कि विश्व के आकाश में भारत का विकास पक्षी ऊंची उड़ान भरेगा। उन्होंने कहा कि हर साल 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाया जाता है। हर साल इस दिवस की अलग थीम होती है।●

सार्वजनिक स्थल को स्वच्छ रखने से होगा स्वच्छ भारत का निर्माण : रामकृपाल

● अमित कुमार

बीते 10 मार्च को केंद्र सरकार, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, क्षेत्रीय प्रचार निदेशालाय पटना द्वारा स्वच्छ भारत अभियान–स्वच्छ सर्वेक्षण, 2018 के संबंध में लोगों को जागरुक करने हेतु परिचर्चा सह प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता जागरुकता रैली एवं सास्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन श्री सीयाराम सिहं यादव उच्च विद्यालय, शाहपुर, दानापुर में किया गया। जिसका उद्घाटन माननीय केन्द्रीय ग्रामीण विकास राज्य मंत्री श्री रामकृपाल यादव ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर माननीय विधायक श्रीमती आशा सिन्हा, दानापुर विधानसभा क्षेत्र, श्री राजकिशोर यादव, नगर उपाध्यक्ष दानापुर नगर परिषद्, श्री विजय कुमार, निदेशक क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय, पटना श्री शशीभूषण प्रसाद, नगर कार्यपालक पदाधिकारी दानापुर, विद्यालय के प्रर्चाया खुर्शीदा खातून, क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय के श्री नवल किशोर झा एवं अमरेन्द्र मोहन सहित 1 से लेकर 6 वार्ड तक के वार्ड सदस्य एवं काफी संख्या में महिला एवं पुरुष उपस्थित थे।

बताते चले कि अपने उद्घाटन भाषण में माननीय केन्द्रीय ग्रामीण विकास राज्य मंत्री श्री रामकृपाल यादव ने कहा कि पटना जिला 31 मार्च तक ओडीएफ हो जाएगा। साथ ही उन्होने कहा कि बिहार राज्य में 5000 पंचायत ओडीएफ घोषित हो गया है। उन्होने लोगो से आग्रह किया स्वच्छ सर्वेक्षण, 2018 में भाग लेकर पटना शहर को स्वच्छता रैकिग में सुधार के लिए सहयोग करें। निदेशक श्री विजय कुमार ने लोगों को बताया कि स्वच्छ सर्वेक्षण 2018 में भाग लेने हेतु अपने 1969 नं0 किसी भी मोबाईल से डायल कर पूछे गये प्रश्नो का जवाब देकर पटना को स्वच्छ शहर बनाने में भाग ले सकते हैं। उन्होने कहा कि सिर्फ शौचालय बनाने से या अपने घर को साफ करने से स्वच्छता नही आएगी स्वच्छता तब आएगी जब आप अपना शोच बदलेगे तथा शौचालय का उपयोग करेगें तथा अपने घर आंगन को साफ करने के साथ– साथ सार्वजनिक स्थल को साफ रखकर स्वच्छ भारत का निर्माण करेगें। माननीय विधायक श्रीमती आशा सिन्हा ने कहा कि नीले डब्बे में सुखे कचरा एवं हरे डब्बे में गीला कचरा डालें। नगर उपाध्यक्ष श्री राजकिशोर यादव ने कहा स्वच्छता अपना कर हम स्वस्थ रह सकते है। नगर कार्यपालक पदाधिकारी श्री शशिभूषण प्रसाद ने कहा कि नगर को स्वच्छ रखने के लिए नगर परिषद् दानापुर लोगो के प्रति पूरी निष्ठा से प्रतिबद्ध है। मुख्य कार्यक्रम से पूर्व एक जागरुकता रैली निकाली गई। रैली को हरी झंडी दिखाकर विद्यालय की प्रचार्या खुर्शीदा खातुन ने रवाना किया। कार्यक्रम में एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता भी आयोजित की गई तथा गीत एवं नाटक प्रभाग के कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुती दी गयी। ●

विधिक सेवा प्राधिकार के अंतर्गत चल रही योजनाओं का लाभ उठाए : सुनील दत्त मिश्रा

20 दिसम्बर 1967 को, पिता श्री चंद्रहास मिश्रा के घर जन्में सुनील दत्त मिश्रा आज किसी परिचय के मोहताज नहीं। बता दें कि वे 30 अप्रैल 2010 में सुपीरियर जुडिशियल सर्विस में इनकी डायरेक्ट बार से नियुक्ति हुई थी और वह फिलहाल बालसा के सदस्य सचिव के रूप में अपनी सेवा दे रहे हैं। गौरतलब हो कि इससे पूर्व यह बिहार के सासाराम सिविल कोर्ट में एडीजे के पद पर अपनी सेवा दे चुके हैं। आज देश के सभी राज्यों में विधिक सेवा प्राधिकार के तहत कानूनी सहायता दी जा रही है। इस संदर्भ में बिहार राज्य विधिक सेवा प्राधिकार के मुख्य उद्देश्य और कार्यों को जानने हेतु पत्रिका के विधि सलाहकार **शिवानन्द गिरि** ने **सुनील दत्त मिश्रा** से साक्षात्कार किया है, प्रस्तुत है इसके अंश :-

✯ बिहार राज्य विधिक सेवा प्राधिकार के सदस्य सचिव के रूप में पदस्थापित होने पर केवल सच पत्रिका की ओर से आपको बधाई।

धन्यवाद।

✯ बिहार राज्य विधिक सेवा प्राधिकार की स्थापना के पीछे उद्देश्य क्या है?

विधिक सेवा प्राधिकार की स्थापना का उद्देश्य मुफ्त और सरल तरीके से समाज के कमजोर लोगों को न्याय हासिल करने के अवसरों से वंचित नहीं किया जायेगा। कानूनी प्रणाली के संचालन में न्याय को बढ़ावा देने हेतु समान अवसर। सभी के लिए न्याय तक पहुंच कानूनी सेवा प्राधिकरणों का मुख्य उद्देश्य है।

✯ बिहार राज्य विधिक सेवा प्राधिकार के द्वारा कौन-कौन से कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं?

बिहार राज्य विधिक सेवा प्राधिकार के द्वारा नालसा द्वारा बनाये स्कीम के क्रियान्वयन हेतु कार्यक्रम किया जा रहा है। इसके तहत दस योजनाएं चलाई जा रही है। इसके अलावे विधिक सेवा प्राधिकार के द्वारा चलंत लोक अदालत, न्याय समाधान कार्यालय का संचालन किया जा रहा है साथ ही विधिक सेवा प्राधिकार के द्वारा जागरूकता कार्यक्रम भी किया जा रहा है।

✯ वह कौन सी खामियाँ हमारी न्याय व्यवस्था में है, जिसकी वजह से लोकअदालत की स्थापना करनी पड़ी?

लोक अदालत का मुख्य उद्देश्य है कि जटिल न्यायिक प्रक्रिया को सुलभ बनाकर त्वरित एवं नि:शुल्क न्याय जरूरतमंदों तक पहुंचाया जा सके।

✯ आप बिहार राज्य विधिक सेवा प्राधिकार संस्था को और बेहतर ढ़ंग से कार्य करने हेतु इसमें क्या परिवर्तन करने वाले हैं?

जरूरतमंदों तक त्वरित न्याय हेतु जैसा कि विधिक सेवा प्राधिकार अधिनियम की धारा 12 में निहित है। प्राधिकार के द्वारा विधिक सेवा प्रदान करने में संबंधित विभागों, एनजीओं आदि का सहयोग लिया जा रहा है।

✯ अगर किसी आवेदक को जिला विधिक सेवा प्राधिकार के क्रियाकलापों के संबंध में कोई शिकायत हो तो कहां दर्ज कराया जा सकता है?

कोई व्यक्ति इसके लिए अपनी शिकायत बिहार राज्य विधिक सेवा प्राधिकार में दर्ज करा सकता है।

✯ आम जनता को बिहार राज्य विधिक सेवा प्राधिकार के कार्यक्रमों की जानकारी आप किस प्रकार से उपलब्ध कराते हैं?

विधिक सेवा प्राधिकार के द्वारा वार्षिक कलेंडर के साथ चलंत लोकअदालत का आयोजन किया जाता है। जिसके द्वारा आम जनता को विधिक जानकारी एवं विधिक सहायता प्राप्त करने के तरीकों को बताया जाता है।

✯ विधिक जागरूकता शिविर के बारे में आप हमारे पाठकों को अवगत कराने की कृपा करें।

वर्तमान में नालसा के द्वारा एक नए मॉडल के तहत प्रत्येक महीने एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

✯ बलात्कार पीड़िता एवं एसीड अटैक विक्टीम को बिहार राज्य विधिक सेवा प्राधिकार कैसे मुआवजा देती है?

बिहार पीड़ित प्रतिकर स्कीम 2014 के तहत पीड़ित के आवेदन प्राप्ती करने के बाद संबंधित विधिक सेवा प्राधिकार के सीआईसीबी के जाँचोपरान्त मुआवजा दिया जाता है।

✯ बिहार राज्य विधिक सेवा प्राधिकार के द्वारा दिनांक 06/08/2017 को टेली लॉ का शुभारंभ हुआ। इसके बारे में हमारे पाठकों को कुछ जानकारी दे।

इस योजना के तहत टेली कानून नामक एक पोर्टल लाँच किया गया है, जो आम सेवा केन्द्र (सीएससी) नेटवर्क पर उपलब्ध होगा। यह तकनीक सक्षम प्लेटफॉर्म की सहायता से नागरिक सेवा प्रदाताओं को

कानूनी सेवा प्रदाताओं से जोड़ देगा। टेली लॉ लोगों को आम सेवा केन्द्रों (सीएससी) में उपलब्ध वीडीओं कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से वकीलों से कानूनी सलाह लेने में सक्षम होगा। इसके अतिरिक्त कानूनी सहायता और सशक्तिकरण पर काम कर रहे कानून स्कूल, क्लीनिक, जिला कानूनी सेवा अधिकारियों, स्वैच्छिक सेवा प्रदाताओं और गैर सरकारी संगठनों को भी सीएससी के माध्यम से कही और कभी भी जोड़ा जा सकता है, ताकि समुदायों के लिए न्याय की पहुंच मजबूत हो सके। नेशनल लीगल सर्विसेज ऑथोरिटी राज्य की राजधानियों से वकीलों का एक पैनल प्रदान करेगी, जो वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से उपलब्ध होंगे, ताकि एक हजार समान्य सेवा केन्द्रों (सीएससी) में आवेदकों को कानूनी सलाह और परामर्श प्रदान किया जा सके। एक मजबूत निगरानी और मुल्यांकन प्रणाली भी तैयार की जा रही है, जो प्रदान की गई कानूनी सलाह की गुणवत्ता का आंकलन करने में सहायता करेगी और उन तक पहुंचने वाले लोगों के लिए लाभकारी होगा। बिहार राज्य विधिक सेवा प्राधिकार में दो अधिवक्ता टेली लॉ सेंटर में उपलब्ध रहते हैं। बिहार राज्य के 18 जिलों में टेली लॉ सेंटर कार्य कर रहा है।

✯ आप हमारे पाठकों को क्या सलाह देंगे?

हम यही कहेंगे कि लिगल सर्विसेज ऑथोरिटी के अंतर्गत विभिन्न योजनाएं चल रही है, उनसे जुड़कर लाभ उठाए तथा लोगों को जागरूक करें। छोटे-मोटे मुकदमों का सुलह करके एडीआर सिस्टम के अंतर्गत निपटारा कराएं। आम जनों से समाज के प्रत्येक व्यक्ति अपने कार्य के प्रति पूर्ण निष्ठा एवं ईमानदारी रखे।

अब होली वैसी नहीं रही

● आयुशी अंशुमन

हमारी जिदंगी इंद्रधनुष कि तरह होती है जिसमे प्रकृति के सारे रंग मौजूद है, पर यह निर्भर करता है हमपर कि हम किस रंग को कितना महत्व देते है। अगर एक तरह से देखा जाए तो रंग हमारे सारे भावनाओ को व्यक्त करने में सक्षम है, अगर हमारे मन के अंधेरे का रंग "काला" है, तो वही रोशनी कि एक किरण "श्वेत" अगर हमारी क्रोध "लाल" है तो मुस्कान "गुलाबी" हमरी जिंदगी में रंगो कि क्या जगह है ये हमसे बेहतर और कोई नही जानता द्य जब रंग हमसब के जीवन में इतने ही अहम है तो एक दिन तो ऐसा होना ही चाहिए जिस दिन हम सारे रंगो से बेझिझक, आँखो में रोशनी और ओठों पर एक बड़ी सी मुस्कान लिए मिलें। हम भारतवासी कभी भी त्योहार मनाने से पीछे नही हटते, हमारे यहाँ हर खुशी त्योहार बन जाती है। जिस तरह हम शक्ति के प्रतीक के रूप में दुर्गापूजा मनाते है, रोशनी के प्रतीक के रूप में दिपावली मनाते है उसी प्रकार रंगो के प्रतीक के रूप में हम होली मनाते है।

यह अपनेपन का त्योहार है, इस दिन बड़े-छोटे, ऊँच-नीच सबके बीच का फर्क खत्म हो जाता है और सब साथ में मिलकर रंगो से खेलते है। यह पर्व वैसे तो वसंत आगमन कि खुशी में फाल्गुनी पुर्णिमा को मनाया जाता है पर जैसे हमारे देश में हर पर्व के पीछे एक पौराणिक कथा जूड़ी हुई होती है वैसे ही इस पर्व के पीछे भी कई कहानियाँ छिपी है। एक कथा के अनुसार हिरण्यकशिपू नामक राक्षस अपने ईश्वर भक्त पुत्र प्रह्लाद को मारने के कई उपाय कर चुका था पर हर बार वो विफल हो जाता था, तब उसने अपनी बहन होलिका को बुलवाया जिसे वरदान प्राप्त था कि वह आग में नही जल सकती द्य होलिका प्रह्लाद को लेकर आग में जा बैठी, पर प्रह्लाद का बाल भी बाँका ना हो सका और होलिका उसी आग में जल कर मर गई। इसके बाद से ही होलिकादहन और होलिकोत्सव अधर्म के ऊपर धर्म तथा बूराई के ऊपर अच्छाई के जीत कि खुशी में मनाया जाता है। होली वैसे तो पूरे देश में बड़ी ही मौज-मस्ती के साथ मनाया जाता है, पर इसका सबसे विशेष और मनमोहक दृश्य हमे वृंदावन में देखने को मिलता है द्य होली कि एक कथा वृंदावन से भी जूड़ी है, कहते है कि जब भगवान श्रीकृष्ण ने दुष्टो का दलन कर गोपबालाओ के साथ रास रचाया तब होली का प्रचलन हुआ। ऐसा सुनने में आता है कि पुराने समय में वँहा फुल से होली खेली जाती थी, और वही परम्परा आज भी कई जगहो पर बरकरार है, कितना मनमोहक होता होगा वह दृश्य, ना प्रदूषण, ना रसायनीक रंग सिर्फ चारो ओर अनेक रंगो के फुल और उन फुलो कि खुशबू, यह सोचकर ही मन तृप्त हो जाता है तो वास्तविकता कितनी आनंदमयी होगी। सिर्फ वृंदावन ही नही पूराने समय में पूरे भारत में ही लगभग वैसी ही होली खेली जाती थी, भले ही हर जगह फुल कि जगह रंग इस्तेमाल किये जाते थे पर वो रंग भी घर के ही चीजो से बनाए जाते थे। उस होली कि व्याख्या आज भी हमे अपने बड़ो कि जुबानी सुनने को मिलती है, वे कहते है कि कैसे होली के दो दिन पहले से ही सबका मन उत्साह तथा उत्सुकता से भरा रहता था, होलिका दहन कि रात्रि सब एक जगह इकट्ठा होकर होलिका जलाते और फिर अगले ही दिन सब एक साथ मिलकर रंगो से खेलते, फागून के गीत गाते तथा एक दूसरे के घर के पकवान बड़े चाव के साथ चखते द्य इनसब बातो को सुनकर ऐसा लगता है कि मानो आज कि पीढी इनसब चीजो से वंचित रह गई।

आज तकनीक हम इंसानो पर इस कदर हावी हो रहे है कि हम अपनी संस्कृति को धीरे-धीरे भूलते जा रहे है, सोशल मीडिया साइट्स का क्रेज इतना बढा हुआ है कि अब रंग खेलना तो दूर, कोई किसी के घर तक नही जाता सब दूर बैठे ही मोबाइल से सबको त्योहार कि शुभकामना दे देते है। आज होली बस घर बैठे टीवी देखने में और मोबाइल चलाने में बीतती है द्य गाँव कि हालत शहर से कुछ ठीक है क्योकि शहर कि तुलना में तकनीक का चलन थोड़ा कम है, पर वँहा भी लोग रंगो कि जगह एक दूसरे पर नाली का पानी, कीचड़ तथा पत्थर फेकते है, ताड़ी, दारू, गाँजा, भाँग, तथा चरस पीकर, शर्मनाक गाने और गाली गलौज करकर मनाते है। कहते है भारत त्योहारो का देश है, यँहा मनाए जाने वाला हर त्योहार इसके सभ्यता का प्रतिबिंब है। त्योहारो को भूल जाना मतलब अपनी संस्कृति, अपने संस्कार को भूल जाने जैसा है। भले ही इस पर्व को मनाने के पीछे हजारो धार्मिक कारण हो सकते है, पर हमारे पूर्वजो ने इसकी शुरूआत बस इसलिए कि होगी कि हम उनकी आने वाली पीढियाँ रंगो से मिल पाए उनमे छिपे खुशियों से मिल पाए। यह हमारे लिए उनका एक आशीर्वाद था, पर क्या इस तरह त्योहार मना कर हम उनके आशीर्वाद का अपमान नही कर रहे? जड़ा एक बार सोचिए। ●

कोयले के धंधे में लूट की छूट

● गगन मिश्र/धीरज कुमार

आइए, चलिए केवल सच के साथ। आपको दिखाते हैं कोयले के धंधे में लूट की महाछूट एवं कैसे कर रहे हैं सीसीएल के पदाधिकारी एवं जिला प्रशासन, स्थानीय नेता, कोयला विभाग का बंटाधार। इसी कड़ी में लेकर चल रहे हैं हम झारखण्ड के रामगढ़ जिले के कुजू क्षेत्र में सारूबेड़ा कोयलरी। अगर हम झारखण्ड की बात करे और कोयले की बात न हो तो बेइमानी होगी और कोयले तथा काजल के बीच स्पर्श करेंगे तो काला होना स्वभाविक है। अंतर सिर्फ इतना है कि कोयले का दाग कलंकित करेगा और काजल आँखों को सुमार। रामगढ़ कुजू सारूबेड़ा कोयलरी में रोड सेल एवं लोकल सेल के नाम पर न जाने कितने प्रशासनिक पदाधिकारी, प्रबंधन, नेता एवं पत्रकारगण दागदार हो रहे हैं। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि सारे पदाधिकारी एवं पत्रकारगण गलत हैं। जिले में ईमानदार अधिकारियों की कमी नहीं है लेकिन सारूबेड़ा कोयलरी में रोड सेल एवं लोकल सेल के नाम पर जो हो रहा है, उससे कलंकित होना स्वभाविक है। निश्चित ही यह दाग धोने की जरूरत है, नहीं तो सीसीएल प्रबंधन एवं जिला प्रशासन पर प्रश्न उठना स्वभाविक हो जाता है। इसी के कवरेज में केवल सच टीम द्वारा किया गया महाकवरेज पर एक झलक :-

प्रभावित ग्रामीण

☞ लोकल सेल एवं रोड सेल एक अवैध वसूली का एक माध्यम है।

☞ ग्रामीण विस्थापित एवं प्रभावित बेरोजगारी दूर करने के नाम पर अवैध कारोबार।

☞ सीसीएल प्रबंधक असली खिलाड़ी।

☞ प्रबंधक के ही पांच दलालों के हांथों में है कमान।

☞ प्रबंधक, जिला प्रशासन, नेता एवं पत्रकारों की है इसमें मिलीभगत।

☞ हर ट्रक लोडिंग, लिफ्टिंग के नाम पर दस से बारह हजार प्रति गाड़ी अवैध वसूली की संभावना।

☞ प्रत्येक दिन दस से बारह लाख का खेल की संभावना।

☞ अपनी-अपनी जोड़ का खेल। (आधा में नरयैना और आधा में पूरा घरैना) 40 और 60 प्रतिशत में फंसा है पेंच। सारे पंचायत प्रतिनिधि से लेकर के विधायक तक की हिस्सेदारी की लड़ाई।

☞ कोयला, डीओ होल्डर (व्यापारी) को हो रहा है भारी नुकसान। समय से उठाव नहीं होने के कारण कोल इंडिया लगा रहा है भारी चूना।

☞ पैसे की बंदरबांट के लिए कभी भी हो सकती है खूनी संघर्ष।

☞ आरा, बघलत्ता, सारूबेड़ा और बथान टांड़ प्रभावित।

☞ अभी तक नहीं हुआ है दंगल का गठन।

☞ प्रबंधन पदाधिकारी, स्थानीय प्रशासन एवं जिम्मेवार नेतागण झाड़ रहे हैं पल्ला। आखिर किसकी बनती है जिम्मेवारी?

☞ ग्रामीणों को नहीं मिल रहा है उचित लाभ।

समय रहते अगर प्रबंधन एवं प्रशासन उचित निर्णय नहीं लेता है, इसी तरह कुंभकर्णी नींद में सोया रहता है तो इसकी जिम्मेवारी किस पर होगी। ●

(केवल सच प्रमाणिकता के साथ अगले अंक में पढ़े विस्तार से नाम, पद एवं कार्यगुजारी। करेंगे हम इस लूट का भंडाफोड़। जाएंगे तह तक और रखेंगे पूरी नजर और मिलेगी पूरी जानकारी)

✯ मेरा एंटीसिपेट्री बेल जज साहब के यहाँ से लड़की के अपहरण के अपराध में हुआ था, उसमें लड़की का प्रेमी और लड़की की गिरफ्तारी हुई थी। लड़की ने अपने प्रेमी के खिलाफ सीआरपीसी की धारा 164 में गवाही में बयान दी थी, किन्तु मेरे बारे में कुछ नहीं कहा था और अब पुलिस द्वारा मेरे खिलाफ और लड़की के प्रेमी के खिलाफ अपहरण एवं बलात्कार के अपराध की धाराओं में चार्जसीट भेज दिया गया है। तो क्या मुझे फिर से बलात्कार के अपराध की धाराओं में बेल लेना पड़ेगा?

एक बार जब किसी अजमानतीय अपराध में बेल मिल जाता है तो फिर किसी अन्य अजमानतीय अपराध की धाराओं में उसी मुकदमा में दूबारा बेल लेने की जरूरत नहीं है। आप न्यायालय में आत्म-समर्पण करके एक प्रेभियस बेल पिटिशन फाईल करें और अधिवक्ता के माध्यम से न्यायालय को यह बतलायें कि उक्त केश में आप पूर्व से जमानत पर हैं और चार्जसीट आने के बाद आप न्यायालय में प्रथम बार उपस्थित हो रहे हैं और केश को लड़ने के लिए तैयार हैं। इसलिए आपको पूर्व के ही जमानत पर रहने दिया जाये। केश के ट्रायल में यह फैसला बाद में होगा कि आप अपहरण एवं बलात्कार के दोषी हैं कि नहीं। गौरतलब है कि अगर किसी मुदालय को जमानतीय अपराध में बेल मिलता है और चार्जसीट अजमानतीय अपराध की धाराओं में पुलिस द्वारा न्यायालय को भेजी जाती है तो वैसी परिस्थिति में मुदालय को अजमानतीय अपराध की धाराओं में भी जमानत लेने की आवश्यकता होती है।

✯ यदि किसी व्यक्ति द्वारा किसी अपराधी को अपने यहाँ संरक्षण दिया जाता है, इसके लिए किस प्रकार की सजा का प्रावधान है?

यदि किसी अपराधी ने कोई अपराध किया है तो कोई व्यक्ति यह जानते हुए कि वह अपराधी है एवं उसने अपराध किया है एवं उसे अपने यहां संरक्षण देता है तो संरक्षण देने वाला व्यक्ति भी अपराधी माना जायेगा तथा ऐसे व्यक्ति को आईपीसी की धारा 212 एवं 216 के तहत सजा दिया जा सकता है। यदि आईपीसी की धारा 212 के अनुसार अपराधी द्वारा किया गया अपराध मृत्युदंड से दंडनीय है तो संरक्षण देने वाले को पांच वर्षों तक की सजा और जुर्माना इत्यादि दिया जा सकता है और यदि अपराध आजीवन कारावास दस वर्ष तक के लिए कारावास से दंडनीय है तो उस दीर्घत्तम अवधि की एक चौथाई का कारावास एवं जुर्माना या दोनो से दंडित किया जा सकता है। आईपीसी की धारा 216 के अनुसार यदि अपराधी जो कि पुलिस कस्टडी से निकल भागा है या जिसे पकड़ने का आदेश दिया जा चुका है और यदि अपराध मृत्युदंड से दंडनीय है तो संरक्षण देने वाले को सात वर्ष की सजा या जुर्माना या दोनो प्रकार के दंडों से दंडित किया जा सकता है और यदि अपराध आजीवन कारावास या दस वर्ष के कारावास से दंडनीय है तो संरक्षण देने वाले व्यक्ति को जुर्माना सहित या जुर्माना रहित तीन वर्ष या एक वर्ष से लेकर दस वर्ष के लिए कारावास से दंडनीय है तो उस अपराध की सजा के दीर्घत्तम अवधि की एक चौथाई का कारावास या जुर्माना या दोनो से दंडित किया जा सकेगा।

✯ यदि कोई महिला अपने पति पर दहेज उत्पीड़न का मुकदमा करना चाहती है तो, क्या वह अपने मायके एवं ससुराल से अलग किसी अन्य तीसरे शहर के न्यायालय में मुकदमा कर सकती है?

यदि महिला अपने ससुराल या मायके से अलग किसी तीसरे शहर में निवास कर रही हो तो वह उस शहर से भी मुकदमा कर सकती है, जहाँ वह रह रही है। यह जरूरी नहीं है कि मुकदमा मायके या ससुराल के शहर में ही किया जाये। इसके लिए उन्हें अपने दहेज उत्पीड़न के परिवाद पत्र में वर्तमान पता देना जरूरी होता है, जहां से वह उक्त परिवाद पत्र फाइल करना चाहती है।

✯ किसी मुदालय की गिरफ्तारी कैसे की जानी चाहिए?

कानूनी सलाह

शिवानंद गिरि

(अधिवक्ता)

Ph.- 9308454485

E-mail :- shivanandgiri5@gmail.com

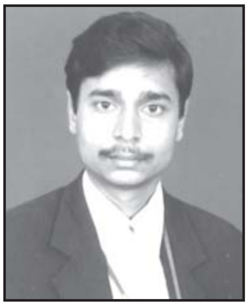

कोई पुलिस अधिकारी या अन्य किसी व्यक्ति जो गिरफ्तारी कर रहा है। गिरफ्तार किए जानेवाले व्यक्ति के शरीर को छूकर या परिरूद्ध करके करेगा। जब तक की उसने वचन या कर्म द्वारा अपने को अभिरक्षा में समर्पित न कर दिया हो। यदि ऐसा व्यक्ति अपनी गिरफ्तारी किए जाने के प्रयास का बलपूर्वक विरोध करता है या गिरफ्तारी से बचने का प्रयास करता है तो ऐसे पुलिस अधिकारी या अन्य व्यक्ति गिरफ्तारी करने के लिए आवश्यक जरूरी साधनों को उपयोग में ला सकता है। यदि अपराधी पर मृत्यु दंड या आजीवन कारावास से दंडनीय अपराध का अभियोग नहीं है तो कानून उस अपराधी को मृत्युकारित (इनकाउंटर) करने की पुलिस या गिरफ्तार करने वाले व्यक्ति को इजाजत नहीं देती है। असाधारण परिस्थितियों के खिलाफ कोई स्त्री को सूर्यास्त के बाद और सूर्योदय से पहले गिरफ्तार नहीं किया जा सकता है और जहां ऐसी परिस्थितियां विद्यमान है वहां स्त्री पुलिस अधिकारी लिखित में रिपोर्ट करके ऐसे प्रथम श्रेणी के न्यायिक मजिस्ट्रेट की पूर्व आज्ञा प्राप्त करेगी, जिसकी स्थानीय अधिकारिता के भीतर अपराध किया गया है या गिरफ्तारी की जानी है। गिरफ्तारी कैसे की जायेगी, इसकी व्यवस्था सीआरपीसी की धारा 46 में किया गया है।

✯ किसी लोकसेवक को रिश्वत लेने के अपराध में कितने वर्षों की सजा हो सकती है?

भारतीय दंड संहिता की धारा 161 के तहत सरकारी सेवक द्वारा विभागीय कार्यों को करने के एवज में लिए गये रिश्वत के लिए उसे तीन वर्षों तक की सजा या जुर्माना या फिर दोनो हो सकती है, तथा इसी अपराध के लिए भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम 1988 की धारा 7 के तहत दोषी लोकसेवक को छः माह से लेकर पांच वर्षों तक की सजा हो सकती है।

✯ मेरे ऊपर चेक बाउंस का केस न्यायालय में किया गया है और परिवादी द्वारा सम्मन एवं बेलेबल वारंट को कोर्ट में चपवाकर ननबेलेबल वारंट भेज दिया गया है, तो क्या उस केस में न्यायालय में सरेंडर करने पर मुझे जमानत मिल सकती है एवं कृपया चेक बाउंस के मुकदमे के बारे में विस्तृत जानकारी देने की कृपा करें?

आपका केस 138 एनआई एक्ट की धारा में दर्ज किया गया है, जो कि एक जमानतीय अपराध होता है और इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता है कि न्यायालय द्वारा आपके खिलाफ गैर जमानतीय वारंट भेज दिया गया है। आप निडर होकर न्यायालय में आत्म-समर्पण करते हुए अपना बेल ले सकते हैं। चेक बाउंस के मामले में एनआई एक्ट की धारा 138 के तहत दो वर्षों तक का कारावास या चेक बाउंस के रकम का दोगुना या दोनो के सजा का प्रावधान है। चेक बाउंस के मामले में परिवादी को चेक बाउंस होते ही तुरंत विपक्षी को वकालतन नोटिश भेजना चाहिए और उसे पन्द्रह दिनों का समय मुदालय को देना चाहिए ताकि मुदालय परिवादी का पैसा लौटा सके। पैसा निश्चित तिथि के अंदर नहीं लौटाने पर चेक बाउंस के 45 दिनों के अंदर मुकदमा कर देना आवश्यक हो जाता है। किन्तु अगर चेक सिक्युरिटी के रूप में दिया गया हो तो चेक बाउंस का मामला, चेक बाउंस की स्थिति में अपराध नहीं माना जायेगा।

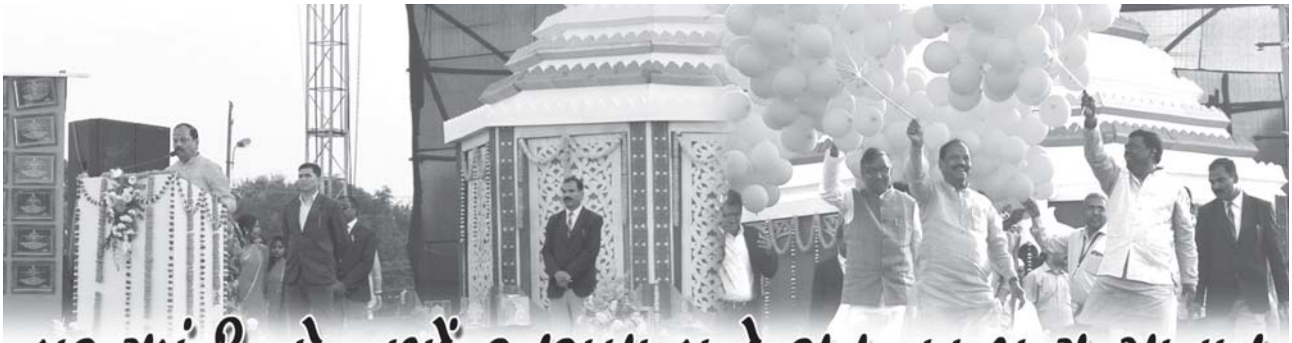

मुख्यमंत्री के हाथों रजरप्पा महोत्सव का भव्य आगाज

● ब्रजेश कुमार मिश्रा/राजेश कुमार मिश्रा

जैसा की हम जानते हैं कि झारखण्ड प्रदेश अपनी सुंदरता को बिखेरने के लिए जाना जाता है साथ ही खनिज संपदाओं के भंडार के साथ–साथ धार्मिक महत्वों का भी यहां समावेश देखने को मिलेगा और इसी धार्मिक धरोहरों में माँ छिन्नमस्तिका अपना एक अलग ही स्थान रखती हैं, जो रामगढ़ जिले के रजरप्पा में स्थित हैं और इन्हें रजरप्पा वाली माता भी कहते हैं तथा इसके मद्देनजर प्रत्येक वर्ष रजरप्पा महोत्सव यहां मनाया जाता है एवं इस वर्ष भी बीते 24 फरवरी को रजरप्पा महोत्सव मनाया गया। जिसमें स्वयं राज्य के मुख्यमंत्री सहित अन्य गणमान्य लोगों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करायी। बताते चले कि मुख्यमंत्री रघुवर दास ने रजरप्पा के सीसीएल स्टेडियम मैदान में दो दिवसीय भव्य रजरप्पा महोत्सव का आगाज करते हुए कहा कि झारखण्ड अगले पांच–सात वर्षों में पुरी दुनियां के लिए प्रमुख आकर्षण का केन्द्र होगा। इसके लिए सरकार ने तैयारियाँ शुरू कर दी हैं। एक ही साथ राज्य में सांस्कृतिक पर्यटन, धार्मिक पर्यटन, पर्यावरण पर्यटन, एडवेंचर टुरिज्म, माईनिंग टुरिज्म और ग्रामीण पर्यटन की योजनाओं पर काम हो रहा है। इसके लिए विभिन्न महत्वपूर्ण पर्यटक स्थलों पर महोत्सव का आयोजन कर इसकी ब्रांडिंग की जा रही है। झारखण्ड के वन प्रांतर, प्राकृतिक सौंदर्य एवं वन्यप्राणी सहज रूप से पर्यटकों को आकर्षित करते हैं अब लोग लंदन और अमेरिका घूमते–घूमते ऊब चुके हैं और पर्यटकों की आकर्षण का केन्द्र बिन्दु झारखण्ड बनने जा रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि झारखण्ड में अमीरी की गोद में अभी भी गरीबी बसती है। झारखण्ड की महिलाएँ स्वयं सक्षम हैं कि वे चाहेंगी तो राज्य में गरीबी और मुफलीसी को नेस्तनाबुद होगा। महिलाएं अब स्वयं लौह का उत्पादन कर उनके उत्पाद बाजारों का सीधे उपलब्ध करा रहीं हैं। सरकार ने निर्देश दिया है कि मुद्रा योजना व सीएसआर की मदद से स्वास्थ्य विभाग में बेड सीट, सैनेटरी नैपकीन एवं अन्य उत्पादों को उपलब्ध करायेंगीं। इसके अलावे रेडी टू ईट फुड का उत्पादन भी राज्य की महिलाएं ही करेंगी। इसके लिए हर एक प्रमण्डल में एक प्लांट सरकार लगाएगी। उत्पादन करने वाली महिलाएं स्वयं रेडी टू ईट फुड का वितरण आंगनबाड़ी केन्द्रों में करेंगी। मधु उत्पादन के लिए ''मीठी क्रांति'' की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि राज्य की 20000 महिलाओं को निःशुल्क मधुमक्खी पालन हेतु बक्से उपलब्ध कराई जा रही है। ऐसे प्रयासों से उनका आर्थिक संबल बढ़ेगा और 2022 तक हमें झारखण्ड से गरीबी को उखाड़ फेंकने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार चाहती है कि गरीबी रेखा से नीचे जीवन बसर करने वाले झारखण्ड के लोग आर्थिक रूप से स्वयं इतने सक्षम हो जायें कि वे अपना बीपीएल कार्ड यह कहते हुए सरेंडर कर दें कि अब उन्हें इसकी जरूरत नहीं है।

गौरतलब हो कि रामगढ़ जिले की कामयाबियों की चर्चा करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रथम ओडीएफ जिला होने पर इस जिले ने झारखण्ड का नाम रौशन किया है। कुपोषण, बालिका स्वास्थ्य एवं आर्थिक स्वावलंबन की दिशा में रामगढ़ जिले की प्रयासों की सराहना करते हुए उन्होंने पूरी टीम को धन्यवाद दिया। दूसरी ओर रामगढ़ जिले में पर्यटन की संभावनाओं की चर्चा के दौरान मुख्यमंत्री ने कहा कि रजरप्पा में पर्यटन सुविधाओं के विकास के प्रथम चरण का डीपीआर भी तैयार हो चुका है। इसी प्रकार पतरातु डैम को आकर्षक पर्यटन स्थल बनाने की दिशा में भी कार्य आंरभ हो चुका है। दुनियां का सबसे ऊँचा बौद्ध स्तूप चतरा जिले के ईटखोरी में बनेगा अन्य पर्यटक स्थलों यथा पारसनाथ, नेतरहाट, बेतला, सारंडा एवं लुगु पहाड़ आदि जगहों पर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की पर्यटन सुविधा उपलब्ध कराने की दिशा में सरकार प्रयत्नशील है। इस मौके पर उन्होंने डाक विभाग के द्वारा माँ छिन्नमस्तिके मंदिर, रजरप्पा पर विशेष डाक टिकट जारी किया साथ ही राज्य के सभी पर्यटन स्थलों से संबंधित विशेष फिलेटैली आवरण का विमोचन किया। उन्होंने सचिव, पर्यटन एवं कला संस्कृति को निदेशित किया कि इस विशेष डाक टिकट व डाक कवर को राज्य की सभी सरकारी कार्यालयों में उपलब्धता सुनिश्चित करें। मौके पर डीएवी, रजरप्पा के दसवीं के छात्र अनिकेत ने मुख्यमंत्री को उनका पोट्रेट भेंट किया। मुख्यमंत्री ने अपने मामा के घर पर रहकर पढ़ाई करने वाले छात्र अनिकेत की हौसला अफजाई की साथ ही पचास हजार रूपये की

सहायता राशि देने का आदेश दिया। इस अवसर पर सम्बोधित करते हुए माननीय मंत्री पेयजल एवं स्वच्छता श्री चन्द्र प्रकाश चौधरी ने कहा कि रामगढ़ ऐसा जिला होगा जिसमें हरेक घर में स्वच्छ पेयजल की सुविधा होगी, इस दिशा में सरकार प्रयास कर रही है। इससे पूर्व स्वागत भाषण के क्रम में रामगढ़ की उपायुक्त श्रीमती राजेश्वरी बी ने जिले में चल रहे विकास कार्यों पर प्रकाश डाला। इस मौके पर राज्य 20 सूत्री कार्यान्वयन समिति के उपाध्यक्ष श्री राकेश प्रसाद, पूर्व सांसद श्री यदुनाथ पाण्डेय, सचिव पर्यटन कला संस्कृति डॉ. मनीष रंजन, पोस्ट मास्टर जनरल, झारखण्ड परिमण्डल–श्रीमती शशि शालिनी कुजूर, डीआईजी हजारीबाग प्रक्षेत्र श्री भीमसेन टुटी, उपायुक्त रामगढ़ श्रीमती राजेश्वरी बी, आरक्षी अधीक्षक रामगढ़ श्रीमती एन विजयालक्ष्मी, जिला पार्षद अध्यक्ष ब्रह्मदेव महतो सहित बड़ी संख्या में जिला प्रशासन के अधिकारी, कर्मी व गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे।●

रामनवमी को लेकर जिला प्रशासन की गतिविधि तेज

● **ब्रजेश कुमार मिश्रा/शशांक पाठक**

बीते 14 मार्च को उपायुक्त–सह–जिला दण्डाधिकारी, राँची में राय महिमापत रे की अध्यक्षता में सरहुल एवं रामनवमी के दौरान शान्ति एवं विधि–व्यवस्था संधारण हेतु समाहरणालय के ब्लॉक–'बी0' के कमरा नम्बर–505 में एक महत्वूपर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में राँची जिले के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के सभी थाना प्रभारी, पुलिस एवं प्रशासन के पदाधिकारियों से बारी–बारी से थानावार और प्रखण्डवार समीक्षा की गई और तैयारियों का जायजा लिया। बताते चले कि इस बैठक को सम्बोधित करते हुए उपायुक्त श्री रे ने कहा कि रामनवमी एक ऐसा त्यौहार है जिसके लिए यदि पुलिस–प्रशासन पहले से थोडी तैयारी कर ले तो सब कुछ शांतिपूर्ण हो जाएगा। उपायुक्त ने निदेश दिया कि एक सप्ताह के अन्दर सभी तैयारियाँ पूरी कर ली जाए। अंचल स्तर पर जिले से अगर किसी भी तरह की सहयोग की आवश्यकता है तो वो तत्काल उपलब्ध करा दी जाएगी। उपायुक्त ने पदाधिकारियों को निदेश दिया कि जो भी संवेदनशील इलाके हैं वहाँ पुलिस पदाधिकारी एवं मजिस्ट्रेट स्वयं जुलूस के साथ रहना सुनिशिचित करें ताकि किसी भी परिस्थिति से निपटने के लिए तत्काल निर्णय लिया जा सके। बैठक मे उपस्थित पुलिस पदाधिकारियों को निर्देशित करते हुए वरीय पुलिस अधीक्षक, राँची श्री कुलदीप द्विवेदी ने

किसी भी हाल में भड़काउ या अश्लील गानों पर रोक लगाने का निदेश दिया, साथ ही जो इलाके संवेदनशील रहे है और पूर्व में जहाँ घटनाएँ होती रही है वहाँ पर ज्यादा सतर्कता बरतने की आवश्यकता है। वही इस बैठक में वरीय पुलिस अधीक्षक ने यह भी निर्देश दिया कि जिन लोगों पर आपराधिक प्रवृति का होने का शक हो, उनपर 107 की कार्रवाई प्रारंभ करें, साथ ही जो लोग शान्ति–व्यवस्था कायम रखने में पुलिस प्रशासन के सहयोगी है उन्हें शान्ति समिति की बैठक में आमंत्रित किया जाए। 18 मार्च तक सभी थानों में शान्ति समिति की बैठक पूरी कर ली जाए साथ ही यह भी निर्देश दिया कि किसी भी हाल में विवादित स्थलों से जुलूस न निकाला जाए और बगैर लाईसेंस वाले दलों को जुलूस निकालने की इजाजत न दी जाए। श्री द्विवेदी ने कहा कि शहर में सी0सी0टी0भी0 कैमरे लगाए जा रहे है, जहाँ पर अतिरिक्त पुलिस बल की आवश्यकता है उन्हें उपलब्ध करा दिया जाएगा । प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, चान्हों द्वारा दिनांक 24 मार्च को रैफ के जवानों के तैनाती की मांग की। बताते चले कि इस बैठक में उप विकास आयुक्त, राँची अनुमण्डल पदाधिकारी, सदर, राँची, अपर जिला दण्डाधिकारी विधि–व्यवस्था, अपर समाहर्त्ता नक्सल, निदेशक, डी0आर0डी0ए0, नगर पुलिस अधीक्षक, पुलिस अधीक्षक, ग्रामीण, जिला जन सम्पर्क पदाधिकारी, राँची उपस्थित थे। ●

इंकलाब जिन्दाबाद इंटक जिन्दाबाद मजदूर एकता जिन्दाबाद

राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस (इंटक)

यदि आप कैजूअल/दैनिक/ठीका मजदूर के रूप में निजी अथवा सरकारी क्षेत्र में कार्यरत्त हैं, इसके अतिरिक्त होटल रेस्तरां, अस्पताल-स्कूल, अन्य संस्थान निर्माण/बीड़ी क्षेत्र, स्थानीय निकाय, लोडिंग-अनलोडिंग, केन्द्र/राज्य सरकार के स्कीम्स एवं अन्य असंगठित क्षेत्र में कार्यरत्त हैं, साथ ही वेंडर्स, घरेलू कामगार, रिक्शा/टेम्पो/टैक्सी चालक हैं तो अपने हक एवं अधिकार के साथ ही मजूदरी के निर्धारण, काम की सुरक्षा, कानून अंतर्गत सुविधायें एवं ईपीएफ/ईएसआई का लाभ प्राप्ति के लिए राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस (इंटक) से संबंद्ध श्रमिक संघों से जुड़ें एवं मजदूर आन्दोलन को ताकत दें।

चन्द्र प्रकाश सिंह

प्रदेश अध्यक्ष (इंटक) बिहार।

Website :-www.prakashintuc.com
Mob.:- 9431016951, 9334110654
E-mail :-chandraprakash.intuc@yahoo.com

पानी टंकी वाटर बोर्ड कॉलोनी, बोरिंग रोड, पटना-800013 (बिहार)

13th Foundation Year 2018

वीरांगना रानी दुर्गावती केवल सच सम्मान - 2018

24 जून, 2018 (रविवार)

स्थान :- बापू सभागार, गाँधी मैदान, पटना (बिहार)

-: आयोजक :-

श्रुति कम्युनिकेशन ट्रस्ट एवं केवल सच पत्रिका परिवार